जुलाई - सितंबर 2024 . वर्ष : 5, अंक : 17 ISSN : 2436-5017

हिंदी की गूँज

जापान से निकलने वाली
प्रथम हिंदी त्रैमासिक पत्रिका

साहित्यिक यात्रा

TOURIST
प्रवासी लेखक

विश्व हिन्दी दिवस
10 जनवरी 2024
अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन एवं संकल्प यात्रा
प्रेरणा स्रोत : डॉ रमेश पोखरियाल 'निशंक'
की पैड़ी हरिद्वार तक

संपादक मण्डल

संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक,
डॉ रमा पूर्णिमा शर्मा , जापान
(वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)
संरक्षक
इंद्रजीत शर्मा, न्यूयार्क(अमेरिका)
डॉ विदुषी शर्मा, (4 वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)
नई दिल्ली,भारत

हिंदी की गूंज की शाखाएँ
संरक्षक इंद्रजीत शर्मा जी
1 – न्यूयार्क
129-15, 101 एवेन्यू रिमंड हिल, न्यूयार्क
+1(917)273-9744

डॉ श्वेता सिंह उमा
(वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)
मॉस्को, रशिया
Address Office:
Proezd Zavoda Serp 1 Molot
10 BC, Integral,Moscow
Russia-111250
Ph:+79254027789

श्री सुरेश पांडेय
(वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)
स्वीडन
Backgarda Vagen 11 tr14341
Varby Sweden
+46 731013196

श्रीमती कल्पना लालजी
मॉरीशस
Lamari Road
Vacoas Mauritius
+230 57133341

सुश्री सुनीता चावला
आस्ट्रिया में
Laaerberg Strabe 32/2/71
1100 vienna (Austria)
Ph: +43 650 6741006

भारत पानीपत में
श्रीमती कंचन सागर
(वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)
1094, सेक्टर 13/17, हुड्डा ,पानीपत
(हरियाणा) भारत
Ph: 93554 72819

संपादक
प्रो० स्वाति पाल (जानकी देवी महाविद्यालय)
विनोद पाण्डेय (गाजियाबाद)

सह संपादक
कविता गुप्ता
(डबल वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)
डॉ विवेक शर्मा (जानकी देवी महाविद्यालय, नई दिल्ली)
डॉ अमित कुमार कौशल, अंबाला
(डबल वर्ल्ड रिकार्ड होल्डर)

वरिष्ठ परामर्श दाता
डॉ हरीश नवल
डॉ स्नेहसुधा नवल

विदेश प्रतिनिधि
श्यामलाल पुरी,लंदन
मोनी विजय,नेपाल
सुनीता चावला,आस्ट्रिया
कल्पना लाल मॉरीशस

भारतीय प्रतिनिधि
विजयापंत तुली,उत्तराखंड
सुनीता श्रीवास्तव, इंदौर
अंशु जैन, देहरादून
गीतेश्वर बाबू , भोपाल

स्वास्थ्य प्रतिनिधि
सुनीता चाँदला,अमेरिका

विशेष सहयोगी
ओमप्रकाश सपरा
राकेश छोकर

सैन्य परिशिष्ट प्रतिनिधि
तृप्ति मिश्रा,महू

ज्योतिषाचार्य
डॉ विनय भारद्वाज, बोध गया विश्वविद्यालय

रक्षा कवच प्रतिनिधि
श्री जय प्रकाश मिश्रा (पुलिस अधीक्षक),
पटना, बिहार

कानूनी सलाहकार
प्रवल माधुरी शर्मा
जयपुर,राजस्थान

मुख्य कार्यालय
टोक्यो, जापान
व्हट्सअप नंबर -
जापान
00818061658299
भारत
9289641577

Twitter @hindikigoonj

इंस्टाग्राम : @hindikeejoonj

@punjabidigoonj

YouTube: hindikigoonj, Tokyo, Japan

YouTube: punjabidigoonj, Tokyo,Japan

फेसबुक पेज :@ हिन्दी की गूंज,टोक्यो,जापान

ईमेल hindikigoonj.jp@gmail.com
hindikeegoonj@gmail.com

पत्रिका की सदस्यता लेने,रचना भेजने हेतु संपर्क करें
9289641577

संपादन, संचालन, प्रकाशन एवं सभी सदस्य पूरी तरह अवैतनिक हैं।

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं । संपादक एवं प्रकाशक का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है। प्रकाशित रचनाओं के मौलिक होने का उत्तर दायित्व लेखक पर होगा । पत्रिका जापान के ISSN नंबर के साथ हर तीन माह बाद प्रकाशित होती है।

अनुक्रम

संपादकीय

अपनी बात –रमा शर्मा/5
अपनी बात –विनोद पाण्डेय/5

प्रभारी संपादकीय

मन की बात'–कंचन सागर/6

कहानी/लघुकथा

कुंआरी–ऋतु शर्मा नंनन पाण्डेय/10–12
उतरता रंग –संजय वर्मा 'दृष्टि'/12
शहीद की पत्नी–सविता गुप्ता/16
लालसा–डॉ उपासना पाण्डेय/16
वो मासूम सपेरण –ममता शर्मा 'अंचल'/17
माँ–इन्दु नांदल/17
मानसिकता–डॉ अनीता कपूर /18
शांति पाने का राज–डॉ सुनीता श्रीवास्तव /18
खाली वालेट–डॉ नीरजा मेहता 'कमलिनी'/23
दहेज– सुखमिला अग्रवाल 'भूमिजा'/23
इंतजार–मोनिका नूर /24
माँ सिर्फ माँ– ज्योत्सना गर्ग /25
जीत का जुनून– अंशु जैन /25
दूधो नहाओ पूतों फलो –सीमा वर्णिका/35_36

धारावाहिक कहानी

डॉ मरीज तुम्हारे हवाले –शकील सिद्दीकी/32_33

धारावाहिक उपन्यास

तलाश अस्तित्व की –अजय शर्मा/38–39

कविता/गीत/गजल

चेहरा पढ़ना है –जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /9
हृदय की पीड़ा –तेजकरण नारोलिया /13
साजिस में कवि –डॉ राजेश श्रीवास्तव/13
बड़ी है न्यारी–नीति अग्निहोत्री /13
पर्यावरण– मंजू दीक्षित/13
मैंने जापान देखा है–विनोद दुबे/14
मन का घर– पं. सुरेश नीरव /14
प्यारी हिंदी–डॉ दिलीप कु0 झा/14
गजल– जयप्रकाश मिश्रा/15
सुनना मना है–डॉ आदित्य रत्न/15
साईं पर मेरा विश्वास –लीना शारदा /15
आतंकी का हश्र –डॉ सुनील शर्मा /18
नारी तुम बन जाओ सबला–डॉ बनवारी लाल जाजोदिया यथार्थ'/22
माता पिता – ओमप्रकाश प्रजापति /22
यादों की बातें–कविता गुप्ता/22
हम कुछ नया करेंगे–डॉ राजीव पाण्डेय/26
नाविक– तृप्ति मिश्रा/26
माँ तेरा आँचल फिर चाहता हूँ –अमित कुमार कौशल/26
मैं गौतम बुद्ध नहीं होता –वर्षा कुमारी/36
मुझे अच्छा लगता है –सरोज आहूजा/37
सरस्वती वंदना–संजय शुक्ल/37

कहमुकरी

क्या सखी साजन–ललिता श्रीवास्तव/47
ए सखी साजन–नीरजा मेहता 'कमलिनी'/47
ए सखी साजन–शेफालिका श्रीवास्तव/47
क्या सखी साजन–संतोष तोसनीवाल/47

राम कथा धारावाहिक

राम का न्याय–शशि महाजन/34–35

सेहत और दिल

दिल से–सुनीता चाँदला/15

संस्मरण/ स्मृति आख्यान

बेकाबू माहौल–कुमार सुबोध/19–20

व्यंग्य

स्वर्ग के शौचालय में हिंदी–प्रेम जनमेजय/21
पत्नी और आतंकवाद–अरविंद पथिक /27–28
एक सच्ची मुच्ची की प्रेम कहानी–सुभाषचंदर/28–31

देखन में छोटे लगे

हाफ लाइनर– डॉ हरीश नवल /37

जयंती विशेष

देव नागरी लिपिय दार्शनिक पक्ष–रामा तक्षक /39–43

आपके पत्र /52

बाल कविता

हमकों पेन दिला दो– अंशुल/22
सरकारी स्कूल– प्रिंस/49

बाल चित्रकार

गौरी (कक्षा 6)/9
ताशवी (कक्षा यूकेजी)/14
लक्षिता (कक्षा 6)/15
सबाना (कक्षा 6)/15
प्रिंस (कक्षा 6)/17
लक्षिता (कक्षा 6)/18
रेणुका (कक्षा 6)/18
धानी गुप्ता (ऑस्ट्रेलिया)/20
गुरबानी कौर बिंद्रा (कक्षा 9)/23
नैतिक/23
इलाक्षी जैन (कक्षा 1)/25
जैसमीन (कक्षा 6)/26
लक्षिता (कक्षा 6)/26
अनन्या देवी (ओडिशा)/31
धनिष्ठा (कक्षा 6)/33
नायशा देवी (ओडिशा)/36
रेणुका (कक्षा 6)/36
जपजी कौर (15 वर्ष)/46
समर्थ मिश्रा (9 वर्ष)/47
गौरव /49
ज्योति कौर (कक्षा 8)/54
गौरी (कक्षा 6)/54
जसविंदर कौर (कक्षा 8)/54
लक्षिता (कक्षा 6)/54
प्रिंस (कक्षा 6)/54
रेणुका (कक्षा 6)/54
अर्चिता श्रीवास्तव (8 वर्ष)/54
दिशिता मेहता (कक्षा 7)/54
अश्विक कुमार (6 वर्ष)/54
खुशी कौशल (15 वर्ष)/54
टिया मिश्रा (कैलिफोर्निया, यूएसए)/54

अपनी बात

रमा पूर्णिमा शर्मा

विनोद पांडेय

हिंदी की गूंज पत्रिका आप सब के साथ और सहयोग से दिनों दिन सब के दिलों में जगह बनाती जा रही है और कामयाबी के पायदान चढ़ती जा रही है । जैसा कि आप सब जानते हैं यह जापान की पहली हिंदी पत्रिका होने के साथ साथ साहित्यिक पत्रिका भी है । इसलिए हम सब का प्रयास यह रहता है कि इसमें साहित्य की सभी विधाओं को लिया जाये। आप सब के पत्रों से सह स्पष्ट भी होता है कि आपको पत्रिका बहुत पसंद आ रही है ।

जैसा कि आप सब जानते हैं, गत तीन वर्षों से पत्रिका का कवर पृष्ठ बच्चों की पेंटिंग का ही चयनित किया जाता है और बच्चों को सम्मान भी दिया जाता है हिंदी की गूंज के वार्षिक समारोह में । ये इसलिए भी आवश्यक लगा ताकि बच्चे हिंदी की ओर आकर्षित हों , साहित्य की ओर आकर्षित हों। क्योंकि आजकल बच्चे फोन या टीवी पर अपनी पसंदीदा गेम खेलना ज्यादा पसंद करते हैं और पढ़ने का अभ्यास छूटता जा रहा है । घर घर की यही कहानी है तो बच्चों में संस्कार कहाँ से जायेंगे । सब से बड़ी बात ऐसे तो आगे की पीढ़ियाँ साहित्य से , हर ज्ञान से वंचित रह जायेंगीं । हम बच्चों को जोर जबरदस्ती कर के फोन नहीं छुड़वा सकते लेकिन चतुराई से उन्हें इस तरफ मोड़ तो सकते हैं । बस यही कारण है कि हिंदी की गूंज बाल कवियों को, बाल चित्रकारों को वरिष्ठ साहित्यकारों से भी ज्यादा महत्व देती है ।

आप सब के इस विषय में क्या विचार हैं जरूर अवगत करवायें। पत्रिका आपको कैसी लग रही है यह भी अपने पत्रों से अवश्य सूचित करवायें ।

❑❑

संस्थापक एवं मुख्य संरक्षक
हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका
टोक्यो जापान
hindikeegoonj@gmail-com
9289641577, +818061658299

इसमें कोई दो राय नहीं कि आज के समय में हम तेजी से प्रौद्योगिकी, विज्ञान और आधुनिकता की ओर बढ़ रहे हैं ,इसमें भी कोई दो राय नहीं कि आधुनिकता ने हमारे जीवन को सुविधाजनक और वैश्विक स्तर पर जुड़ा हुआ बना दिया है । लेकिन इन बातों के साथ साथ हमें यह भी स्वीकार करना होगा कि इस आधुनिकता की होड़ में हमारी परंपरागत संस्कृति और उसके मूल्य कहीं पीछे छूटते जा रहे हैं । हमें विकसित भारत का स्वप्न दिखाने वाली इस प्रवृत्ति ने हमारी सांस्कृतिक जड़ों और परम्पराओं को कमजोर करने का काम भी किया है । इस पर हमें बड़ी जिम्मेदारी से काम करना होगा । हम सचेत हैं परन्तु थोड़े सुस्त हैं । आधुनिकता के साथ–साथ पुरातन संस्कृति और हमारे संस्कार को भी मजबूत होना था पर, अफसोस । साथियों , आधुनिकता और संस्कृति के इस संघर्ष के कारण आज समाज में एक असंतुलन उत्पन्न हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप हमें सांस्कृतिक पतन का सामना करना पड़ रहा है।

इस आधुनिकता की चकाचौंध ने हमारे जीवन के हर पहलू को प्रभावित किया है–हमारे विचार, खान पान, पहनावा,रहन–सहन, भाषा, संबंध और यहां तक कि हमारी पहचान तक को भी । यह एक वैश्विक प्रवृत्ति बन चुकी है, जिसमें पश्चिमी जीवन शैली का प्रभाव सबसे ज्यादा देखा जा सकता है। आधुनिकता के कारण पारिवारिक संरचना में बदलाव देखने को मिल रहा है,संयुक्त परिवारों की जगह अब एकल परिवारों ने ले ली है। पारिवारिक संबंधों में वह घनिष्ठता और आपसी समझ अब कम होती जा रही है, जो पहले एक मजबूत सांस्कृतिक मूल्य हुआ करती थी।

आधुनिकता के साथ सांस्कृतिक पतन एक गंभीर मुद्दा है, लेकिन इसे पूरी तरह से रोका जा सकता है। इसके लिए समाज, सरकार, और व्यक्तियों को मिलकर काम करने की जरूरत है ताकि आधुनिकता और सांस्कृतिक धरोहर के बीच संतुलन स्थापित हो सके। आधुनिक जीवन शैली अप. नाने का मतलब अपनी सांस्कृतिक जड़ों को भूलना नहीं है। अगर हम अपनी संस्कृति का सम्मान और संरक्षण करते हैं, तो हम आधुनिकता और परंपरा के बीच एक सार्थक संवाद स्थापित कर सकते हैं।

❑❑

संपादक
हिंदी की गूंज अंतर्राष्ट्रीय पत्रिका
टोक्यो जापान

प्रभारी संपादकीय

कंचन सागर

मन की बात

हिन्दी की गूँज के सभी पाठकों को मेरा प्रेम भरा नमस्कार।

आप सब के सहयोग से देखिए हमारी पत्रिका कैसे भागने लग गई है।कारण यही है कि जब हम एक मुट्ठी बन जातें हैं तो प्रगति के पथ पर अग्रसर होने लगतें हैं। हमें युवा पीढ़ी,प्रौढ़ और बच्चों का साथ और समय भरपूर मिल रहा है।

हम समय–समय पर समाज की चुनौतियों के साथ हम समाधान भी बतातें हैं जिस से सभी वर्ग प्रेरित होतें हैं।

हमने समाज में साहित्य का स्तर उच्चतर से उच्चतम करना है।क्योंकि जब समाज में साहित्य का स्तर ऊँचा होने लगता है,तब उच्चतर जीवन–मूल्य समाज में बढ़ने लगते हैं और व्यक्ति का चिंतन व्यापक हो जाता है। इस से व्यक्ति के हृदय में व्यापकता और विशालता आती है तो उसका चिंतन भी विशाल और व्यापक हो जाता है।

राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त ने बहुत बड़ी बात कही है जो साहित्य के व्यापक ल क्ष्य को इंगित करती है–

"निज हेतु बरसता नहीं,
व्योम से पानी।
हम हों समष्टि के लिए,
व्यष्टि बलिदानी।"

साहित्य समाज का ही दर्पण है। हमें अपनी हिन्दी की गूँज को जन जन तक पहुँचाना है तभी तो हमारे सन्देश उन तक पहुँच पाएंगे।

मैं चाहतीं हूँ कि हम हिन्दी की गूँज की प्रत्येक प्रति अपने शहर,गॉव के विभिन्न विद्यालयों की लायब्रेरी में रखें ताकि अधिक से अधिक विद्यार्थी लाभान्वित हो सकें।

❑❑

कंचन सागर
प्रभारी पानीपत
हिंदी की गूंज अंतरराष्ट्रीय पत्रिका
टोक्यो जापान
93554 72819

आलेख/शोध लेख/निबंध

मीनाक्षी जोशी

समय के रेगिस्तान पर राग नदी

कुछ समय पहले हिन्दी साहित्य जगत में डॉ दामोदर खड़से जी के उपन्यास 'बादल राग' की लोकप्रियता से शायद ही कोई पाठक अनभिज्ञ हो किन्तु मैंने पाया कि इससे बहुत पहले वे 'अतीत नहीं होती नदी' के रूप में नदी–राग भी पेश कर चुके हैं । इस नदी की एक धारा उनका कविता संग्रह 'नदी कभी नहीं सूखती' भी है। बहती नदी के अनेकानेक अप्रतिम रूप कवि की ज्ञान साधना,चिंतक का चिंतन, अलौकिक कल्पना , प्रकृति प्रेम, भाषा और अभिव्यक्ति की निपुणता का आईना है काव्य–संग्रह– अतीत नहीं होती नदी। यूं तो कविता का भी अपना युग विशेष होता है फिर भी अतीत जब वर्तमान को व्यापक कैनवास पर चित्रित करने में सफल सिद्ध हो जाता है तो वह कालजयी हो जाता है। खड़से जी का यह काव्य संग्रह समयांकन की दृष्टि से केवल संवेदना का समकाल नहीं अपितु संवेदना की विरासत के रेतीले होते जाने की पीड़ा का वर्तमान भी है।कविवर हरिनारायण व्यास जी के शब्द उनकी इसी महत्ता को रेखांकित करते हैं–

"डॉ दामोदर खड़से की शब्दों के प्रति अटूट श्रद्धा है और शब्द समय व समाज की स्थिति को व्यक्त करता है। सामाजिक स्थिति कविता की प्रेरणा होती है... उसे तकनीकी प्रयोग की ओर देखना नहीं पड़ता। समाज का वर्तमान ही कविता की प्रयोगशीलता खोज लेता है"।

अतीत से वर्तमान को जोड़ती इस नदी में एक गुनगुनाहट है छोटे छोटे छंदों की , फुसफुसाहट है शब्दों के दस्तक की जो हमें भीतर की आहट से परिचित कराती है , जो खींचती है उम्मीदों भरी रोशनी की रेखाएँ , जो अपनी यात्रा के दौरान पहुँचाती है फूलों की महक एक हाथ से दूसरे हाथों तक और पसर जाती है कविता की गंध जड़ों तक। समय कब ठहरा है कभी । गुजरते जाते है साल–दर–साल। कभी कवि निराश और व्यथित भी होते हैं अपने समय के रौंदे हुए इंद्रधनुष को देखकर जो आहत सपनों की व्यथा है– "बीतते साल की / अंतिम शाम में / सागर के जगत पर / बैठकर मैं सोचता रहा / एक इंद्रधनुष /पता नहीं कब / मेरी अंजुरी में कहीं से / आ गया /एक इंद्रधनुष रौंदा हुआ"। किन्तु निराशा कवि का स्वभाव नहीं है । उन्हें पूरा विश्वास है कि इंद्रधनुष कभी नहीं टूटता , उसे कोई रौंद नहीं सकता। क्योंकि अंजुरी में जो बटोरा नहीं जाता, वह आँखों की कोर में बस जाता है उम्र भर के लिए। ऐसे इंद्रधनुष को कोई खरीद नहीं सकता,न ही बिक सकता है वह किसी कीमत पर। वस्तुतः संकलित कविताओं में यथार्थ के साथ कवि के स्वयं अपने जीवन की अनुभूतियों का घनत्व बहुत गहरा है। समकालीन भारतीय साहित्य पत्रिका में प्रकाशित डॉ खड़से जी का आत्म–कथ्य यह प्रमाणित करता है कि बचपन से ही नदी किस तरह उनके जीवन से जुड़ी रही, विचारों और कल्पनाओं को जन्म देती रही जो धीरे–धीरे समस्त मनोभावों को समेटती रही । समय की कठोर चट्टानों से टकरा कर वह टूटी नहीं , बिखरी नहीं बल्कि प्रेम, वात्सल्य, करुणा,मानवता और सहिष्णुता की कई–कई धाराओं के साथ तीव्रगति से आगे बढ़ती रही, बहती रही अबाध, ठीक किसी भारतीय नारी की तरह । इस काव्य संग्रह का सबसे मनोरम और विशिष्ट आकर्षण मुझे नदी को एक स्त्री रूप में निरूपित करना लगा। कवि जानते हैं–

"नदी भीतर से बेचैन / पर कभी छलकने नहीं देती आँसू / बहती है शाश्वत / उसका उफान भीतर बढ़ जाता है / पर वह सतह से कभी कुछ नहीं उठने देती / इंतजार करती है अपने वक्त का /और मिला लेती है बिछड़ी उपधारा"। जिस तरह एक स्त्री सबकी खुशी के लिए चुपचाप अपने दर्द पी जाती है नदी भी अपनी कोख में कभी बर्फ जमने नहीं देती । रेगिस्तान से जब वह गुजरती है भीतर पिघलती हिम की ठंडक बांटती है अविरत। 'स्त्री'नामक लंबी कविता का एक बेहद सुंदर उदाहरण यहाँ अवश्य देना चाहूंगी – "सबको अपनी–सी लगने वाली कृष्णा / हाथ तो बढ़ाती है आत्मीय / अपनी लहरों पर मुग्ध भी हो जाती है /पर बाहें सौंपती नहीं कभी / किसी बहाव को / हाँ, कभी–कभी वह राधा हो जाती है / अंतर में बसाकर गोकुल / आँखें उसकी द्वारका हो जाती है" ।

❑❑

हिंदी राष्ट्रभाषा– विश्व भाषा

डॉ प्रभु चौधरी
उज्जैन

वैसे भाषा प्रत्येक देश की माँ होती है। स्वदेश प्रेम के साथ अपनी मातृभूमि के प्रति भी पूर्ण सम्मान व समर्पण एक अनिवार्य सत्य ही नहीं व शर्त भी होनी चाहिये। भारत सरकार द्वारा स्वीकृत पन्द्रह भाषाओं के बाद भी हमारे देश में लगभग सौ भाषाओं के साथ सात सौ बोलियां भी है। भाषा, जलवायु रीति–रिवाज, रहन–सहन आदि की विभिन्नता होते हुए भी भारत में हिन्दी भाषा समस्त देश की सम्पर्क भाषा के रूप में स्थापित है। यह सत्य, हमारी संकीर्ण राजनीति व अति क्षेत्रीय भावना से उद्‌भूत वातावरण द्वारा विस्मृत व झुठलाया जा सकता है, पर यथार्थ के धरातल में देखा जाय तो पूरे भारत में अपनी हिन्दी भाषा से ही हम आपसी वार्तालाप कर अपना उद्देश्य पूर्ण कर सकते हैं।

क्स्तुतः हिन्दी भाषा को संस्कृत भाषा की बेटी कहा जाता है क्योंकि अनेक महाऋषियों ने अपने ग्रन्थों की रचना की है जो संस्कृत भाषा में ही थे। क्योंकि पहले हिन्दी भाषा का जन्म नहीं हुआ था। जैसे जैसे हमारे समाज का विकास होता गया ठीक उसी प्रकार से हर क्षेत्र में विद्वानों ने शोध किया। और संस्कृत भाषा को सरल बनाकर हिन्दी के रूप में परिवर्तित किया है।

आज हमारी हिन्दी भाषा अनेक शहरों अनेक राज्यों में विकसित हो चुकी है। भारत देश में ही नहीं बल्कि विदेशों में भी हिन्दी भाषा का विकास हो चुका है। विदेशों में भी बड़े गर्व के साथ लोग हिन्दी भाषा में बात करने लगे है तथा हिन्दी भाषा में काव्य सृजन भी होने लगा है। अन्य देश के लोग बड़ी सहजता से हिन्दी भाषा को अपना रहे हैं। और हिन्दी भाषा में साहित्य विदेशों को जाने लगा है। विदेश के लोग हिन्दी भाषा की पत्रिकाओं तथा लेख पसन्द करते है। हिन्दी भाषा के प्रयोग से कोई भी व्यक्ति अछूता नहीं है।

कतिपय कारणों से कुछ अन्तराल पहले हमारी सरकारों ने भी कुछ बदलाव कर दिया है जिससे हम सभी को कठिनाइयों का सामना पड़ा जैसे आई. ए.एस.पी.सी एस. की परीक्षाओं को अंग्रेजी माध्यम से कर दिया है इससे बहुत सारी अव्यवस्था हो गई। जैसे कि कोई व्यक्ति विद्वान है जिसे अंग्रेजी कम आती हो तो व व्यक्ति परीक्षा में बैठने से वंचित रह जाता है और उसकी विद्वता का हास हुआ। तथा वो हतोत्साहित हो जाता है। जिसके कारण उसके दिमाग में डर जन्म ले लेता है। और वह दिन प्रतिदिन अप. ने आप को कमजोर समझने लगता है। दक्षिण में जहां मात्र राजनैतिक व विशिष्ट जातीय भावना का अंत है वहां हिन्दी के जानकार की भी उपेक्षा की जाती है।

भूमण्डलीकरण एवं सूचना क्रान्ति के दौर में जहाँ एक ओर 'सभ्यताओं का संघर्ष बढ़ा है वहीं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की नीतियों ने भी विकासशील व अविकासित राष्ट्रों की संस्कृतियों पर प्रहार करने की कोशिश की है। सूचना क्रान्ति व उदारीकरण द्वारा सारे विश्व के सिमटकर एक वैश्विक गाँव में तब्दील होने की अवधारणा में अपनी संस्कृति, भाषा, मान्यताओं, विविधताओं व संस्कारों को बचाकर रखना सबसे बड़ी जरूरत है। एक तरफ बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ जहाँ हमारी प्राचीन सम्पदाओं का पेटेंट कराने में जुटी है वहीं इनके ब्राण्ड विज्ञापनो ने बच्चो युवाओं की मनोस्थिति पर भी काफी प्रभाव डाला है, निश्चित ही इन सबसे बचने हेतु हमें अपनी भाषा की तरफ उन्मुख होना होगा। यदि भारतीय फिल्में विदेशों में अच्छा व्यवसाय कर रही है तो विदेशों में बसे भारतीयों का इसमें प्रमुख योगदान है। यह वर्ग ऐसा है जो रोजगार की खोज में विदेशों में भले ही जा बसा, पर उनका मातृभूमि से लगाव जस का तस है। उनकी रोजी–रोटी की भाषा भले ही दूसरी हो, पर उनका मन हिन्दी में ही रमता है। इस तथ्य को नकार नहीं सकते है कि हाल में प्रकाशित ऑक्सफोर्ड अंग्रेजी शब्दकोष में हिन्दी के तमाम प्रचलित शब्दों, मसलन–आलू, अच्छा, अरे, देसी, फिल्मी, गोरा, चड्डी, यार, जंगली, धरना, गुण्डा, बदमाश, बिंदास, लहंगा, मसाला, आदि को स्थान दिया गया है।

इंटरनेट के इस दौर में महत्वपूर्ण हिन्दी किताबें कई प्रकाशनों के साथ–साथ तमाम हिन्दी पत्र–पत्रिकाएँ भी अपना ई–संस्करण, व्यापार, साहित्य, ज्योतिष, सूचना प्रौद्योगिकी एवं तमाम जानकारियां सुलभ करा रहा है। इंटरनेट पर उपलब्ध प्रमुख हिन्दी पत्रिकाएँ है हिन्दी का पहला पोर्टल वेबदुनिया, अनुभूति, अभिव्यक्ति, सृजनगाथा, हिन्दयुग्म, रचाकार, साहित्य शिप्पी, लघुकथा डॉटकाम, स्वर्गविभा, हिन्दी नेट, हिन्दी चेतना, हिन्दीलोक, कथाचक, काव्यांजलि, कवि मंच, कृत्या, कलायन, आर्यावर्त, नारायण कुंज, हंस, आरापर्व, अन्यथा आखर (अमर उजाला), उदन्ती, उद्‌गम, कथाकार, कादम्बिनी, कलादेश, गर्भजाल, जागरण तथा तद्‌भव, तहलका, ताप्तिलोक, दो आबा, नया ज्ञानोदय, नया पथ, परिकथा, पारखी, दि संडे संवेद, प्रतिलिपि, प्रेरणा, बहुवचन, भारत दर्शन, भारतीय पक्ष, मधुमती, रचना समय, लमही, लेखनी, लोकरंग, वागर्थ, शोध दिशा, संवेद, संस्कृति, समकालीन, जनमत, समकालीन साहित्य समयांतर, प्रवक्ता, अरमला, तरकश, अनुरोध, एक कदम आगे, पुरवाई, प्रवासी, टुडे, अन्यथा, भारत दर्शन, भारतीय पक्ष, मधुमती, रचना समय, लमही, लेखनी, लोकरंग, वागर्थ, शोध दिशा, संवेद, संस्कृति, समकालीन, जनमत, समकालीन साहित्य समयान्तर, प्रवक्ता अरमला,

तरकश, अनुरोध, एक कदम आगे, पुरवाई, प्रवासी, टुडे, अन्यथा, भारत दर्शन, सरस्वती पत्र, पांडुलिपि, हिन्दी भाषी, हिन्दी संसार, हिन्दी समय, हिमाचल मित्र इत्यादि । इसी कड़ी में 'कवित कोश' और 'गद्य कोश' ने भी हिन्दी साहित्य के लिये दिया है। यह अनायास ही न ही है कि 51 करोड़ लोगों तक पहुंच के साथ अंग्र.जी सारी दुनिया की सबसे बड़ी सम्पर्क भाषा है तो 49 करोड़ के साथ हिन्दी दूसरी सम्पर्क भाषा है।

सही अर्थो में प्रकाश की खिलाड़ी हिन्दी ही है। हिन्दी का दृश्य एवं श्रव्य पक्ष अधिक मजबूत है। 21वीं सदी की हिन्दी केवल साहित्यिक भाषा नहीं है, वह प्रविधि प्रौद्योगिकी, व्यवसाय तथा बाजार की भाषा है। आज वित्त निगम, बीमा कम्पनियाँ, उद्योग कम्पनियाँ, उपरो.क्ताओं के लिये नये–नये पैकेजेस को आकर्षित करने हेतु हिन्दी काउपयोग हो रहा है। हिन्दी कम्प्यूटर, ई–मेल, इंटरनेट, ई–कॉमर्स के लिए कोडिंग, टंकण, आशुलेखन और अनुवाद की बनी है। आज हिन्दी समूचे जगत् की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है।

हिन्दी का दबदबा तेजी से बढ़ रहा है। हिन्दी केवल राष्ट्रभाषा के योग्य नहीं बल्कि विश्वभाषा के योग्य है। हिन्दी ही सारे विश्व को 'वसुधैव कुटुम्बकम' बना सकती है। देश–विदेश के कलमकारों ने हिन्दी श्रीवृद्धि की है। देश–विदेश में विश्व हिन्दी सम्मेलनों का आयोजन करने के कारण हिन्दी साहित्य के पैर मजबूत बने है। सवा करोड़ से अधिक भारतीय मूल के नागरिक विश्व के एक सौ चालीस देशों में बसे हैं उसमें पचहत्तर प्रतिशत लोग हिन्दी भाषा का प्रयोग सहजता से करते है। विदेशों में एक सौ अस्सी देशों के विश्वविद्यालयों में हिन्दी शिक्षा की सुव्यवस्था है। स्पष्ट है कि हिन्दी ने ज्ञानभाषा के रूप में अपनी क्षमता तथा शक्ति साबित की है। हिन्दी अपनी क्षमता तथा शक्ति के कारण विश्व क्षितिज पर जगमगा रही है। आज हिन्दी विश्वभाषा बनने की ओर अग्रसर है।

हजारों की संख्या में देश–विदेश में पत्र–पत्रिकाओं का छपना, अनुवाद होना और विभिन्न विषयों पर गोष्ठियों का आयोजन होना इस बात का संकेत देता है कि हिन्दी तेज रफ्तार से आगे बढ़ रही है। यदि भारत से निकटता बनानी हो तो हमें हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन को महत्व देना चाहिये, ऐसा विश्व के सभी राष्ट्रों ने सोचा। दूसरे भारतवंशी लोग रोजगार हेतु पश्चिम के राष्ट्रों में गए है और पूरब के राष्ट्रों में भाईचारा, स्नेह, संस्कृति को लेकर अपना स्थान बनाया। इस कारण से भी हिन्दी का अपना वैश्विक दायरा निर्माण हुआ।

मॉरिशस, फिजी, बर्मा, दक्षिण अफ्रीका, त्रिनिडाड, जापान, फ्रांस, सोवियत रूस, अमेरिका, ब्रिटेन, चेकोस्लोवाकिया, पश्चिम जर्मनी और पूर्व जर्मनी, नेपाल, गुयाना, कम्बोडिया और सूरीनाम जैसे देशों में पाठश.ालाओं में हिन्दी पढ़ाने की व्यवस्था है। इसके अतिरिक्त फिलीपाईन, वियतनाम, डेनमार्क, चीन, इजरायल, हांगकांग, सूडान, आस्ट्रेलिया, वेस्टइंडीज, आदि राष्ट्रो में भी पठन–पाठन की व्यवस्था है। इस प्रकार इंडोनेशिया, थाईलैण्ड, फारस, अफगानिस्तान आदि विभिन्न देशों में संगठनों द्वारा हिन्दी शिक्षण के कई केन्द्र चलाये जाते है। पडोसी राष्ट्र पाकिस्तान में हिन्दी की पढ़ाई होती है। लंदन और केम्ब्रिज विश्वविद्यालयों में हिन्दी के अध्ययन–अध्यापन और अनुसंधान की गतिविधियां तेज हैं।

हिन्दी एक दूसरे को जोड़ने वाली भाषा है आज उसकी रफ्तार तेज है। हिन्दी का अपना अलग तथा विशेष महत्व है। आज समूचे जगत में हिन्दी का है। फैलना उसकी जागतिक प्रतिष्ठा का प्रत्यक्ष प्रमाण है।

❑❑

• उज्जैन, मध्य प्रदेश

डॉ. आरती 'लोकेश'
दुबई, यू.ए.ई.

नागरी लिपि की महत्ता

विचार–विनिमय के लिए जिस प्रकार भाषा की आवश्यकता है, उसी प्रकार उन विचारों में बसे ज्ञान को सहेजकर रखने और आने वाली पीढ़ी को हस्तांतरित करने के लिए लिपि की आवश्यकता होती है। पाषाण युग से ही इसकी महत्ता स्थापित होती है। उस समय पत्थरों पर उकेरी गई लकीरें और चित्र हमें उसकाल की जानकारी देते हैं और जीवन व सामाजिक व्यवस्था को समझने में मदद करते हैं। अपने पौराणिक ग्रंथों का बखान और उन पर गर्व हम लिपि के कारण ही कर पाते हैं।

मौखिक भाषा में मुख से निकलने वाली विशेष ध्वनियों को अंकित करने वाले समस्त चिह्नों के समूह को ही लिपि कहते हैं। लिपि मात्र अक्षरमाला नहीं है। अक्षरों के अतिरिक्त संख्या और विरामबोधक अथवा भावद्योतक चिह्न भी लिपि का अभिन्न अंग होते हैं। लिपि के मुख्य भाग अक्षरमाला के मौखिक स्वरूप को हम वर्णमाला कहते हैं। जिस प्रकार पदार्थ की सबसे छोटी स्वतंत्र इकाई अणु है, भाषा की वर्ण है, तथा लिपि की सबसे छोटी इकाई अक्षर है। सबसे छोटी इकाई होने के पश्चात भी अणु कुछ परमाणुओं से मिलकर बना है तो अक्षर कुछ संरचनाओं से मिलकर बना होता है, जिसमें मुख्य बनावट, खड़ी पाई या ि क्षतिज से जुड़ी योजक रेखा और क्षैतिज रेखा या शिरोरेखा शामिल हैं।

सम्राट अशोक के शिलालेखों पर मिली नागरी लिपि को गुप्त लिपि या धम्मलिपि के नाम से जाना जाता था। कुछ विद्वानों का मानना है कि नगर प्रदेश की लिखित अभिव्यक्ति का माध्यम होने के कारण इसे नागरी लिपि कहा गया, वहीं कुछ अन्य विद्वानों का मत है कि गुजरात के नागर प्रदेश में

नागरी लिपि कहलाई है। अधिकांशतः नागरी और देवनागरी को एक ही समझ लिया जाता है। इनमें भ्रमणकारी भगिनी का–सा संबंध है जो घूमते–घूमते युवा हुई तो उत्तर में देवनागरी और पश्चिम में नंदिनागरी बन गई।

ईसा पूर्व आदिकाल से ही भारत के वैदिक ग्रंथों में प्रयुक्त लिपि को ब्राह्मी लिपि कहा जाता था औरइसके निर्माण का श्रेय परमेश्वर ब्रह्मा को दिया जाना हमारी संस्कृति को दर्शाता है। ब्राह्मी लिपि जहाँ चित्रात्मकता लिए हुए है, इससे निक. ली नागरी लिपि ध्वन्यात्मक वैज्ञा. निकता लिए हुए है। ब्राह्मी लिपि में संख्याओं के लिए एक विशेष आकृति वाले चिह्न थे। आर्यभट्ट द्वारा शून्य का आविष्कार किया गया तो नागरी लिपि ने इसका चिह्न '0*निर्धारित कर गणित और अंकगणित के क्षेत्र में क्रांति ला दी। भारत की सभी लिपियों में अन्य संख्याओं के चिह्नों में भले ही अंतर हो, किंतु शून्य '0* इसी प्रकार लिखा जाता है।

'डमरू' और 'ढक्कन' के आरंभिक 'ड' और 'ढ' व्यंजनों के प्रकारांतर अर्थात परिवर्तित रूप को प्रदर्शित करते अक्षर ड़ तथा ढ़ देवनागरी ने विकसित किए हैं। उदाहरण के लिए– गाड़ी पर मत व्यर्थ करो अपनी गाढ़ी कमाई। आगत ध्वनियों को भी देवनागरी ने उदारता से अपनाया है। अंग्रेजी के कॉलेज, कॉपी आदि के सही उच्चारण के लिए 'ऑ' स्वर लिखने की सहूलियत दी। उर्दू के 'क, ख, ग, ज, फ' आदि वर्णों को स्थान देकर अपनी सहोदर भाषा का मान र खा।

अवग्रह अकार का चिह्न 'ऽ' जो ऐसा दिखता है जैसे 2 को उलटा लटका दिया गया हो, देवनागरी की देन है। यह अंग्रेजी के अक्षर जैसा प्रतीत होता है। इसे स्वर संधि करते समय 'अ' के स्थान पर प्रयोग किया जाता था, जैसे– प्रथमोऽध्यायः अर्थात् प्रथमः अध्यायः । यहाँ यह प्लुत स्वर का चिह्न बनकर प्रस्तुत हुआ है। इस प्रकार के सूक्ष्म अंतरों को भी नागरी लिपि सरलता व सफलता से व्यक्त करती है। कालांतर में इस चिह्न का उपयोग पुकारने के भाव में स्वर को खींचने के लिए किया जाने लगा, जैसे– माँऽऽऽ । संगीत की सरगम व अलंकारों के आरोह–अवरोह में सुर की निरंतरता को भी इसी अवग्रह चिह्न से प्रदर्शित किया जाता है। बहुधा 'ओ(ऽ)म्' लिखते समय, उच्चारण में ओ के बाद इसकी दीर्घकालिकता को दर्शाने के लिए अवग्रह का उपयोग दिखाई देता है।

भारत में उत्पन्न और पली–बढ़ी होने के कारण नागरी लिपि भारतीय संस्कृति की परिचायक है। नदियों को माँ के समान उदारहृदया मान, माता का दर्जा दिया गया है तो सभी नदियों के नाम स्त्रीलिंग हैं। समुद्रों को पुरुष के वर्चस्व के समान सर्वत्र व्याप्तजानकर पिता का सा मान मिला है तो उनके नाम पुल्लिंग हैं। पेड़ सभी पुरुष हैं तो बेलें व झाड़ियाँ स्त्रियाँ हैं। 'इ' व 'ई' की मात्राएँ सिर पर पल्लू लिए अक्षरों को स्त्री जाति में रख देती हैं तो 'उ' और 'ऊ' की मात्राएँ निरुद्देश्य भटकते पुरुषों की सी आकृति बनाती हैं।

देवनागरी लिपि, जिसमें 14 स्वर और 33 मूल व्यञ्जन सहित 47 प्राथ. मिक वर्ण हैं, दुनिया में चौथी सबसे व्यापक रूप से अपनाई जाने वाली ले खन प्रणाली है, जिसका उपयोग 120 से अधिक भाषाओं के लिए किया जा रहा है। इसमें संयुक्त अक्षरों का भी विशाल प्रावधान है जो इसकी जुड़ने की क्षमता को प्रदर्शित करती है। भारतीय भाषाओं के किसी भी शब्द या ध्वनि को देवनागरी लिपि में ज्यों का त्यों लिखा जा सकता है और फिर लिखे पाठ को 'ज्यों–का'त्यों' उच्चारण किया जा सकता है, जो कि रोमन लिपि और अन्य कई लिपियों में सम्भव नहीं है। रोमन की भाँति नागरी में न किसी अक्षर की ध्वनि 'मूक' रहती है और न ही किसी अदृश्य अक्षर को अतिरिक्त ध्वनि देने की आवश्यकता ही है।

अंत में कहूँगी कि नागरी लिपि में भारत में जन्मी, प्राचीन से प्राचीन और नवीन से नवीन, किसी भी भाषा को दर्शाने की क्षमता है। लगभग छठी शताब्दी से अब तक चली आ रही नागरी लिपि अपने अस्तित्व का डंका विश्व भर में बजा रही है।

❑❑

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

गाजियाबाद,(उ0 प्र)

चेहरा पढ़ना है

मैंने देखा है
वादियों में भी डूबते मन को
पढ़ी है उसकी तमन्ना
माथे पर उभर आई
सिलवटों के बीच
सिल–सिलेवार .

खनखनाती चूड़ियों को
सहसा बिखरते भी देखा है मैंने
जिनके बिखरते ही
ढह जाता है स्वप्नों का महल
रुक जाती हैं स्वांसे
चहरे की आभा के साथ .

ऐसा लगता है
चेहरा ही सचमुच
मन के अंतरद्वंदों का
अभीष्ट, अक्षुण्य , अमिट
शिलालेख है
मार्ग दर्शक है .

परिभाषाओं के बीच से
उभरी कविता और
उसके रस माधुर्य के बीच
हमें पढ़ना है
वह हर एक चेहरा
जो बदसूरत होता जा रहा है .

❑❑

गौरी /उम्र 11 वर्ष/कक्षा 6

ऋतु शर्मा नंनन पांडेय,
नीदरलैंड

कुँआरी

"अरे भई कहाँ मर गये सारे के सारे, वैसे देखो तो पूरे घर में मेला लगा रहता है और अब जब काम है, तो न जाने किस बिल में घुस कर बैठ गये सारे "।

क्या हुआ अम्मा क्या बात हो गई? काहे को सुबह इतनी जोर जोर से सब पर गुस्सा हो रही हो?" नवीन ने अपनी माँ को दोनों हाथों से झप्पी देते हुए पूछा।

"क्या बात हो गई ?तुम पूछ रहे हो ? क्या बात हो गई? अरे लगता है तुम भूल गए हो कि आज रविवार है। तुम्हारी बेटीबबली को देखने लड़के वाले आने वाले हैं। उनके स्वागत ,खाने–पीने की कुछ तैयारी करनी है या नहीं? यूँ ही चाय पिला कर भेज दोगे?" अम्मा ने अपने कंधों पर से नवीन का हाथ झटकते हुए कहा।

" देखो अम्मा तुम इस बात की चिंता मत करो । माया ने सारी तैयारी कल ही कर ली थी । चाय के साथ– साथ उसने तो उनके शाम के खाने की भी तैयारी कर ली है ।" नवीन ने पानी का गिलास अम्मा के हाथों में थमाते हुए कहा।

" हाँ तो ठीक है। मुझे भी कुछ बताती तो समझें आता । मुझे कोई सपने तो आ नहीं रहे , कि किसने कितनी तैयारी करी है। अम्मा ने पानी का घूँट भरते हुए कहा।

" देखो बेटा बसंती चाची बता रही थी कि लड़के वाले बहुत अमीर है। अमेरिका में अपना घर का मकान और गाड़ी सब है उनके पास ।हमारे पास देने लेने को तो ज्यादा है नहीं वैसे तो मैंने बंसती को सब बता ही दिया था और वह सब जानती भी है कि तेरा काम धन्धा करोना के बाद से ही मन्दी है । पूरे दो साल घर में बैठ कर ही खाया है । वैसे तो हमारी बबली में कोई कमी नहीं है। पढ़ी लिखी है, घर बाहर के सारे काम करती है। तेरे काम में भी तेरा हिसाब किताब सँभालती है। सकूटी और मोटर दोनों चला लेती है। खाना भी अच्छा बनाती है ।बस एक ही कमी है कि हमारे पास लड़के वालों को देने के लिए दहेज के नाम पर ज्यादा कुछ नहीं है।

नवीन अपने तीनों भाई–बहन में सबसे बड़ा था। जब वह इक्कीस वर्ष का था तब से वह अपने पिताजी के साथ उनकी हार्डवेयर की दुकान पर बैठ उनका काम में हाथ बटाया करता था। 24 वर्ष के होतों होते पिताजी की अचानक हार्ट अटैक से मृत्यु हो गई । नवीन पर कम उम्र में घर की सारी जिम्मेदारी आ गई थी । दोनों छोटे बहन और भाई की शादी करने के बाद ही उसने अपनी शादी की थी । उसकी पत्नी माया एक मध्यम वर्गीय परिवार से थी। एक अच्छी पत्नी और सुघड़ गृहिणी के सभी गुण उसमें थे । पर अम्मा जी को पोते के बदले तीन–तीन पोतियाँ देने के कारण अम्मा जी की अच्छी बहू की लिस्ट में उसका नाम नहीं छोटी बहू का नाम जो बैंगलोर में रहती थी । उसका ही सबसे ऊपर था क्योंकि उसने पहली बार में ही उनको पोते का मुँह जो दिखा दिया था । पोतियों के पैदा होते ही अम्मा जी ने माया के परिवार को कहना शुरू कर दिया था भई भात की तैयारी करना शुरू कर दो , तीन तीन भात भरने हैं तुम्हें समाज में हमारी नाक न कटाना। माया के घर वाले हर तीज त्यौहार जितना उनसे बन पड़ता था उससे अधिक लेना देना करके अम्मा जी को खुश करने की कोशिश में लगे रहते थे।

माया ने अपनी तीनों बेटियों को बहुत अच्छे संस्कार दे कर पाला था। तीनों बेटियाँ सुन्दरता में भी एक से बढ़कर एक थीं । आज बड़ी बेटी बबली को देखने लड़के वाले आ रहे हैं । माया ने उनके स्वागत की पूरी तैयारी की है वो नहीं चाहती की पहले दो रिश्तों की तरह यह लोग भी बबली को कम दहेज देने के लिए छोड़ जाएँ । उसने अलमारी में से अपनी सबसे सुंदर साड़ी निकाल कर बबली को पहनाने के लिए निकाली थी। घर भी बहुत सुंदर ढंग से सजाया था। सबसे मंहगा वाला डिनर सेट निकाला था मेहमानों को खाना खिलाने के लिए । अम्मा जी घ ार में घुम घुम कर एक एक चीज को देख रहीं थीं । "कोई कमी नहीं रहनी चाहिये पहले ही बता दिया है मैंने "अम्मा जी कमरे का मुआयना करती हुई माया को सुनाते हुए बोल रहीं थी।

बबली का दिल जोर जोर से धड़क रहा था ,न जाने इस बार क्या होगा ? क्या पहले वाले दो रिश्तों की तरह यह लोग भी दहेज न मिलने के कारण रिश्ता जुड़ने से पहले ही तोड़ जाएँगे?बबली अभी इन सब बातों के बारे में सोच ही रही थी कि माया बबली को पहनाने के लिए निकाली साड़ी लेकर बबली के कमरे में जा पहुँचीं " आओ बबली मैं तुम्हें तैयार कर दूँ ,लड़के वाले किसी भी समय आते ही होंगे । माँ इतनी तैयारी किस लिए ? लड़के वाले मुझे देखने आ रहे हैं , मेरे कपड़ों को नहीं ,मैं जैसी हूँ बैसे ही वो लोग मुझे अपनाएँगे तो मुझे ज्यादा अच्छा लगेगा। वैसे भी मुझे ऐसा लड़का चाहिए जो अपने पैरों पर खड़ा हो अपने माता–पिता के पैसों पर ऐश करने वाला नहीं ।" बबली ने माया से कहा।

" अरे ऐसे नहीं कहते बेटा । यह लड़का अमेरिका में रहता है। हो सकता है यह दूसरों से अलग हो? अम्मा जी की सहेली बंसती चाची ने यह रिश्ता बताया है ।अम्मा जी बता रहीं थीं की लड़के का अमेरिका में अच्छा कारोबार है। अपना घर का मकान है , पढ़ा लिखा भी है ,देखनें में भी बहुत सुंदर है।और सबसे बड़ी बात की इन लोगों को दान दहेज भी नहीं चाहिये बस लड़की पढ़ी लिखी संस्कारी और घर सँभालने वाली चाहिए ।" माया ने बबली के बाल संवारते हुए उसे समझाया ।

" माँ उन्हें घर सँभालने के लिए बहु चाहिए ? पर आपको तो पता ही है कि मैं एक पढ़ी लिखी लड़की हूँ । घर के काम के साथ मैं पापा के काम में भी हाथ बटाती हूँ । क्या मैं वहाँ जा कर सिर्फ घर सम्भ. ालने का ही काम करूँगी ? " बबली ने माया की तरफ प्रश्न भरी नजरों से देखा।

अरे कर लेना सब कर लेना पर पहले आज बात तो पक्की हो जाए। एक बार बात पक्की हो जाने दो ,उसके बाद सब कर लेना। और हाँ जब हम तुम्हें अन्दर बुलाने आएँ तभी बाहर आना।" माया ने बबली को समझाया ।

जी माँ ठीक है । बबली ने जवाब दिया।

नवीन कमरे में टहलते हुए बार बार दिवार पर लगी घड़ी को दे ख रहा था । शाम के चार बज गये भई सब तैयार है ना ? बंसती चाची कभी भी लड़के वालों को लेकर आती ही होगी । " नवीन ने माया को सुनाते हुए कहा।

तभी नवीन ने घर के बाहर एक गाड़ी के रूकने की आवाज सुनी । उसने बाहर जा कर देखा तो एक बड़ी महँगी सी गाड़ी उनके दरवाजे के आगे आ कर रूकी । गाड़ी के रूकते ही बंसती चाची नें खिड़की से अपना हाथ हिलाते हुए नवीन को आवाज लगाई । "अरे नवीन जरा गाड़ी सही से पार्क करवा दो महँगी गाड़ी है कहीं खरोंच न लग जाए" ।

"जी चाची जी करवाता हूँ । आप सब अन्दर आईए ।नवीन ने कार का दरवाजा खोलते हुए कहा।"

एक–एक करके मंहगी कार में से बंसती चाची सहित पाँच लोग उतरे। लड़का उसके माता–पिता उसकी बहन और बसंती चाची। नवीन ने कार के ड्राइवर को समझा कर उनकी कार अपने घर के पास पार्क करवा दी।

"आईए अन्दर आइये "। कहते हुए नवीन सबको घर के अंदर ले गया।

अम्मा बंसती चाची आ गई " उसने आँगन में से आवाज लगाई । उसकी आवाज सुन माया भी रसोई में से झटपट मेहमानों के स्वागत के लिए बाहर आ गई । नमस्कार करते हुए वह सबको बैठक में ले गई। अम्मा जी भी अपने झूले पर हमेशा वहीं बैठती थी । बंसती चाची ने अम्मा जी के पैर छूकर " राम राम जिजजी कह कर प्रणाम किया।

"हाँ हाँ खुश रहो" कह कर अम्मा जी ने सबको सोफे पर बैठने के लिए इशारा किया।

"हाँ तो अम्मा जी जैसा मैंने कहा था, कि मैं हमारी बबली के लिए बहुत अच्छा रिश्ता लेकर आऊँगी तो दे खिए मैं ले आई। "निर्मला जी अमेरिका में रहती हैं ।अपने बेटे के लिए आपकी बबली को देखने आई हैं । यह निर्मला जी के पति के पति हैं किशोरी लाल और यह इनकी बेटी है नन्दिनी । इसका क्या है यह तो दो चार सालों में पराई हो जाएगी , और यह इनका इकलौता बेटा है संदीप । बहुत बड़ा कपड़े का कारो. बार है इनका और संदीप ही सारा काम सँभालता है। बस यह समझ लो हमारी बबली इस घर में राज करने वाली है। "

माया ने लड़के को देखा तो उसे लगा की लड़का बबली की उम्र से काफी बड़ा है।आप सब लोग आराम से बातें कीजिए मैं आप लोगों के लिए चाय नाश्ता लेकर आती हूँ । बैठक से निकलते निकलते उसने नवीन को अपने पीछे आने का इशारा किया ।

जी आप लोग बात करें मैं रसोई में देख कर आता हूँ ।" कहते हुए नवीन माया के पीछे पीछे रसोई की ओर बढ़ गया।

"क्या हुआ? मुझे क्यों बुलाया ? कुछ चाहिए कय? या बाजार से कुछ लाना है? देखो बाजार से कुछ लाना है तो छोटी से मँगा लो, घर में मेहमानों को छोड़कर मैं बाजार नहीं जा सकता । " नवीन ने माया से कहा।

"नहीं मुझे कुछ बाजार से नहीं मंगाना ,मैंने सब तैयारी कर ली है। मैं आपसे कहना चाह रही थी कि , लड़का उम्र में हमारी बबली से थोड़ा ज्यादा बड़ा लग रहा है।" माया ने बड़े संभल कर नवीन के आगे अपनी बात रखी।

नवीन ने कहा " हाँ लगा तो मुझे भी है। पर तुम यह सोचो लड़का उम्र में थोड़ा बड़ा है तो भी क्या फर्क पड़ता है । यह लोग दहेज भी तो नहीं माँग रहें ,और हमारी बबली अमेरिका में रह कर राज भी तो करेगी। यहाँ तो तुमने पहले दोरिश्ते देखे ही थे। किस तरह से उन्होंने दहेज के पीछे हमारी बबली का रिश्ता ठुकरा दिया था । अभी बबली की दो ओर छोटी बहनें हैं कल को उनकी शादी भी होनी है। अगर तीसरी बार भी रिश्ता टूट गया तो छोटी और मिनी के रिश्ते कैसे होंगे? इस बात को भी समझने की कोशिश करो। चलों जल्दी से बबली के साथ चाय लेकर बैठक में आ जाओ।" कहते हुए नवीन बैठक में चला गया ।

माया चाह कर भी नवीन की बातों का विरोध नहीं कर सकी। उसने बबली को कमरे से बुलाया और उसके हाथों में चाय की ट्रे थमा कर अपने साथ बैठक में जहाँ सब बैठे थे ले गई ।

" लो तुम्हारी होने वाली बहूँ भी चाय लेकर आ गई ।" बसंती चाची ने बबली और इशारा करते हुए कहा ।

सबको चाय दो बेटा " अम्मा जी ने मेहमानों की तरफ इशारा करते हुए कहा।

आओ यहाँ हमारे साथ बैठो " निर्मला जी ने सोफे में बबली के लिए जगह बनाते हुए कहा।

संदीप कनखियों से बबली को निहार रहा था । उसे बबली एक ही नजर में पंसद आ गई । उसने अपनी माँ को इशारे से इस रिश्ते के लिए हाँ कर दी ।

आपकी बेटी बहुत सुंदर है । हमें तो यह रिश्ता मंजूर है। निर्मला जी ने संदीप की बात को समझते हुए बबली का हाथ पकड़ कर अपने पास बिठाते हुए कहा।

अरे वाह यह तो बहुत अच्छी बात है " इस बात पर तो मुँह मिठा होना ही चाहिए । बंसती चाची ने मिठाई की प्लेट की प्लेट से बर्फी उठाते हुए कहा। अम्मा जी ने मन ही मन भगवान का धन्यवाद किया ।

"अच्छा अब जब बात पक्की हो ही रही है तो थोड़ी सी बात लेन–देन

ने निर्मला जी और किशोरी लाल जी तरफ देखते हुए कहा।
"अजी दान– दहेज की क्या बात करना ,हमारे पास भगवान की दया से सब कुछ है ।अमेरिका में कपड़ों का बड़ा कारोबार है । मेरे बाद मेरे बेटे को ही सबकुछ मिलेगा। घर का मकान है। घर में काम के लिए काम वाली है। बस संदीप की माँ की एक शर्त है।
अम्मा जी ने चौंकते हुए पूछा " कैसी शर्त?"
" कुछ नहीं अम्मा जी बस हमें अप. ने लड़के के लिए लड़की कुँआरी चाहिए ।" निर्मला जी ने अपने बेटे की तरफ देखते हुए कहा।
" आपका क्या मतलब है ।"हमारी बेटी पर आपको शक है? माया ने निर्मला जी तरफ देखते हुए कहा ।
"अरे नहीं बहू,तुम निर्मला जी की बात को ठीक से समझी नहीं । बात यह है की संदीप की पहली पत्नी का शादी से पहले किसी के साथ चक्कर था । शादी के एक साल के भीतर ही दोनों का तलाक हो गया। दूसरी शादी हुई तो वह लड़की पहले से ही तलाक शुदा थी और उसके घर वालों ने यह बात इनसे छुपाई थी ,इसलिए निर्मला जी ने पूछा।
" अरे आपके बेटे की पहली दो शादी हो चुकी है ? अम्मा जी ने हैरानी से ,निर्मला जी तरफ देखते हुए कहा।
" बसंती तुम यह कैसा रिश्ता हमारी बबली के लिए लाई हो ? यह लड़का को पहले ही दो बार शादी कर चुका है । यह तो तुमने हमें बताया भी नहीं ,हमें लड़का बबली से थोड़ा उम्र में बड़ा लग रहा था पर हम नहीं बोले" । ऐसी बात नहीं है कि हमारी पोती के लिए हमें कोई अच्छा रिश्ता नहीं मिलेगा ,वो तो तुमने कहा था सो तुम्हारी बात रखने के लिए हमने इस रिश्ते के लिए हा कर दी थी । अम्मा जी ने लगभग बंसती चाची को डॉटते हुए कहा।
"अम्मा जी आप तो बात का बतंगड बना रही हैं । अभी तो बिरादरी में पता ही नहीं चला है कि यह लोग अमेरिका से आए हैं। नहीं तो एक से बढ़कर एक पैसे वाले अपनी लड़की ब्याहने आ जाते। आपने कहा था बबली का रिश्ता कराने के लिए तो सबसे अच्छा रिश्ता ले कर आई थी । लड़की बिना दान दहेज के ब्याही जाती और राज भी करती । " बस एक ही तो शर्त है कि लड़की कुँआरी होनी चाहिए । बस इतनी सी बात पर आप गुस्सा हो गई ।
अब तक शांत मन से सबकी बातें सुन रही बबली से रहा नहीं गया उसने निर्मला जी तरफ घूमते हुए कह " माफ कीजिये मध्यम वर्गीय होने का अर्थ यह नहीं कि यदि कोई अपनी बेटी की शादी में दहेज नहीं दे सकते तो आप उनकी मजबूरी का फायदा उठाकर उस लड़की को किसी भी लड़के के गले बांध देंगे। यदि आपसे कोई आपकी लड़की के कुआरेपन का सबूत माँगे तो क्या आप दे सकेंगी । अमेरिका जैसे प्रगतिशील देश में रह कर भी आप लोग भारत के पिछड़े गाँव के लोगों से भी पिछड़ी समझ रखते हैं । आज के समय में जह लड़कियाँ लड़कों के साथ कदम से कदम मिला कर चल रही हैं । वहाँ आप लड़की के कुंवारे पन की जाँच कैसे करेंगी ? सफेद चादर पर सुहाग रात में पड़ने वाले खून के कुछ धब्बों से ? क्या यही मापदंड है एक लड़की के कुआरेपन का तो मुझे क्षमा कीजिए मैं खुद भी ऐसे लड़के से शादी नहीं करना चाहूँगी जो खुद तो दो बार शादी करके अपनी शादी नहीं संभाल सका और तीसरी बार भी उसे कुँवारी लड़की से शादी करनी है। "
बबली के मुँह से यह सुनकर अम्मा जी ,माया और नवीन सब उसके पीछे उसके इस फैसलें में साथ देने को खड़े थे।
बंसती चाची चुप चाप निर्मला जी के परिवार को लेकर दरवाजे से बाहर निकल गई ।

❑❑

संजय वर्मा"दृष्टि"
मनावर
जिला धार(म प्र)

उतरता रंग

उस मिश्रित आबादी वाले मौहल्ले में किसी संस्था द्वारा महिला सभा आयोजित हुई। सभा में अमीर–गरीब सभी महिलाओं को आमंत्रित किया गया था। सभा शुरू होने से पहले एक अमीर महिला ने दिवाली के दिन महंगा बड़ा टीवी खरीदने की बात मौजूद महिलाओं को बताई। सभी ने उसकी बात सुनी, बधाई दी और मिठाई खिलाने को कहा। अमीर महिला ने अपनी अमीरी का बखान करते हुए सभी क घर आकर अपने महँगे टी.वी. पर कार्यक्रम देखने और मिठाई खाने आने का निमंत्रण दिया।
एक गरीब महिला ने एक दूसरी गरीब महिला की ओर संकेत करते हुए जवाब दिया, ''बहनजी, हम लोग जरूर आयेंगी। इनके पतिदेव का एक बड़ी टी. वी.प्रतियोगता के लिए सिलेक्शन हुआ है, उसका दीवाली के दिन प्रसारण होगा। अन्य महिलाएं अपने अपने पति का सिलेक्शन नही होने से नाराज थी।साथ ही मेरे बच्चे का भी डांस प्रतियोगिता में सिलेक्शन हुआ है, उसका प्रसारण उसी दिन होगा। दोनों का अगले दिन पुनः प्रसारण भी होगा। आप कहे तो हम दिवा. ली के दिन ही आ जाते हैं, आपको बधाई देने के साथ हम प्रसारण भी देख लेंग. ।'''हाँ, हाँ! आप सब जरूर आइए। दे खिये तो हमने कितना सुन्दर टी.वी.खरीदा है। ऐसा टी.वी. मौहल्ले में किसी के पास नहीं होगा।''दिवाली वाले दिन सभी महिलाएँ उस अमीर महिला के घर बड़ा और महंग टीवी देखने के लिए गई। जैसे ही कार्यक्रम शुरू हुआ, गरीब महिला खुशी और उत्साह से मानों अमीर बन गई। सब महिलाएँ उसे बधाइयाँ देने और उसके पति की तारीफ करने लगी। तारीफ व बधाइयों का यह दौर थमा भी नहीं कि बच्चे के डांस का प्रसारण आरम्भ हो गया।जहाँ पर टीवी की तारीफ होनी थी, वहाँ पर गरीब महिला के पति व बच्चे की तारीफ होने लगी। अमीर महिला की मिठाई और गरीब महिलाओं को बधाइयाँ, दिवाली के दिन यह अनूठा संयोग था।अमीर महिला के चेहरे से घमंड का रंग उतरता चला गया।उसके अपने पति का सिलेक्शन नही होने से चेहरे का रंग उतर गया।

❑❑

तेजकरण नारोलिया,
भोपाल

हृदय की पीडा

नीरव मन में नव
उमंग का, स्पंदन कर देना,
मन की व्यथा हृदय की पीड़ा,
हे जगत पिता हर लेना।

निर्जन वन में फूल खिलाता,
भँवरे का गुंजन बनकर ,
पल में अँधियारा हर लेता,
अंबर में दिनकर बनकर ।
स्वर्ण सुंदरी सी चुनरी,
लगती काली रात के तारे ,
चंद्र खिलौना उदय हुआ तो,
हर लेता संताप हमारे।
भोर की मंद समीर से कह दो,
हृदय निश्छल कर देना।
मन की व्यथा हृदय की पीड़ा,
हे जगत पिता हर लेना।

पपीहे का क्रंदन सुनकर,
स्वाति बूंद बरसा जाना ,
नर्तक प्रिय का नृत्य देखकर,
काली घटा बन छा जाना ।
नव कोपल का सृजन करके,
बसंत ऋतु बन आ जाना ,
मन की उदासी मिट जाये,
कानों ऐसा कह जाना।
निर्झरिणी की कल कल को,
जीवन का राग कर देना।
मन की व्यथा हृदय की पीड़ा,
हे जगत पिता हर लेना।

सागर की लहरों सा जीवन,
ऊपर नीचे होता है ,
दुखों के सैलाब में मन क्यों,
फुट फुट कर रोता है।
टूट जाऊं उलझन में पढ़कर,
धैर्य हृदय में जगा देना ,
किस्मत में अँधियारा छाये,
बन उजियारा भगा देना ।
भोर का सूरज बनकर के,
जग अँधियारा हर लेना।
मन की व्यथा हृदय की पीड़ा,
हे जगत पिता हर लेना।

सरहद की सीमा न रहे,
रहे न बंधन भाषा में ,
संसार के सरे राष्ट्र जगे,
अपने पन की एक आशा में।
अच्छाई कैद न कर पाए,
इस दुनिया की कोई कारा ,
प्रेम रंग में रंग जाये सब,
बहे अमन चैन की धारा।
करुणा दया ओर प्रेम से,
सरोकार कर देना।
मन की व्यथा हृदय की पीड़ा
हे जगत पिता हर लेना।

❑❑

नीति अग्न्होत्री
इंदौर (म.प्र.)

बडी है न्यारी

हिन्दी नहीं कोई निर्बल भाषा
यही है हमारी प्यारी भाषा।
मातृभाषा हिन्दी बड़ी है न्यारी
सबके मन की यह राजदुलारी।

हम सब हिन्दुस्तानी तभी कहलाएंगे
हिन्दी की पताका ऊंची लहराएंगे ।

हिन्दी भाषा तो बहुत समृद्ध
जिसमें सूर ,तुलसी,टैगोर प्रबुद्ध ।
हिन्दी देश का स्वाभिमान है
हिन्दी देश की पहचान है ।

हिन्दी के दीपक को जगमगाना
पराई भाषा पर नहीं इतराना।
हिन्दी में वार्तालाप होना चाहिए
हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहिए
।
हमारा देश हिन्दी प्रधान हो
हिन्दी अस्तित्व की पहचान हो ।

❑❑

डॉ राजेश श्रीवास्तव
निदेशक रामायण केन्द्र, भोपाल

साजिश में कवि

बुरा वक्त है यह
सचमुच बहुत बुरा
कि संदेह में बार बार अपनी ही
सूरत को निहारता
निहारता अपने ही अक्स को
कि परछाइयों से सवालजुदा
अपनी ही आहट पर चौंक चौंक पड़ता
अपने ही आप से साजिश में मशगूल कवि
सचमुच बहुत बुरा वक्त है यह जब
अपनी पहचान को कोसता है वह
रोता जा रहा है जार जार
कवि हो रहा है शर्मिंदा
अपने हिन्दू होने पर
जातियों की तरफदारी में
बँट गया है उसका ईमान
कि कवि अब जाति की पहचान बन गया है
साजिशों में उलझी दुनिया
अब घेर चुकी है कवि को
कवि अब कविता नहीं साजिश लिखता है
दुनिया के सारे लोग गए हैं अपने काम पर
पर कवि बैठा है अपनी काली कलम थामे
पता नहीं कविता में साजिश है या
साजिश में शुमार है एक शातिर कवि ।

❑❑

मंजू दीक्षित
दिल्ली

पर्यावरण

बहुत लुभाता है धरती को ,
अगर कहीं हो कोई पेड़
निकट बुलाता पास बिठाता
ठंडी छाया वाला पेड़.
तापमान धरती का बढ़ता,
ऊंचा ऊंचा दिन दिन ऊंचा,
झुलस रहा गर्मी से आँगन,
गली मोहल्ला कूँचा कूँचा.
आओ पेड़ लगाएं
जिससे फैले हरियाली,
अपनी धरा बचाने की
अब यही एक है ताली

❑❑

विनोद दूबे
सिंगापुर

मैंने जापान देखा है

लोग कहते हैं कि,
कोई तुम्हें ईंट से मारे,
जवाब पत्थर से देना,
कोई गहरे जख्म दे,
तो बदला जरूर लेना,
पर मैंने जापान देखा है,
जहां था हिरोशिमा का नरसंहार,
किंतु बदले की अपेक्षा से परे,
सुनायी दी सिर्फ शांति की गुहार,
लोग कहते हैं कि,
कानून, सफाई और सुरक्षा,
सब सरकार का काम हो,
जनता माने तो ठीक वरना,
कठोर दण्ड का प्रावधान हो,
पर मैंने तो जापान देखा है,
देखा है एक जिम्मेदार समाज,
तुलसी के मानस में जो पढ़ा था,
यहाँ दिखा मुझे असली रामराज,
लोग कहते हैं कि,
बाजार की मारी दुनिया में,
अंग्रेजी रोजगार की भाषा है,
फिर इसी पर ध्यान लगाओ,
हिन्दी से बेकार की आशा है,
पर मैंने तो जापान देखा है,
सीखा है मातृभाषा का सम्मान,
बाजार के दबाव से कही ऊपर,
बनाये रखना खुद की पहचान,
लोग कहते हैं कि,
दौलत और शोहरत कमाओ,
समर्थ हुए तो उपभोग जरूरी है,
जीवन आनंद की तलाश है,
यहाँ सुख और भोग जरूरी है,
पर मैंने तो जापान देखा है,
समझा है कम में जीने का तत्व,
चीजों से ऊपर विचारों का स्थान,
अल्पवादी जीवन का महत्व,
लोग कहते हैं कि,
विकास वहाँ कैसे संभव है,
जहां प्रकृति का कहर हो,
कभी भूकंप के झटके लगें,
कभी सुनामी की लहर हो,
पर मैंने तो जापान देखा है,
देखा है विकास का दम खम,
सीखा है कि हर कठिनाई से,
ऊपर है मनुष्य का पराक्रम,
लोग कहते हैं कि,
पश्चिम के देशों को देखो,
देखो उनकी चमक का प्रभाव,
पूरब के देशों में क्या रखा है?
गरीबी, अशिक्षा, असुरक्षा, अभाव,
पर मैंने विनम्र शक्ति का प्रतीक,
पूर्वी संस्कृति की शान देखा है,
अतिथि देवों भवः की भावना लिए,
उगते सूरज का देश जापान देखा है,

❑❑

डा दिलीप कुमार झा
फोर्ट ग्लास्टर विद्यालय
हावड़ा पश्चिम बंगाल

प्यारी हिन्दी

हिन्दी की महिमा कविता
जन जन की प्यारी हिन्दी
भारत माता के माथे की हिन्दी हिन्दी
संस्कृत देववाणी से निकली हिंदी
देवनागरी में लिखी जाती है
हिन्दी जन जन की जुबान है
हिन्दी की महिमा महान है।
लिखने पढ़ने बोलने में मधुरता
तत्सम तद्भव देशी विदेशी
शब्दों में है सहजता
भारत की एकता की पहचान है
हिन्दी की महिमा महान है।
हिन्दी जन जन की जुबान है
शब्द मोती की तरह चमकते
अर्थ हीरे की तरह चमकते
हिन्दी निर्झरिणी की तरह
प्रवाहमान है
हिन्दी की महिमा महान है।
विश्व में जलता रहे हिंदी का दीपक
घर घर में जलता रहे हिंदी का दीपक
जन जन देता रहे सम्मान
हिन्दी की महिमा महान है।

❑❑

पंडित सुरेश नीरव
नोएडा

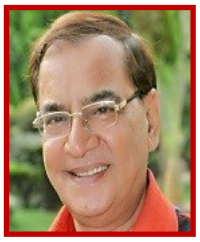

मन का घर

मन कहे घर बना लें यहीं पर कहीं,
इतनी सुंदर जगह तो जमीं पर नहीं।

तन–बदन दिखते फूलों से प्यारे यहाँ
गुनगुनाते गजल जल के धारे यहाँ
नाचते हैं सवेरे नदी पर यहीं,
इतनी सुंदर जगह तो जमीं पर नहीं।

धूप की लेके काँवर चले है पवन
घर में खुशबू के आकर करे है हवन
मंत्र भवरों को गाते कली सुन रही,
इतनी सुंदर जगह तो जमी पर नहीं।

टूट कर जो सितारा फलक से कहीं
बनके बिंदिया सा चमका जबीं पर यहीं,
तितलियों सी बहकती हवा बह रही
इतनी सुंदर जगह तो जमीं पर नहीं।

पेड़–पत्ते बजाते दिखे तालियां
नाचे खेतों में फसलों की जब बालियाँ
सात सुर में हैं गाते ये पंछी यहीं,
इतनी सुंदर जगह तो जमीं पर नहीं।

❑❑

ताशवी
कक्षा–यू के जी
स्कूल–एन.ई.सेपलिंग,
राजौरी गार्डन,न्यू देहली।

जयप्रकाश मिश्रा
पटना, बिहार

गजल

न जाने अचानक किसी की याद आ जाती है
यादें दिल से होकर चुपचाप गुजर जाती है।

साथ निभाने का वादा किया था किसी ने
मेरे सपनों में आकर हमेशा वह रुलाती है।

फितरत बेवफाई उसकी जग जाहिर है यहां
पता नहीं क्यों फिर भी जानेमन कहलाती है ।

वफा बेवफा शिकवे शिकायत सब है यहीं
जिंदगी यूं ही नहीं बेवफा कहलाती है।

परवाह नहीं की जिंदगी की जीते गए
बेवकूफी समझ में मेरी यह नहीं आती है ।

❑❑

सेहत और दिल

सुनीता चाँदला,
अमेरिका

दिल से

ये दिल ना होता बेचारा/तो क्या होता हमारा
सब अंग शिथिल हो, रात सोते
यही ना थकता, एकमात्र सहारा
जी हाँ, यही हमे जीवित रखे हुआ है ,
अतः हमारा भी कर्तव्य बनता है कि हम इसके आभारी रहें और इसका खूब ध्यान रखें । यह केवल एक यंत्र नहीं जो सम्पूर्ण शरीर में रक्त संचार करता है । हृदय एक मजबूत अनैच्छिक मासपेशी से बना है जिसका आकार एक मुट्ठी के समान है। एक दिन में लाख बार धड़कता है और एक मिनट में 60 से 90 बार और 7600 लीटर खून पंप करता है।
यह लाल रंग का होता है रक्त के कारण, अधिक वजन वाले व्यक्ति में पीला नजर आता है वसा से ढके होने पर ।

कुछ खास बातें:

पते की बात यह है कि खाने से जब पेट तीन चौथाई भर जाये तो खाना बस कर दे।
नमकीन व बिस्किट , जो गिनने में नहीं आते , बहुत नुकसान करते हैं
इनके पैकेट्स पर लेबल को ध्यान से देखिए : यदि सैचुरेटेड फैट या वैजिटेबल ऑयल लिखा है तो यह हृदय के लिए अत्यन्त हानिकारक सिद्ध होगा ।
फल सब्जियाँ और दालों का अधिक मात्रा में सेवन करें ।
सबुत अनाज का अधिक सेवन करें।प्रोटीन से कोशिकाओं का निर्माण होता है, दिल की भी।

❑❑

कविता/गीत/गजल

डॉ आदित्य रत्न

सुनना मना है

मरीजों की कतार में बैठी वो बुढ़िया
उम्र की थकान, उम्मीद की झुर्रियां
बेटी को खोने से, आँखे थी नम
डेढ़ तौला शरीर और
सौ मन का गम ।
चीख रही थी उसकी, बेपरवाह लाठी
लंगड़ा चश्मा भी ,चिल्ला रहा था
मन की तरंगों में ,थी खलबली,
बेचौन चित्त ,शोर मचा रहा था ।
और वो बेपरवाह,
शांत और निराश
उसे ये शोर ,
सुनता था कम
फाँद कर उसकी,
सन्नाटे की दीवारें
कांपते हाथों की,
धीमी नब्ज को टटोल ,
दिल की किवाड़ पर उसकी,
दस्तक दी कुछ इस तरह बोल
"सुनने की मशीन लगवाओ,
ऐसे सुनाई नहीं देगा। "
फीकी सी मुस्कान,
छायी कुछ इस तरह
पिचके हुए गालों से,
दाँतो के झरोखों से
वो बुदबुदाई, कुछ इस तरह
"सुनाई तो मुझे,
बचपन से नहीं देता ,
औरत जात हूँ ,
सुनना मना है बेटा "।

❑❑

लीना शारदा
जकार्ता ,इंडोनिशिया

साईं पर मेरा विश्वास

जब गिरि हूँ गर्त की खाई में
कभी साईं
दिल के किसी –कोने में कहीं ,
दबी सी आवाज आती है
जब छोड़ी है सांसों की डोरी
तूने अपने साईं पर
तो गर्त में मिलकर भी ,
दुनिया में नाम तूँ कमा जाएगी
जो छूट गया है पीछे
तुझसे वह भी तू पा जाएगी
साईं के नाम लेने भर से ही
तूँ इस भवसागर से
पार पा जाएगी
साई को गुरू दक्षिणा के रूप में
अर्पित पुष्प सुमन
बाबा तेरे रहमों कर्मों से,
इस जन्म में नवाजी गई हूँ
रखा है हाथ तूने जो सर पर,
साथ उसके
जन्मों जन्मों तक रहना हैं
जिस हाल में भी तू रखे ,
उस हाल में ही अब खुश रहना हैं
जरे जरे में तेरा ही अस्तित्व
रहमतों के रूप में बरसता हैं
इस बेखबर दुनिया को
ये गूढ़ रहस्य से
अवगत करवाना हैं।
परमात्मा के रूप में,
तुझको ही देखा है साईं
जिस रूप में भी तू रखे साई ,
वो ही तेरा प्रसाद हैं
तेरे प्रसाद से ही ,
जीवन में भरी मेरे मिठास हैं

❑❑

लक्षिता/उम्र 10/कक्षा 6

सबाना /उम्र 11 /कक्षा 6

सविता गुप्ता
प्रयागराज

शहीद की पत्नी

रंजना खेत से बापू को खाना दे कर लौट रही थी कि रास्ते में सामने से आ कर गोकुल ने साइकिल खड़ी कर दी। वह उसे हटने के लिए कहती रही लेकिन वह पूछता रहा,ये साइकिल वाला बचपन का प्यार तुम कैसे भूल सकती हो ''तुम मेरी क्यों नहीं बन सकती?
आखिर उस चेतन में ऐसा क्या है ? सेना में ही तो काम करता है। तुम्हें अपने साथ ले भी नहीं जाएगा, पड़ी रहोगी ससुराल में ही अकेले।अभी भी वक्त है बापू से बोल दो ''रोका'' ही तो हुआ है।''

वह उदास हो कर बोली, ''देखो गोकुल, अब सब हो गया है, मैं कुछ न बोल पाऊंगी बापू से और अब तुम भी मुझे परेशान न किया करो। अब कुछ ही दिन हैं शादी को, हम अच्छे दोस्त बन कर रहें वही अच्छा है दोनों के लिए।''

गोकुल ने भी जवाब में आश्वाशन दिया कि दोस्ती तो वह मरते दम तक निभा लेगा लेकिन वह उससे प्यार जो कर बैठा था, उसका क्या?

रंजना उसकी बातें सोचते–सोचते घर पहुँच चुकी थीं, वहां गोकुल भी अपने घर उदास होकर चला गया था।

कुछ दिन बाद रंजना की शादी हो गई। उसके जाने के बाद गोकुल चुप–चाप रहने लगा था। एक दिन गोकुल के बापू गोकुल की नौकरी लगने की खुशी में सबको मिठाई खिला रहे थे। इसे इत्तफाक कहें याकिस्मत का खेल, उसे नौकरी मिली भी तो वहीं इंदौर में जहाँ रंजना की ससुराल थी।
वह डायरी के पन्नों को पलटते हुए रंजना का पता ढूंढने लगा।

अगले हफ्ते इंदौर पहुँच कर उसने नौकरी जॉइन कर ली। एक दिन हिम्मत करके उसने रंजना को फोन किया, कुछ देर बात कर उसने उसके हालचाल लिये और अपनी नौकरी की बात बतायी। रंजना से पता चला कि वह फैक्ट्री तो उसके चाचा ससुर की है जहां गोकुल को नौकरी मिली है।

कुछ दिन बाद वह उससे मिलने उसके घर पहुँच गया। सबसे मिल कर वह बहुत खुश हुआ, सब ही बड़े मिलनसार लोग थे।
चाचा जी भी उसके काम की बहुत तारीफ कर रहे थे।
समय बीत रहा था कि. एक दिन अचानक खबर मिली !

*''भारत –पाकिस्तान की बार्डर'' पर लड़ते हुए 20 जवान शहीद हो गये, उसमें चेतन का भी नाम था'।
रंजना की तो दुनिया ही लुट गयी थी। सब सान्त्वना दे रहे थे उसे पर वह एक सैनिक की बीवी थी उतनी ही शालीन एवं कठोर। एक मुस्कुराहट के साथ उसने चेतन को अलविदा किया....

*आज वह दिन था जब एक दोस्त अपनी दोस्त को ''शहीद की पत्नी'' का सम्मान दिलाने जा रहा था'।

सब तरफ करतल ध्वनि सुनाई दे रही थी वह शहीद की पत्नी का सम्मान पा चुकी थी और स्टेज से उतरते हुए उसने मन में प्रण लिया! अब वह हार नहीं, मानेगी वह पूरी मेहनत से तैयारी करके देश सेवा के लिए ''आर्मी'' में भर्ती होगी। आज साइकिल का प्यार का सहयोग भी उसे गर्वित कर गया था।

❑❑

डॉ० उपासना पाण्डेय,
प्रयागराज

लालसा

वरूंथला गाँव की मनोरमा ताई सदैव प्रभुश्रीनाथ की भक्ति में डूबी रहती थीं। उनका उठना, बैठना, जागना और सोना सब प्रभु के सानिध्य में ही रहता था। प्रभु के नाम– स्मरण के बिना उनका एक पल बिताना कठिन था।

मनोरमा ताई के एकाकी पुत्र सहदेव के चरित्र में भी प्रभु–भक्ति और माता के संस्कार स्पष्ट दिखायी पड़ते थे । अब वह विवाह–योग्य हो गया अतः ताई एक ध र्मपरायणा, शिक्षित व सुशील पुत्रवधू का अन्वेषण कर रही थीं। संयोगवश उन्होंने पास के गाँव में ही शान्ति नाम की गुणवती कन्या के विषय में सुना और यथाशीघ्र उसे बहू बना घर ले आयीं । शान्ति ने अपने शिष्ट और निश्छल व्यवहार से ससुराल में सभी का मन जीत लिया । ताई से पुत्र के विवाह के लिये मान्यता माँगी थी अतः पूजा–पाठ और घ र का दायित्व शान्ति को सौंपकर वह प्रभु के दर्शन को तीर्थ चली गई ।

दूसरे दिन शान्ति सासूमाँ के वचनों की शिरोधार्य कर स्नानादि नित्यकर्म कर प्रभुश्रीनाथ को भोग लगाने बैठ गई। सासूमाँ की आज्ञा थी कि बिना भोग लगाये कुछ ग्रहण मत करना । भोग लगाये, तीन पहर बीत गये परन्तु नैवेद्य में कमी न आयी, शान्ति ने भूल की क्षमा माँग पुनः नैवेद्य अर्पित किया परन्तु वह पूर्ववत् रहा । अब शान्ति भू ख से व्याकुल हो प्रभु के समक्ष हठ करके भू खी ही सो गई। तब प्रभु ने उसके हठ से हारकर सरलहृदया निश्छल शान्ति को स्वप्न में दर्शन देकर भोग ग्रहण किया। उस दिन से निरन्तर शान्ति प्रसन्नतापूर्वक भोग लगाकर भोजन करने लगी ।

निर्मला ताई को तीर्थस्थल से लौटकर सारा प्रसंग ज्ञात हुआ तो उनके नेत्र अश्रुपूरित हो गये। वह चौखट पर प्रभु के चित्र को लेकर बैठ गई। एक तरफ उसे शान्ति की भक्ति पर गर्व था और दूसरी तरफ प्रभु के साक्षात दर्शन की लालसा ।

❑❑

ममता शर्मा "अंचल"
अलवर(राजस्थान)

वो मासूम सँपेरण

सवेरा होते ही सब अपने –अपने कार्यों में ऐसे लग जाते हैं जैसे सूर्य हंटर लेकर पीछे पड़ा हो सबके। मैं भला कैसे अछूती रहती उस हंटर के डर से...

मैं भी जल्दी– जल्दी खाना बनाकर बच्चों को टिफिन देकर निकल जाती अपने ऑफिस।

एक रोज ऑफिस के पास रास्ते में ब्रेकर पर से हमारी गाड़ी गुजरी तो देखा सीधे हाथ की ओर एक पतली सी औरत थोड़ा सा घूँघट निकाले मुझे देखकर हाथ हिला रही थी। बदले में मैंने भी हाथ हिला दिया। बस उस दिन का दिन और आज का दिन है कि हमारा रोज का काम हो गया हो जैसे।
अब तो वो न दिखे तो ऑफिस में सोचती कि '' वो ठीक तो है न।''बाद में एक दिन मुझे मालूम हुआ उधर उसका भी यही हाल था...

ऑफिस में लोग तरह –तरह की बातें बनाते किंतु मुझे बुरा नहीं लगता क्योंकि हमारा रिश्ता पावन रिश्ता है वैसे ही जैसे रूद्र प्रयाग स्थल पर अलकनंदा व मंदाकिनी अलग–अलग रास्ते से आकर एकमेव हो जाती हैं और ले लेती हैं रूप पावन गंगा का।

रोज सवेरे व शाम को वो झूठ –मूट कोई काम करती रहती और बार –बार देखती रहती राह हमारी गाड़ी के आने की। गाड़ी में मुझे देखते ही बहुत खुश होकर वो हाथ हिलाती जैसे जाने उसे क्या मिल गया हो। मुझे तो लगता है किसी जन्म का कोई रिश्ता होगा जो यादों के रेशमी धागों से बना हम दोनों की आत्मा को बांधें रखे हुए हैं अन्यथा कौन किसी को इतना स्नेह देता है???

एक दिन मैं पैदल उसके घर के पास से होकर गुजर रही थी कि उसने आवाज दी। मेरे साथ मेरी स्टाफ की एक साथी भी थी। हम चले गए उसके घर के अंदर। मेरी साथी बोली'' ये सपेरों की बस्ती है न''। उसने कहा हाँ...। फिर वो हमें खाट पर बिठाकर खुद जमीं पर उकड़ू बैठकर मुझसे बोली'' एक दिन आपको पता है मैं आपकी गाड़ी के पीछे कितना दौड़ी जब आपका चेहरा न देख पाई तो, फिर मेरे पति बोले कि गाड़ी निकल गयी क्यों परेशान होती है । '' आप को देख लेती हूँ तो मन हल्का हो जाता है बहुत खुश हो जाता है मेरा मन आपको देखकर पता नहीं क्यों??

मैंने हँसकर कहा'' होगा कोई बकाया लेन–देन किसी जन्म का जो इस जन्म में हमारे लम्हों के पत्तों पर ओस की बूंदें बनकर हमें सुकून से सराबोर किये जा रहा है । फिर हम सभी हँस पड़े।

उस दिन मैंने उसे गौर से देखा तो पाया कि उसके निश्तेज चेहरे पर एक छोटी सी बिंदी माथे पर ऐसे लग रही थी जैसे सन्ध्या में अरावली पर्वत से डूबता सूरज लाल दिखाई देता है।उसकी आँखों में एक अजीब सा कसमसाता सूनापन उसकी पलकों को दर्द के वजन से भारी किये हुए लगा। उसके अधर ऐसे सूखे हुए थे जैसे मरुथल में काली मिट्टी में दरारें पड़ गयी हो।उसके आजानुबाहु से हाथों में पहनी हुई चूड़िया खनखना उठती थीं जब वो हाथ हिला– हिला कर बातें किये जा रही थी। सब कुछ एक तरफ और उसकी मासूमियत भरी बातें और चेहरा एक तरफ। हम थोड़ी देर रुककर आ गए लेकिन मैं आते –आते मैं लम्हों में कैद कर लायी उस मासूम सपेरण की मासूमियत और मासूम हँसी...

❑❑

इंदु नांदल
विश्व रिकॉर्ड होल्डर
इंडोनेशिया

माँ

अरे सुनती हो . कहाँ छुप कर बैठी हो जरा जवाब तो दो । राघव ने सारा घर छान मारा परन्तु राधा कहीं नजर न आई ।तभी वह तेज कदमों से छत की ओर बढ़ा ।

अरे राधा , मैं तुम्हें खुशी की खबर सुनाने को उत्सुक हूँ और तुम यहाँ पक्षियों को दाना डाल रही हो । राधा ने हँसकर कहा , "जी बताइए , कान तरस गए हैं खुशी की बात सुनने को" ।राघव ने अपनी पत्नी का हाथ पकड़ कर कहा ," तुम्हारे नाम घर खरीदा है अब तुम्हें किराए के घर में रहने की जरूरत नहीं "। राधा की खुशी का ठिकाना न रहा।। पछले कई वर्षों से सूखे की मार की वजह से खेतों से फसल ना के बराबर ही प्राप्त हो रही थी।पूरा परिवार तंगी में मन मारकर जी रहा था।राधा का बस एक ही सपना था कि मरने से पहले एक अपना छोटा सा घर हो ।राघव दिन रात मजदूरी कर अपनी पत्नी के ख्वाब को पूरा करने में जुटा था । अब दोनों की खुशी का ठिकाना न था।
तभी उनकी बेटी लता वहाँ आई और बोली, "माँ – बाबा मेरा विदेश जाने के लिए कम्पनी ने चयन किया है और कल तक 1 लाख रुपये जमा करवाने हैं । परन्तु अगर यह सम्भव नहीं है तो मैं जाने से इंकार कर देती हूँ "।

तभी राधा बोली , "सम्भव कैसे नहीं,अजी सुनते हो !मुझे कोई घर वर नहीं चाहिए, मेरा घर तो मेरी बेटी के दिल में है और खुशी उसके सपने पूर्ण होने में"।

राघव ने प्रशंसा भरी नजरों से राधा को देखा और लता माँ के चरण छूकर उनके गले लग गई ।

प्रिंस/उम्र 12 वर्ष/कक्षा 6

डॉ अनीता कपूर
कैलिफोर्निया

मानसिकता

"जी नमस्ते, मेरा नाम सरिता है और मैं आपके बिलकुल ऊपर वाले फ्लैट में रहती हूँ..."....
"जी नमस्ते, कहिए?"....
" मुझें घर में काम करने के लिए एक बाई की जरूरत है तो क्या अपनी बाई को ऊपर भेज देंगी?"
"जरूर भेज दूँगी, वैसे कितने लोग है आप के घर में?"...
" बस मैं अकेली ही हूँ"।....
"अच्छा थोड़ी देर में बाई आ जाएगी,"....
''जी धन्यवाद"... कहकर मेंने इंटेर्कोम रख दिया। थोड़ी देर बाद, दरवाजे की घंटी बजी तो वाकई बाहर एक बाई को खड़ा पाया, मन में एक खुशी के लहर लहरा गयी...सोचा, चलो एक समस्या का समाधान तो आसानी से हो गया है। बाई से सारी बात तय हो गयी थी वक्त और पैसों को लेकर....और फिर कल से उसके आने का इंतजार भी शुरू हुआ...लगा कि बाई के हाथ में एक सुदर्शन चक्र है और वो कल से मेरे अव्यवस्थित घर की धुरी घुमा देगी। अगले रोज बाई का इंतजार करती रही पर वो नहीं आई। उसके अगले दिन मैं परेशान सी लिफ्ट से उतर कर किसी नई बाई की तलाश में मुड़ी ही थी कि सामने से वही बाई दिखाई, वह मुझे देख कर कन्नी काटने की कोशिश में थी...मैंने उसे पकड़ कर पूछ ही लिया –"सब कुछ तय हो तो गया था फिर तुम आई क्यों नहीं?",

वो सकुचा कर बोली....."मेमसाहब मैं तो आना चाहती थी पर आपके नीचे वाली आंटी जी ने मना कर दिया आपके यहाँ आने से"....
"पर क्यों मना किया और तुमने उनकी बात भी मान ली, क्या तुम्हें और पैसा नहीं चाहिए?'...

वो बोली..." पैसा किसे बुरा लगे हैं मेमसाहब, पर आप तो यहाँ हमेशा रहने वाली हो नहीं, उनका काम तो पक्का है न, और वो बोल रही थी कि आप अकेली औरत हो...उन्हे शक है कि कुछ.....कि कुछ.....", इसके आगे बाई कुछ बोली नहीं और चली गई । और मैं चुपचाप खड़ी उसकी पीठ पर अपने अकेले होने के एहसास को ढूँढने लगी ....समझ नहीं पाई कि चुनौतियों को पार करके यहाँ तक पहुँचने के लिए खुद को शाबाशी दूँ, या नीचे वाली उस आंटी जी की "अकेले" शब्द की मानसिकता पर दुख मनाऊँ। ❑❑

डॉ. सुनीता श्रीवास्तव
इंदौर, मध्य प्रदेश

शांति पाने

आश्रम में एक छात्र ने अपने गुरु से कहा, "गुरुदेव, मैं शांति की तलाश में हूँ , परंतु मन की अशांति से परेशान हूँ ।"

गुरु ने मुस्कुराते हुए कहा, "नदी के किनारे जाओ और वहाँ कुछ समय व्यतीत करो।" छात्र ने वहाँ जाकर देखा कि पानी शांत था, परंतु हवा चलते ही लहरें उठने लगीं।

वापस आकर छात्र ने गुरु से कहा, "गुरुदेव, हवा चलते ही पानी अशांत हो गया और रुकते ही शांत।"

गुरु ने समझाया, "तुम्हारे मन की स्थिति भी ऐसी ही है। बाहरी परिस्थितियाँ तुम्हें अशांत करती हैं, परंतु तुम्हारे भीतर शांति का स्रोत है। उसे खोजो और स्थिर रहो।"

इस शिक्षा के बाद, छात्र ने ध्यान और आत्मचिंतन से अपने भीतर की शांति पाई और हर परिस्थिति में संतुलित रहना सीख लिया।

❑❑

लक्षिता /उम्र 10 /कक्षा 6

डॉ. सुनील शर्मा
गुरुग्राम, हरियाणा

आतंकी का हश्र

आतंकवादी आतंक पढ़ा
आतंक की भाषा समझता है
उसको नहीं परिणाम भान
बस आदेशों पर चलता है
कुछ धन का लालच पाकर
कुछ मजहब का चश्मा चढ़ा
मन में बस इक उद्देश्य लिए
मति भ्रमित सा वह आगे बढ़ा
बस करना है और मरना है
इसके सिवा नहीं सोच कोई
इतनी नफरत मन में भर दी
कि मानवता का बोध नहीं
वह तीर कमान से छूटा सा
जो वापिस लौट नहीं सकता
असफलता सफलता एक सी हैं
अब और कुछ सोच नहीं सकता
ना मां कोई, ना बाप कोई
रिश्तों से दूर निकल आया
सीमा के पार जो हैंडलर है
वह ही है उसका हमसाया
इक बटन दबा चिथड़े–चिथड़े
कोई यहां गिरा कोई वहां गिरा
क्षत–विक्षत पड़ा शरीर उसका
पहचान नहीं, यहां कौन पड़ा
शव तक लेने कोई न आया
गुमनाम जिया , गुमनाम मरा
ऐसा जीवन, ऐसी मत्यु
जैसे धरती पर कोई भार पड़ा
आंतक से किसने क्या पाया
दहशत के फंदे डाल रहे
उन सांपों ने ही डसा उन्हें
जो घर में पाल रहे
किस बात का गर्व, कैसी कुर्बानी
कैसी जन्नत, कैसा सुकून मिला
दहशत फैलाने की खातिर
एक दिया व्यर्थ धुएं सा जला

❑❑

रेणुका /उम्र 10/कक्षा 6

कुमार सुबोध
ग्रेटर नोएडा वेस्ट

बेकाबू माहौल

वर्ष 2000 के दिनों की बात है। मैं बैंक की अहमदाबाद शाखा में नियुक्त था। उन्हीं दिनों वित्तीय क्षेत्र में निजी कंपनियों द्वारा जनता से पैसा जुटाने की बाढ़–सी आ गई थी।

पुराने नियमों के तहत कंपनियां जनता से पैसा जुटाने के लिए पब्लिक इश्यू लेकर आती थी, जिसमें दिए जाने वाले शेयर पत्रों की कीमत पहले से तय होती थी। अर्थात् कंपनियां अपने शेयर धारकों को शेयर उसकी मूल प्राइस अथवा उसके ऊपर एक तय प्रिमियम पर अथवा मूल प्राइस से कुछ तय डिस्काउंट या रिआयत पर जारी करती थी। अब इन नियमों में संशोधन कर दिया गया था।

नए नियमों के तहत कंपनियां अब अपना पब्लिक इश्यू बुक बिल्डिंग अर्थात् जनता द्वारा लगाई गई बोली प्राइस के माध्यम से लेकर आ सकती थी। इसमें वह बाजार में अपनी साख के मुताबिक मूल प्राइस पर भारी भरकम प्रिमियम चार्ज कर सकती थी। इस श्रेणी में आने वाला सबसे पहला पब्लिक इश्यू था – ''सिनेविस्ता कम्यूनिकेशंस लिमिटेड''। इसके दस रूपए के एक शेयर की बोली का प्राइस बैंड ₹ 300/– रखा गया था।

लोगों में उसका शेयर पाने के लिए किस कद्र पागलपन था, उसे शब्दों में बयां कर पाना संभव नहीं था। मेरे बैंक की शाखा में भी इसके फार्म जमा हो रहे थे। आखिरी दिन आ गया था। शाखा खुलने से पहले ही लोग बहुत बड़ी संख्या में बाहर आ खड़े हो गए थे। शाखा खुलते ही लोगों ने 'पहले मैं' के चक्कर में आपस में धक्का–मुक्की शुरू हो गई थी।

धीरे–धीरे यह आपसी झगड़े में तब्दील होती दिखाई दे रही थी। सो, व्यवस्था बनाए रखने के लिए कुछ देर को फार्म जमा लेने की प्रक्रिया रोक दी गई थी। शाखा के दोनों ओर के दरवाजे बंद करा दिए गए थे।

इसे देखकर लोगों की भीड़ उग्र हो गई थी। उन्होंने जहां एक ओर, शीशे की खिड़कियों और दरवाजों के शीशे तोड़ दिए थे, वहीं दूसरी ओर, दरवाजों को अपने जोर से धकेलकर तोड़ने पर आमादा हो गए थे। यह पागलपन नहीं तो ओर क्या था?

तुरंत नजदीक की पुलिस चौकी को सूचित कर बुलाया गया था। पुलिस बल ने पहुंचते ही पहले प्यार से समझाकर उन्हें शांति बनाए रखने की अपील की थी, किंतु यह प्रयास फलीभूत नहीं हुआ था। अब भीड़ पुलिसकर्मियों से बदतमीजी और धक्का–मुक्की करने लगी थी। लिहाजा, उन्होंने काबू करने और किसी अनहोनी या अप्रिय घटना होने को रोकने के लिए भीड़ पर लाठीचार्ज करना शुरू किया था। शांत होने के बजाए उन्होंने पुलिसकर्मियों पर ही उलटे धावा बोलना शुरू कर दिया था। भीड़ की संख्या ज्यादा थी और पुलिसकर्मी कम संख्या में थे। स्थिति काबू में ना आते देख और उलटे कहीं काबू से बाहर भीड़ द्वारा कुछ अनहोनी घटित कर दी गई, तो लेने के देने पड़ जाएंगे। जवाब देना भी मुश्किल हो जाएगा। इसलिए उन्होंने वहां से बेरंग वापिस लौटना ही उचित समझा था।

बैंक के लिए स्थिति ज्यों की त्यों बनी हुई थी। भीड़ दरवाजों को अपने जोर से धकेलकर तोड़ने पर आमादा हो गई थी। मेरे सहित शाखा के कुछ लोग मैनेजर के केबिन में बैठकर परिस्थितियों का आंकलन कर कुछ हल निकालने में जुटे थे। किसी को कुछ समझ नहीं आ रहा था। किंकर्तव्यविमूढ़ से सभी एक–दूसरे के अंतर्मन के भावों को जानने की कोशिश में लगे थे। कोई भी साथी ठोस हल के विचार के साथ सामने नहीं आ रहा था। लग रहा था कि 'यदि बली का बकरा बने, तो कोई दूसरा ही बने। क्रेडिट मिलेगा, तो सब ले लेंगे'। तभी ग्राहकों द्वारा बैंक में जमा किए गए चौकों को रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया में क्लीयरिंग के लिए जमा करने का समय हो गया था। यदि नहीं जा पाए, तो इन चौकों का क्लीयरिंग के माध्यम से समाधान नहीं होगा, तो ग्राहकों को जवाब देना भी मुश्किल हो जाएगा। ऐसी पशोपेश की स्थिति को भांपते हुए मैं अचानक से उठ खड़ा हुआ था और उक्त साथी के साथ केबिन से बाहर निकलने लगा था। तभी पीछे से मैनजर ने पूछा था कि 'कहां जा रहे हो? बाहर जाना खतरनाक है'। 'अभी आता हूं' कहकर कर्मचारी को साथ लेकर पिछले दरवाजे की ओर बढ़ चला था।

दरवाजा भीड़ के धक्कों से आगे–पीछे झकोले खा रहा था और बैंक का सुरक्षाकर्मी असहाय–सा मेरी ओर देख रहा था। तभी मैंने उसे और क्लीयरिंग लेकर जाने वाले साथी को बाहर जाने और भीड़ को अंदर आने से रोकने को तैयार रहने को कह दरवाजा खोलने को आदेश दिया था। जरा–सा दरवाजा खुलते ही मैं स्वयं भीड़ को अंदर आने से रोकने के लिए बीच दरवाजे में अड़ के खड़ा हो गया था। पीछे से साथी को बाहर निकाला था और फिर स्वयं आगे बढ़ सुरक्षाकर्मी को दरवाजा तुरंत बंद कर लेने का आदेश देकर बाहर निकल गया था।

मुझे बाहर आया देख भीड़ ने मुझे चारों तरफ से घेर लिया था। सवालों की बौछार शुरू कर दी थी। कुछ तो धमकी भरे अंदाज में कह रहे थे कि 'यदि हमारी एप्लीकेशन जमा नहीं ली गई, तो हम बैंक का वो बुरा हाल करेंगें, जो आप सोच भी नहीं सकते।' ऐसे माहौल में कोई भी मुझ पर हमला भी कर सकता था। तभी मैंने सख्ती से पेश आते हुए ऐसे गुमानी लोगों को स्पष्ट रूप से कह दिया था कि ''यदि आप लोग ऐसा व्यवहार करते रहेंगे, तो किसी की भी एप्लीकेशन नहीं ली जाएगी और आप सभी को मुंह की खा के हाथ मलते हुए वापिस लौटना पड़ेगा। यदि आप सभी मेरी बात ध्यान से सुनेंगे, मानेंगे और अनुशासित रह शांतिपूर्ण तरीके से अमल करेंगें, तो आप सभी की एप्लीकेशन जमा ली –

जायेगी, भले ही कितनी देर क्यों ना लग जाए''।

उसी भीड़ में से कुछ समझदार लोग तुरंत सामने आकर उल्टी–पुल्टी बातें करने वालो को चुप करा मेरी बात पर अमल करने को कह रहे थे। दरअसल, हमारी शाखा एक ड्रामा थियेटर की भूतल पर स्थित थी, जिसका अहाता काफी लंबा–चौड़ा था, जिसमें उस दिन लगभग कई हजार लोग एप्लीकेशन जमा करने के लिए इकट्ठे आ खड़े हुए थे। तभी मैंने ऐलान किया था कि आप सभी को यह अहाता तुरंत खाली करके अगले दरवाजे पर पंक्तिबद्ध होकर अनुशासित तरीके से अपनी–अपनी एप्लिकेशन जमा देने के लिए शांति से अंदर आना होगा।

देखते–ही–देखते लोग अहाता खाली कर प्रमु ख द्वार पर अपनी एप्लीकेशन जमा करने के लिए पंक्तिबद्ध होकर सलीके से पेश आ रहे थे। बैंक ने भी तुरंत जमा कराने के लिए 12 काउंटर की व्यवस्था कर बिना किसी पूर्वाग्रह की स्थिति का संज्ञान लेते हुए संयम और धैर्य के साथ उनकी एप्लीकेशन जमा लेना आरम्भ कर दिया था। लगभग शाम 6 बजे तक सभी लोग जमा देकर अपने–अपने घरों को लौट चुके थे। इसके बाद भी जो कोई इक्का–दुक्का आता गया था, उनकी भी 7 बजे तक इंतजार कर जमा ले ली गई थी।

मैंनेजर सहित बैंक के सारे साथी हतप्रभ से मुझे देख रहे थे। उन्हें यह विश्वास ही नहीं हो पा रहा था कि ऐसी विकट परिस्थितियां उत्पन्न होने के पश्चात् भी इतना मुश्किल दिखाई दे रहा कार्य इतनी सरलता से ब खूबी सम्पन्न कैसे हो गया था।

अगले दिन, सुबह के समाचार पत्रों में इस एपिसोड की वृहद रिपोर्टिंग चित्र सहित विस्तृत ले ख के साथ छपी थी। उल्लेख किया गया था कि जिस भीड़ को लाठीचार्ज के बावजूद पुलिस कंट्रोल नहीं कर पाई थी, उसे बिना किसी डंडे या हथियार के एक बैंक अधिकारी ने सफलतापूर्वक संभालकर अनुशासित किया था। साथ ही, उन सभी के कार्यों को पूर्णरूपेण संतुष्टि के साथ पूरा कर दिखाया था। शाखा खुलते ही पुलिस चौकी के अधिकारी भी अपनी सहृदयता पूर्ण भावनाएं प्रकट करने उपस्थित होकर इस अभूतपूर्व कार्य को अनुशासन के साथ दृढ़तापूर्वक पूरा करने के लिए भूरी–भूरी प्रशंसा कर रहे थे और हमारे द्वारा छोड़े गए अधूरे कार्य को भी सफलतापूर्वक परिपूर्ण करने के मेरे प्रति अपना धन्यवाद और आभार ज्ञापित कर रहे थे।

दरअसल, यहां यह संज्ञान में लाना आवश्यक है कि अहमदाबाद शेयरों की सट्टेबाजी का बहुत ही बड़ा बाजार है। वहां लोग जरूरत से ज्यादा लंबे और मोटे सौदेबाजी करने वाले हैं। इसलिए पब्लिक इश्यू के दौरान ऐसे पागलपन की घटनाएं और परिस्थितियां अक्सर परिलक्षित होती रहती हैं। आज भी ऐसी ही स्थिति यथावत है और कोई बदलाव ना ही हुआ है और भविष्य में ना होगा।

❑❑

डॉ. कविता मल्होत्रा
दिल्ली

गलत मैं ही था

जो भी रिश्तेदार आता है दीदी को पैसे देकर जाता है मेरे सर पर हमेशा खाली हाथ फिराकर चला जाता है।मुझे क्या कचरे के डब्बे से उठाकर लाए थे,मुझसे हर काम करवाते रहते हो और दीदी को कुछ भी करने नहीं देते, मैं आपका सौतेला बेटा हूँ क्या? जिसे देखो बेटी पढ़ाओ बेटी बचाओ के नारे लगाता रहता है, बेटे क्या सिर्फ घर और बाहर का काम करने के लिए दुनिया में आते हैं।खुशी और सुकून के पल क्या उनकी तकदीर में ही नहीं हैं।

मैं बेटे को दिलासा दिया करता था कि तुम जिस खुशी के पीछे भाग रहे हो न वो एक दिन खुद तुम्हारे पास आएगी। खुशियाँ तो बाँटने से बढ़ती हैं।तुम पढ़ लिख कर अच्छे नागरिक बनोगे, अच्छी पदवी पर काम करोगे, तो खुशियाँ तुम्हारे आगे–पीछे घूमेंगीं। लेकिन बेटे का गुस्सा हर दिन–त्योहार पर सर चढ़ कर बोलता रहा। मुझे हमेशा यही लगता था कि बेटी तो पराए घर चली जाएगी, इसलिए उसे कुछ मीठी यादें एकत्रित करने का भरपूर मौका दूँ। बेटे का क्या है उसे तो किसी चीज की कमी वैसे ही नहीं आएगी, क्यूँकि बेटे को मैंने शिक्षा और संस्कारों की पूँजी से गढ़ने में कोई कसर नहीं छोड़ी थी। अपने बड़ों से हमेशा यही सीखा और अपने छोटों को यही सिखाया भी, कि सफल और आनंदमय जीवन का आधार जीवन मूल्य ही होते हैं।

आज बेटी उच्च शिक्षा पाकर ऊँची पदवी पर कार्यरत तो है लेकिन शादी के बाद अपने परिवार में सामंजस्य नहीं बैठा पाई और तलाक लेना चाहती है, क्योंकि जो आराम उसे मायके में मिल रहा था वो ससुराल में नहीं मिला, बल्कि वहाँ तो सबको उससे बहुत सी अपेक्षाएँ थीं।रही बात आई ए एस बेटे की जिसे रूतबे और पैसे के साथ ऐश ओ आराम की जिंदगी बितानी चाहिए थी, उसे आई ए एस जीवन संगिनी एकल परिवार की खुशियों पाने की शर्त पर अपने साथ ले गई।जाहिर सी बात है, बेटे की खुशी में मैं कोई बाधा नहीं बनना चाहता था, इसलिए उसे रोका तो नहीं लेकिन बेटे की खामोशी और नम आँखों ने मुझे ये सोचने पर मजबूर कर दिया, कि भले ही आज हम सब शिक्षित होने का दावा करते हैं लेकिन अभी हम सबको ये सीखना है, कि हमें पढ़ना क्या है और अप. नी बेटियों को पढ़ाना क्या है।

आज सब कुछ होते हुए भी, मैं न तो अपनी बेटी को खुशी दे पाया, न ही अपने बेटे को, शायद गलत मैं ही था।

❑❑

धानी गुप्ता
ऑस्ट्रेलिया

प्रेम जनमेजय
नई दिल्ली

स्वर्ग के शौचालय में हिंदी

उत्कृष्ट रचनाकार भारतेंदु ने 'स्वर्ग में विचार सभा का आयोजन' लिखा था और निकृष्ट कोटि का रचनाकार मैं, जनमेजय ' स्वर्ग के शौचालय में हिंदी ' लिखता हूं। शौचालय के नाम पर नाक पर रुमाल मत लाएं। आज के शौचालय कम से कम भारतीय राजनीति से कम दुर्गंध छोड़ते हैं। शौचालय अध्ययन –कक्ष हो गए हैं। कंबोड पर बैठकर हर भाषा का अध्ययन होता है तो बेचारी हिंदी का क्या कसूर की उसका न हो! हिंदी को पिछड़ा मत करें, उसे आरक्षण की आवश्यक्ता नहीं है, उसे आधुनिक करें। और मैं तो विदेशी धरती के स्वर्ग में स्थित एक शौचालय में, हिंदी के सम्मान पर प्रकाश डाल रहा हूं, अंधेरा नहीं।

हुआ यूं कि..।

पत्नी ने मुझसे, मंत्रीमंडल में स्थान कब मिलेगा टाईप, जिज्ञासा व्यक्त की – कब ले जा रहे हो धरती पर स्वर्ग दिखानें ?'

वैसे तो भव सागर पार करते ही जीव स्वर्गवासी हो जाता है। पर मेरी पत्नी बिना भवसागर पार किए धरती पर स्वर्ग देखना चाहती थी।

मेरी पत्नी टू इन वन है– एकमात्र पत्नी और प्रेयसी। वह इस चतुराई से अपनी भूमिका बदलती है कि मुझे पता ही नहीं चलता कि कब वह प्रेमिका है और कब पत्नी। जैसे आपको पता नहीं चलता कि आपकी झोपड़ी में, आप ही की थाली में खाने वाला कब उसमें छेद कर देता और आपका बहुमूल्य वोट उसकी जेब में चला जाता है। आप किसान बन जाते हैं।

मैंने कहा – डर डर के स्वर्ग देखने में क्या आंनद! जब भी कश्मीर जाने की सोचते हैं स्वर्ग में कर्फ्यू लग जाता है।

''तो विदेश वाला स्वर्ग दिखा दो। शर्माईन स्वीट्ज़रलैंड हो कर आई है।

''शर्मा कस्टम में काम करता है और मैं हूं एक खालिस मास्टर। मेरी औकात नहीं है।''

''औकात तो बनानी पड़ती है, बैंक से लोन ले लो। वो तो उधार देने को उधार खाए बैठे हैं।

'' मैं कोई माल्या नहीं हूं ...''

''गरीबो को घर के लिए बैंक उधर देता है।''

''यह बेईमानी होगी।''

''बिना बेईमानी के औकात नहीं बनती, और तुम मेरी इतनी–सी इच्छा ...''

इतनी सी इच्छा के लिए मैंने बैंक लोन की प्रक्रिया निभाई और प्रेयसी ने शर्माईन से स्विटजरलैंड के क्रैश कोर्स की।

पत्नी बोली – पहले हम माउंट टिटलिस चलेंगें।

''वहां क्या खास है ?''

''दस हजार फुट की ऊंचाई पर दिल वाले दुलहनिया ले जाएगी की शूटिंग हुई थीं। शाहरुख और काजोल का कट आउट है। हम दोनों वहां पोज बनाकर फोटो खिचवाएंगे...'' उसने मेरी आंखों में प्रेयसी बन झांका और कंधे पर सर रख दिया। मैंने पति बन झटका और बोला –तुम धरती पर स्वर्ग देखना चाहती हो या स्वर्ग में दिलवाले ... तुम स्विटजरलैंड जाना चाहती हो या मुंब. ईलैंड...

''वो सब कुछ नहीं, जो मैं कहूंगी वही होगा।''

हुआ भी वही। मेरे पास स्विस बैंक में एकाउंट तो नहीं है पर मेरे पास स्विस रेल पास था। हम सबसे पहले माउंट टिटलिस पहुंचे। मेरी प्रेयसी ने वह सब कुछ किया जिसकी ट्रेनिंग वह शर्माईन से लेकर आई थी।

उसने ट्रेनिंग ली थी इसलिए उसे चारों ओर स्वर्ग दिखाई दे रहा था। मैंने बैंक से लोन लिया था, मुझे स्वर्ग के साथ नर्क भी दिखाई दे रहा था।

बढ़ती ठंड ने विवश किया कि हम दस हजार फीट पर शौचालय का प्रयोग करें। पत्नी प्रयोग कर बाहर आई तो उसके चेहरे पर संतोष नहीं कुटिल मुस्कान थी। मैंने जिज्ञासा प्रकट की तो बोली– अंदर जाओ, खुद देख लो कि संडास में तुम्हारी हिंदी...

मैं देखकर आया, बोला ' वर्तनी की भयंकर अशुद्धि है– शौचालय को शोचालय लिखा है। पर दस हजार फीट पर स्वर्ग जैसी विदेशी धरती पर हिंदी, गर्व होता है..

''विदेशी संडास में हिंदी को देखकर गर्व हो रहा है।''

''क्या संडास संडास कह रही हो... संस्कृत की हो, संभ्रांत शब्द का प्रयोग करो। ''

' 'मानते हो न कि संस्कृत हिंदी से अधिक संभ्रांत है।''

''मानता हूं मेरी मां, मानता हूं।''

''मैं तुम्हारी पत्नी और प्रेयसी हूं, मां नहीं ...''

''सांसारिक रिश्ते में पत्नी हो पर भाषाई रिश्ते में मां हो। संस्कृत हिंदी की मां ही है ....''–

''मैं कुछ भी हूं यहां तुम्हारी हिंदी शौचालय में है।''

''वर्तनी की एक भूल क्या हो गई... शौचालय को शोचालय लिख दिया तो तुमने हिंदी को शौचालय में बैठा दिया।''

''हिंदी के मास्टर हो न, वर्तनी पर गए, मूल चिंता पर नहीं। यह पूरी भारतीय मानसिकता पर चोट है। ध्यान से पढ़ा, क्या लिखा है? लिखा है– कृपया एक स्वच्छ हालत में शोचालय छोड़ें।' तुम्ह. यहां पूरे टिटलिस में कहीं और हिंदी दिखाई दी ? कहीं स्वागत लिखा दिखा। दिल वाले दुलहनियां भी रोमन में लिखा है। स्विटजरलैंड में जर्मन, फ्रेंच, इटेलियन और रोमांश राष्ट्रीय भाषाएं हैं, इनमें से किसी में लिखा है?''

मैंने व्यंग्य करते हुए कहा – आंख की अंधी नाम की नयनसुख, वहां अंग्रेजी में भी लिखा है – प्लीज लीव दी टॉयलेट इन ए क्लीन कंडीशन। मतलब ...''

पत्नी ने व्यंग्योत्तर देते हुए कहा – मतलब यह कि कोल्हू के बैल,वे जानते हैं कि गैर हिंदी वाले भारतीयों की 'मातृभाषा' अंग्रेजी है। वैसे भी हिंदी वाला विदेश में कब्जीयुक्त अंग्रेजी बोलना सम्मानजनक समझता है। यहां सीधे–सीधे अंग्रेजी और हिंदी में समझाया गया है कि तुम गंदगी फैलाऊ हो, अपनी गंदगी कृपया यहां न बिखेरना। कंबोट में बैठने का तरीका भी हिंदी और अंग्रेजी में लिखा है।''

तभी बर्फ गिरने लगी। मैंने प्रार्थना की कि किसी तरह इतनी बर्फ पड़े कि शौचालय उसमें दब कर खो जाए।पर जहां बर्फ नहीं पड़ती और वहां ऐसा शौचालय हुआ तो...! मैं सोच में पड़ गया और पत्नी प्रेयसी बन बर्फ के गोले मुझ पर दागने लगी।

❑❑

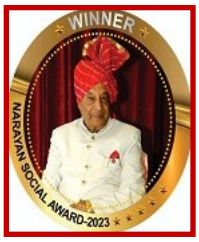

डॉ. बनवारीलाल
जाजोदिया
"यथार्थ"
इंदौर

नारी तुम बन जाओ सबला

यह हकीकत है,
प्रभु को जो घर पसंद आए,
वहां जन्म लेती है बेटियां,
हरेक के नसीब में कहां,
लिखी होती है बेटियां,,
जब तक बड़ी नहीं होती
घर को सर पर
उठाकर रखती बेटियां,
डरती थी खूब मां बाप भाई से,
जब बड़ी हो जाती थी बेटियां,
हवा बदली, जमाने के ढंग बदले,
अब खूब डराकर रखती है बेटियां,
क्षणिक सुख की खातिर,,
बूढ़े मां बाप को
लजाती फिरती बेटियां,
गैर आशिक के बहकावे मैं आकर,
फ्रिज,कुकर में पक जाती बेटियां,
न जाने क्यों निशक्त हो गई,
दुर्गा कहलाती थी जो बेटियां,
त्रिशूल,कृपाण उठाओ हाथो में,
दो मुक्का,बतिशी बाहर आ जाएं,
गिरेबान पकड़ थाने में
जमा करो तुम बेटियां,
बनो रण्डचंडी,हिम्मत किस की
जो छुए भी तुम्हें
हाथ तोड़ दो उसका,
मां बाप के दुःख को समझो,
क्यों इतनी कमजोर हमारी बेटियां,
छोड़ो लव जिहाद,
लव इन रिलेशन शिप,
लज्जा आती,शर्म से झुक जाता सर,
अब वक्त आ गया,
जब मां बाप कहे मेरा गौरव मेरी
बेटियां,
बंध जाओ सात फेरों के बंधन में,,
दोनों कुल की लाज रखो,
जिस खातिर आई तुम इस दुनिया में,
भारत मां की शान हो तुम,,
मत पड़ो मत पड़ो मत पड़ो,
धर्म परिवर्तन के चक्कर में

❑❑

ओमप्रकाश प्रजापति
'ओम'

माता पिता

इस जीवन के हर पथ पर पिता हैं मेरे संग
मेरे ऊपर उनका ही चढ़ा हुआ है रंग।

मात पिता के दम पर ही मेरी है पहचान
इस जीवन में मेरे तो वो ही हैं भगवान।

मेरे मन के मंदिर में बसा पिता का रूपए
मेरे चेहरे पर उनका दिखता है स्वरूप।

करते हैं मां बाप तो बच्चों का उद्धार
उन जैसा करता नहीं कोई भी उपकार।

मात पिता की खातिर हम रखे अपना प्यार
उनसे हम हरदम रखें अच्छा बस व्यवहार।

साथ पिता के रह कर ही आया है विश्वास
वो कब मुझसे दूर थे वो हैं हरदम पास।

❑❑

अंशुल
कक्षा 6 / उम्र 10 वर्ष
महात्मा गांधी राजकीय
विद्यालय दादर , अलवर
(राजस्थान), भारत

हमकों पेन दिला दो

मम्मी –मम्मी पेन दिला दो
अच्छी मम्मी पैन दिला दो

ना ही हमको स्कूल जाना
ना ही हमको खाना खाना

स्कूल से नाम कटा दो
या फिर हमकों पेन दिला दो

❑❑

कविता गुप्ता

यादों से बातें

तेरी यादों की चौखट पर
हर रोज जियारत करती हूँ
मन में मिश्री सी बातों की
हर रोज हिफाजत करती हूँ

तेरे काले काले नैनों में
खुद को मैं ढूंढा करती हूँ
तुझको तकने की खातिर
आँखों को मूंदा करती हूँ

कोरे पन्ने को रोज तेरी
यादों से काला करती हूँ
बैठ अँधेरी रातों में
चिंतन को टाला करती हूँ

भरी दोपहरी में तेरी
अचकन पर छाया करती हूँ
तेरी बातों में खुद की
बातों को मैं पाया करती हूँ

तेरी बचकानी बातों को
बिन बात मैं सोचा करती हूँ
क्या मतलब है इसका
खुद से ही पूछा करती हूँ

सोच सोच तेरे बारे में
अश्रु से बातें करती हूँ
कहीं अकेले बैठ कभी
बस तुझको ही सोचा करती हूँ

तेरी हर कहानी सुन मैं
यूं ही मुस्काया करती हूँ
दूर कहीं ना जाओ तुम
यूँ ही घबराया करती हूँ

तेरी यादों की चौखट पर
हर रोज जियारत करती हूँ
मन में मिश्री सी बातों की
हर रोज हिफाजत करती हूँ

❑❑

डॉ नीरजा मेहता "कमलिनी"
गाजियाबाद

खाली वॉलेट

"और बेस्ट गायक का ये अवार्ड जाता है सुरेश कपूर को ''

तालियों की गड़गड़ाहट की जगह लोग एक–दूसरे को आश्चर्य से देखने लगे तभी संचालक की आवाज गूँजी ''जोरदार तालियों के साथ सुरेश जी का स्वागत किया जाये ''

तालियाँ बजीं पर उनमें वो उत्साह और खुशी नहीं थी। एक ऐसा गायक जिसको न सुर की समझ, न आवाज में खनक, उसको अवार्ड वो भी बेस्ट गायक का। सबकी आश्चर्य मिश्रित निगाहें रोशन की ओर गईं जिसको गायन में अधिक वक्त तो नहीं हुआ था पर उसकी आवाज के लोग दीवाने थे।

सुरेश को अवार्ड लेते देख रोशन अपनी जेब से खाली वॉलेट निकालकर माँ की तस्वीर देखता रहा।

❑❑

गुरबानी कौर बिंद्रा
कक्षा 9वीं
उम्र 14 साल
एंजल्स वैली स्कूल
राजपुरा पंजाब

सुखमिला अग्रवाल भूमिजा
जयपुर राजस्थान

दहेज

पंडित जी लग्न पत्रिका लिख रहे थे। घर का आँगन मेहमानों से भरा था। सभी लड़के वालों की तारीफ कर रहे थे। स्वयं लड़की के पापा,आई आई टी इंजीनियर विनय अग्रवाल पढ़े लिखे एवं सुलझे हुए विचारों के व्यक्ति हैं । वे आज अच्छे घर में बिटिया का रिश्ता तय करके फूले नहीं समा रहे थे। लड़के वालों ने कुछ भी माँग नहीं रखी थी। बस यही कहा था कि आप जैसा उचित समझें, वैसे ही साधारण सा आयोजन रखें। तब लड़की पक्ष ने बहुत खुशी खुशी लग्न पत्रिका लड़के वालों के घर भिजवा दी, और सगाई व शादी का न्यौता भी।

आज सगाई का दिन आ ही गया। हँसी खुशी से सगाई व संगीत का कार्यक्रम सम्पन्न हो गया।

विनोद जी सोचने लगे, कुछ दिन बाद ही शादी का महूर्त निकला है, सो अब जल्द से जल्द शादी की तैयारियों में जुटना होगा। वो मन ही मन हिसाब किताब करने लगे।

सगाई में आये लोकल मेहमानों ने विदा ली। लड़के वाले भी अपने अपने कमरों में चले गये।
विनोद जी पिछले कई दिनों से अत्यधिक व्यस्तता के चलते आराम नहीं कर पाये,सो थकान सी लगने के कारण अपने कमरे में आ लम्बी साँस भर आँखें बंद कर बैठ गये।

अचानक बैल् बजने से तंद्रा भंग हुई, दरवाजा खोला, सामने समधी जी को देख कुछ संयत हो बोले ," आईये, आइये समधी जी"
समधी जी का मृदु व्यवहार विनोद जी को सदा ही आकर्षित करता था। किंतु आज विनोद जी का दिल आशंकाओं से भर गया समधी जी इस समय क्या बात करने आये होंगे।

समधी जी ने विनोद जी की ओर देख कहा,"क्या बात है,आप चिंतित लग रहे हैं..?"
फिर बोलना शुरू किया,"देखिये"!!

इस एक शब्द ने ही विनोद जी के मन मष्तिष्क में भूचाल ला दिया, आशंकित हृदय दुगुनी गति से धड़कने लगा।

समधी जी ने फिर कहा,"देखिये, अब आप और हम एक ही परिवार हैं, आपकी इज्जत हमारी इज्जत है।

मुझे पता चल गया आपने बिटिया की शादी के लिये कर्जा लिया है। इसलिये सब काम छोड़कर आपसे मिलने आना पड़ा। मैंने फैसला किया है कि शादी का खर्च आधा–आधा होगा,आधा खर्चा मैं उठाउँगा। और वैसे भी आप क्यों पूरा खर्च उठायेंगे।भई हमारे बेटे की भी तो शादी है। फिर आप तो जो हमें दे रहे हो, उसका कोई मोल हो ही नहीं सकता। मैं सदैव आपका आभारी रहूंगा। आप हमें उत्तम, संस्कारवान,पढ़ी लिखी, सुन्दर बेटी दे रहें है,और हमें क्या चाहिये। आपसे सम्बंध जोड़कर मैं व मेरा परिवार धन्य हो गया है "।

फिर विनोद जी की ओर हाथ जोड़कर मजाकिया अंदाज में बोले, "क्यों जी समधी जी, हमें जो दहेज चाहिये वो आप देंगे ना"!!

❑❑

नैतिक

मोनिका नूर
पानीपत, भारत

इंतजार

स्कूल में नौकरी करते हुए प्रेमलता को लगभग 30 साल हो चुके थे और प्रिंसिपल के पद पर 12 साल बहुत जिम्मेवारी का काम था । चार दिन बाद प्रेमलता की रिटायरमेंटंट थी । आज उसके स्कूल में इंस्पेक्शन थी और उसे लग रहा था यह आखिरी जिम्मेवारी भी ठीक से निभा लूं । वह जल्दबाजी में तैयार हो रही थी कि कहीं लेट ना हो जाए । आज सुबह ही मोटर में पानी खत्म हो गया और दूध वाला भी नहीं आया । यह परेशानियां भी साथ–साथ चल रही थी । जल्दी से प्रेमलता ने सामान समेटा और अपने कागज इकठठे किए और ताला मार कर स्कूल के लिए रवाना हो गई । रास्ते में उसे याद आया की उसके घर में जो कबूतरों का जोड़ा है उनको वह दाना डालना भूल गई और यह प्रेमलता की दिनचर्या का एक जरूरी हिस्सा था । प्रेमलता ने तुरंत अपनी गाड़ी मोड़ी और घर की तरफ वापस चल पड़ी। हालांकि उसको बहुत देर हो रही थी फिर भी वह तुरंत अंदर आई और उसने फटाफट कबूतरों का दाना बर्तन में डाला और उनको दाना देने के लिए पीछे आंगन में गई कबूतर तो अपने नाश्ते का इंतजार कर रहे थे । जैसे ही वह मुड़ने लगी , एक कबूतर की बीट उसके कंधे के ऊपर ठप्प से गिरी । प्रेमलता को पहले ही देर हो चुकी थी । वह गुस्से से भर गई और उसने डंडा उठाया और और कबूतरों को बोली भाग जाओ, यहां से निकाल जाओ, तुम्हारी वजह से मैं हमेशा परेशान होती हूं सारा दिन तुम बीट करते रहते हो मैं तुम्हारा गंद साफ करती रहती हूं । तुम्हें खाना खिलाओ और तुम मेरा ही घर गंदा करते हो और क्या तुम्हें पता नहीं है आज की मुझे देर हो रही थी और प्रेमलता ने फटाफट से अपने कपड़े बदले गाड़ी में बैठी देर तो उसको हो ही चुकी थी और स्कूल पहुंच गई । शाम को जब प्रेमलता घर पहुंची तो वह बहुत थक चुकी थी । अचानक उसे सुबह की बात ध्यान आई और पानी का कटोरा लेकर पीछे आंगन में गई तो देखा दोनों कबूतर वहां नहीं थे उसके माथे पर थोड़ी सी शिकन आई। शाम को चाय पीते समय उसको कबूतरों का ही ध्यान आ रहा था चाय सामने ठंडी होती रही और उसका चाय पीने का मन ही नहीं किया । फोन उठाया की बेटे से बात कर लूं बेटे के फोन पर रिंग जाती रही पर उसने फोन उठाया ही नहीं फिर बेटी को कॉल लगाया तो उसने भी मां को झिड़क दिया मम्मी आप कभी भी फोन कर देती हो आपको पता है ना मैं मीटिंग में होती हूं और बिजी होती हूं प्लीज मुझे रात को 10:00 के बाद कॉल किया करो और बेटी ने तुरंत फोन काट दिया । प्रेमलता को लगा जैसे उसका मन डूब रहा है । सॉरी करके उसने फोन रख दिया । रात हो गई खिड़की बाहर झांका पर आंगन में कबूतरों का जोड़ा दिखाई नहीं दिया प्रेमलता ने खाना भी नहीं खाया और उदास मन से सो गई । सुबह उठकर उसने बेटे को दोबारा फोन लगाया तो लाइन लगातार बिजी जा रही थी तीन चार बार फोन किया पर कोई भी रिस्पांस नहीं आया , आंखों से आंसू की दो बूंदे निकाल पड़ी । इन्हीं बच्चों को बाहर भेजने के लिए उसने अपना सारा पी एफ का पैसा बिना किसी ख्याल के 1 मिनट में निकलवा कर दे दिया था । आज उन्हीं बच्चों के पास उसके लिए समय ही नहीं था । पति को गए हुए कई साल हो चुके थे । इस अकेलेपन में वह कबूतरों का जोड़ा ही था जो रोज प्रेमलता को यह एहसास दिलाता था की कोई हो ना हो, कोई रहे ना रहे हम तुम्हारे साथ रहेंगे । वह बाहर जाकर कबूतरों को बुलाती रही बाहर कोई कबूतर नहीं था । उसे लगा जैसे इतनी बड़ी दुनिया में भीड़ बहुत है पर वह बिलकुल अकेली है । बच्चों के पास उसके लिए बिल्कुल समय नहीं था । इस अकेलेपन में यह कबूतरों का जोड़ा ही था जो उसका मन बहलाये रखता था और आखिर वह दिन भी आ गया जब प्रेमलता कि रिटायरमेंटंट थी । सब लोग उसे घर छोड़ने आएऔर जब उनके जाने के बाद उसने दरवाजा बंद किया तो वह भर भरा कर रो पड़ी । तभी अचानक आंगन से कबूतरों की आवाज आई गुटर गूं गुटर गूं । प्रेमलता जैसे ऊर्जा से भर गई तुरंत भागती हुई पीछे आंगन में गई दोनों कबूतर उसके कंधे पर आकर बैठ गए । उसको लगा जैसे मानों दुनिया का सारा दुलार उसे मिल गया । आंगन में आराम कुर्सी पड़ी थी जहां बैठकर वह कबूतरों से बातें करती थी उसने अपनी चाय बनाई दाना उठाया और उस आराम कुर्सी पर आंखें बंद कर कर बैठ गई । तभी बेटे का फोन बजा प्रेमलता ने फोन उठाया

उसने कहा मां खुशखबरी है तुम दादी बनने वाली हो अब तो तुम रिटायर हो गई हो अब जल्दी से हमारे पास आ जाओ बहुत काम है । आप साथ रहोगे तो बहुत सहायता हो जाएगी । उधर से कबूतरों की गुटर गूं गुटर गूं गुटर गूं की आवाज आ रही थी । एक प्रेमलता की गोदी में बैठा था और एक कंधे पर दोनों उसे प्यार से दुलार रहे थे । उसने झटके से फोन काट दिया । आंख बंद की और कुर्सी पर टेक लेकर पीछे बैठ गई फोन की घंटी फिर से बजी और बजती रही और वह गुनगुनाने लगी –

यह दुनिया चार दिन का फेरा ना कुछ तेरा है ना कुछ मेरा
तू जी ले हंस के चार दिन की है ये जिंदगी / अच्छे काम कर तूं , कर तूं उसकी बंदगी
और कबूतरों पर प्यार बरसाने लगी
आ आ आ आ आ आ
क्यों मैं रोऊं बेवजह यूं ही बेवजह

बेटे के फोन की घंटी बजती रही बजती रही बजती रही और प्रेमलता ने फोन नहीं उठाया ।

❑❑

ज्योत्स्ना गर्ग
पानीपत हरियाणा

माँ सिर्फ माँ

अवनि अस्पताल में आंखों में आंसू लिए बीते दिनों को याद कर रही थी। सच भगवान धरती पर स्वयं नहीं आते लेकिन उन्होंने अपने रूप में मां को धरती पर भेज दिया है।अभी तीन महीने पहले ही अचानक उठे सिर दर्द की पीड़ा से माँ चल बसी।उस पल उनके लिए कोई कुछ नहीं कर पाया। तभी भाग कर आती हुई नर्स ने अवनि के समीप आकर बोला, "शीघ्र चलें, आपकी बहन की हालत नाजुक है,वह बहुत बेचौन और तड़प रही है।"

अवनि जब तक कमरे में पहुंची, उसकी बहन कनिका को डाक्टर्स नींद का इंजैक्शन देकर उसे सुला चुके थे।

अवनि वहीं कनिका के पास बैठ कर उसके सिर पर हाथ फेरते हुए गहरी सोच में डूब गई।बचपन में उसकी छोटी बहन कनिका के नाक में मटर का दाना चला गया जो उसके दिमाग तक पहुंच गया। डाक्टरों की बहुत कोशिश के बावजूद भी वह नहीं निकला।धीरे–धीरे कनिका अपाहिज की स्थिति में आ गई।अब उसे अपने शरीर की कोई सुध बुध नहीं थी।उम्र के साथ उसकी ये हरकतें परिवार के लिए बर्दाश्त के बाहर थीं।माँ ने सेवा की जिम्मेदारी स्वयं पर ली।अब उन्होंने सब जगह आना जाना छोड़ दिया और ईश्वर के प्रति भक्ति और कनिका के प्रति अपनी सेवा बढ़ा दी।धीरे–धीरे कनिका ने जवानी में पैर रखा। उसकी सेवा में जुटी माँ कई–कई रातें सोती भी नहीं थी। मैं माँ की ऐसी हालत देखकर कई बार रो पड़ती थी और माँ से पूछती,"आप इतना कुछ कैसे कर लेती हो।" माँ मुझे कहती, "तुम सब मेरे जिगर के टुकड़े हो और तुम सबकी रक्षा और परवरिश करना मेरी जिम्मेदारी है।"

आज माँ हमारे बीच नहीं हैं।. इन तीन महीनों में कनिका की हालत बिगड़ती जा रही थी शायद वह हर पल माँ को ढूंढ रही थी।मैंने कई बार कनिका को रोते हुए देखा था। हम ने एक सहायिका भी रख ली थी।प. ंच दिनों से अस्पताल में भर्ती कराने के बाद भी उसकी हालत बिगड़ती जा रही थी। मैं बीती बातें सोचकर रोने लगी तभी पापा ने कमरे में प्रवेश किया और सिर पर हाथ फेरते हुए कहा "बेटी, यह तो तेरी माँ ही थी जिसने इतना कुछ सहते हुए सब संभाल लिया था। नमन है उस औरत को।" कहते हुए पापा की आंखें नम हो गई।सच माँ के बिना हम सबकी जिंदगी वीरान हो गई थी।

कनिका की तड़प देखी नहीं जाती थी और हमारे आंसू सूखने का नाम नहीं ले रहे थे। काफी कोशिशों के बाद भी कनिका बच नहीं पाई और तीन महीनों में ही माँ और कनिका ने संसार से विदाई ले ली। कनिका के सभी काम करके ऐसा महसूस हुआ कि शायद आज उसने माँ के पास जाकर ही सुकून पाया क्योंकि अपनी औलाद के लिए इतना कुछ एक माँ ही कर सकती हैं , सिर्फ माँ और कोई नहीं।

❑❑

इलासक्षी जैन
कक्षा I C
उम्र 6 वर्ष
माइंड ट्री स्कूल
अम्बाला हरियाणा

अंशु जैन
देहरादून

जीत का जूनून

एक मानव अपने जीवन मे क्या कुछ नहीं कर सकता लेकिन कुछ कर गुजरने के लिए सर्वप्रथम दृढ़ संकल्प और उसे सार्थक करने के लिए वचन बध होना, और मन मे जीत का जूनून अति आवश्यक है, इसे मैं स्वय अपने अनुभव से पुष्ट कर सकती हूँ!

आज से एक वर्ष पूर्व मै मानसिक तनाव से ग्रस्त, गठिया की असहनीय शारीरिक पीड़ा सहते हुए, अनिद्रा से शुब्ध – हताश हो कर, दवाओं और व्यसनो पर आश्रित हो चुकी थी. तभी अचानक मुझे एक प्रेरणा दायक मित्र का सानिध्य प्राप्त हुआ उन्होंने मुझे बहुत समझाया इन सब चीजों से मुक्त होने का आग्रह किया और न जाने कैसे उनकी प्रेरणा से मै अपने आप से वचन बध हो गयी और अपनी दशा परिवर्तित करने का दृढ संकल्प ले कर एक नये मार्ग पर निकल पड़ी. मेरे पति का सहयोग मेरा सम्बल बना और समय के साथ ऐसा जादू हुआ की आज मै स्वयं को बहुत स्वस्थ एवं चुस्त महसूस करती हूँ. सात से आठ किलोमीटर घूमती हूं. लेखन गायन के साथ 64 साल की उम्र में कत्थक नृत्य कर रही हूँ यानि मेरी दिनचर्या ही बदल गयी है!

मेरा यह संस्मरण यह दर्शाता है कि मनुष्य में स्वयं को बदलने की क्षमता तो अंतर्निहित है बस उस दीपक को प्रज्जवलित करने कि आवश्यकता मात्र है. मैं यह संस्मरण इसलिए साझा करना चाहती हूँ ताकि यह किसी अन्य का मार्गदर्शन करने में सहायक हो सके. जैसे की मेरे मित्र ने मेरा मार्गदर्शन कर मुझे फिर से जीना सीखा दिया. मैं हमेशा उनकी आभारी और ऋणी रहूंगी ।

❑❑

डॉ राजीव पाण्डेय
संस्थापक अध्यक्ष
शब्द सृजन संस्थान(पंजी.)

तृप्ति मिश्रा
महू ,मध्य प्रदेश

अमित कुमार कौशल
सह संपादक ,
हिंदी की गूंज
अम्बाला कैंट

हम कुछ नया करेंगे

आशाओं की नई भोर में, नूतन पंख सजेंगे।
सुर्ख गुलाबी पंखुड़ियों के,फिर से दिन बहुरेंगे।
हम कुछ नया करेंगे।

चिड़ियों के कलरव से सूना,आँगन नहीं सुहाता।
और सवेरे कागा भी कब, अपना वचन निभाता।
उम्मीदों पर मिठ्ठू कायम, स्वागत कर हरसेंगे।
हम कुछ नया करेंगे।

बिना कथानक के सो जाते, दादी माँ के सपने।
सन्ध्या वन्दन का सुर धीमा,अधर लगे हैं कंपने।
बूढ़ी काकी की लाठी में, फिर से पर निकलेंगें।
हम कुछ नया करेंगे।

भोर सुहानी रोती देखी, रातें लें अंगड़ाई।
पुरवा के यौवन पर रीझी,पछुवा की तरूणाई।
नयी तूलिका के आँगन में ,नव अरमान भरेंगे।
हम कुछ नया करेंगे।

मुस्काती कैक्टस की मूँछे,घर की बालकनी में।
तुलसी के गमलों से आयें, सांसे नागफनी में।
रेगिस्तानी वातायन में, गन्धित पुष्प खिलेंगें।
हम कुछ नया करेंगे।

चौपालों पर सन्नाटों ने, अपना डेरा डाला।
अगियानों ने दम तोड़ा है,पीकर गम का प्याला।
वीरानी गलियों के पग में, घुँघरू मधुर बजेंगे।
हम कुछ नया करेंगे।

स्वाति बूँद के संधिपत्र को,चातक ने ठुकराया।
सुरा सुंदरी के अवयव से,डी जे पर इठलाया।
और चकोरों की अंगुली से चन्दा केश सजेंगे
हम कुछ नया करेंगे।

वीणा के तारों में आयी, नव युग की मादकता।
चम्पा और चमेली तजती,खुशबू की साधकता।
शुष्क तड़ागों में प्रमुदित हो,सरसिज नित विकसेंगे।
हम कुछ नया करेंगे।

❑❑

नाविक

बन के कुशल नाविक तू
अब जीवन चलाना सीख जा
पीड़ा की लहरें उठेंगी
पार पाना सीख जा

चल निकल संकल्प कर
चलना शुरू कर धार से
उदित होकर भाग्य अब
पुकारता उस पार से

आगे आगे देखना सब
कितना सौम्य और शांत है
मंदाकिनी कालिंदी भी
आरंभ में आक्रांत है

बढ़ता चलाचल आगे अब
उस निर्झरा के वेग से
शिलाखंड जो लांघ के
जाती निकल उद्वेग से

राह के इन प्रस्तरों को
अब बहाना सीख जा
बन के कुशल नाविक तू
अब जीवन चलाना सीख जा

❑❑

जैसमीन /उम्र 12 /कक्षा 6

मां तेरा आंचल फिर चाहता हूं

थक गया मां,
चैन के पल जीना चाहता हूं,
तेरे आंचल में छुपके ,
मैं कुछ पल रोना चाहता हूं।

मर्द बन गया मैं भी,
जिम्मेदारी तले मैं भी
दबना चाहता हूं,
तेरे आंचल में छुपके,
कुछ पल सोना चाहता हूं ।

हार गया क्या मैं जीवन से?
रिश्तो की राजनीति
करना चाहता हूं,
तेरे आंचल में छुपके ,
सच तुझको कहना चाहता हूं।

अच्छा बुरा मुझे कौन समझाए?
एक पल स्थिर रहना चाहता हूं,
तेरे आंचल में छुपके,
मैं भी अब हंसना चाहता हूं।

कल आएगा और जाएगा,
वक्त यूं ही कट जाएगा,
तेरे आंचल में छुपके ,
आलिंगन तुझको करना चाहता हूं।

मौत तय वक्त पर ही आएगी,
जिंदगी की जंग क्या हरा पाएगी?
तेरे आंचल में छुपके ,
दूसरा जन्म ना मैं चाहता हूं ।

❑❑

लक्षिता/उम्र 10/कक्षा 6

पत्नी और आतंकवाद

अरविन्द पथिक

मुझे लगता है और मेरी बात से आप भी 101 फीसदी सहमत होंगे ही कि सबसे बडी आतंकवादी होती है पत्नी।कितने आतंकवादी हैं जो शादीशुदा हैं? वही आतंकवादी बडा और श्रेष्ठ आतंकवादी माना जाता है जो ज्यादा से ज्यादा बीबिया संभाल लेता है।जैसे जन्नतनशीन लादेन साब।'लादेन साब'इसीलिए आतं. कवादियों के सिरमौर थे क्योंकि दर्जनों बीबियों के होते हुये भी अफगानिस्तान–पाकिस्तान की पहाडियों में मस्ती से घूमते थे ।अप. नी मरजी के मालिक थे.इतनी बीबियों को सफलता से संभाल लेने के हुनर ने ही उन्हे इतना हिम्मती और आत्मविश्वासी बना दिया था कि सीधे अमेरीका की नाक, मेरा मतलब 'वर्ल्ड ट्रेड टावर ' और'पेंटागन ' पर ही विमान घुसेड दिये .उत्तरी वजी. रिस्तान मे जन्नतनशीन हुये हकीमुल्ला महसूद साब और उनसे पहले इस दुनिया –ए – फानी से कूच कर गये बैहतुल्ला महसूद साब की भी मैं बडी इज्जत करता हूं क्योंकि आधा दरजन बीबियों और कई दर्जन बच्चों के साये में रहने के बाद भी बाकी दुनिया को–––और महाबली सर्वशक्तिमान अमरीका–तक को दहशत के साये में जीने के लिये मजबूर कर देने वाले इन जन्. नतनशीन आतंकवादियों की हिम्मत को कोई कुंवारा चाहकर भी समझ नहीं सकता .नया नया शादी शुदा तो बेवकूफीया अहमकपना ही मानेगा इनके कारनामो को .पर सही मायनों में समझ वही सकता है जिसकी शादी को कम से कम 8.–10 साल हो गये हों । नया –नया शादी शुदा तो अपनी पत्नी को चंद्रमुखी , जुही की कली और गुलाब की डली से इतर मानने को तैयार ही नही होता और जब हकीकत समझ में आती है तब तक इतनी देर हो चुकी होती है की इहलोक और परलोक दोनों में सुधार की गुंजायश ही नहीं रहती दृ जब आलू –प्याज के रेट सुनकर आये चक्कर पत्नी के चक्करों को दे खकर सहम जाते हैं . ––किनारा कर लेते हैं। दूसरी बार जब पत्नी का खट्टा खाने का मन करती है तो दिल बैठने लगता हैऔर अति उत्साह में आकर किसी रोज अतिरिक्त प्यार लुटाने के प्रतिफल में पत्नी कहीं इमली या अचार की फरमाइश कर बैठती है तो कलेजा कांपने लगता है और मन से नार्मल डिलीवरी हो जाने के लिए करुण–विगलित स्वर में स्वतः ही प्रार्थनाएं फूटने लगती हैं . लेबर पेन की शुरुआत होते ही एटीएम पिन भूल भूल जाने का मन करने लगता है और लेडी डाक्टर का चेहरा सूर्पनखा और तड़का की याद दिलाता है तब सुन्दर से सुन्दर पत्नी फिदायीन नजर आती है . सूत्र बताते हैं कि अभी कुछ दिन पहले ही एक फांसी की सजा पाए आतंकवादी को जब यह पता चला कि एक उसे भल ही जेल में २२ साल हो गये हों पर उसकी पत्नी को माँ बने 17 साल ही हुए हैं तो उस गैरतमन्द ने सुप्रीम कोर्ट के जजों से दरख्वास्त कर अपने लिए खुद ही फांसी मांग ली .ये होता है पत्नी और पत्नी के कारनामों का आतंक । हमारे प्राचीन ग्रन्थ भी पत्नियों के आतंकवादी कारनामों से भरे पड़े हैं . मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्रीराम के पिता श्री यदि तीन शादियाँ न करते तो रामायण ही नहीं रची जाती.

बिचारे अयोध्या नरेश दशरथ तो पत्नी को वरदान देकर अंततः अयोध्या का राजपाट छोड़कर इंद्र के सिंहासन के अधिकारी हो गये.पत्नी के खुले केशों को रक्त से सज्जित और सिंचित करने के लिए भीमसेन ने दुःशासन के सीने को चीर दिया वरना खुद भीम के साथ वही होने वाला था जो उसने दुशासन के साथ किया . पत्नी के वचनों की मार तल. वार की धार से भी ज्यादा पैनी और गहरी होती है ना जाने कितने कालिदास विद्योत्माओं के कर्कश वाक् वाणों.से ही उपजे हैं .कितने रामबोलाओं को तुलसीदास बना देने का श्रेय जिह्वा को हथियार की तरह इस्तेमाल करने में प्रवीन रत्नावलियों को ही है. पहले तो किसी कन्या को पत्नी बनाकर लाना ही हिम्मत का काम है और हमारे देश के बड़े बड़े नेता – अभिनेता ऐसी हिम्मत जुटा नहीं पाए .उनकी सारी महानता धरी की धरी रह जाती यदि शादी कर लेते. फिर वे चाहे अपने पूर्व प्रधानमन्त्री परम प्रतापी अटल बिहारी वाजपेयी जी हों या बालीबुड के 'बजरंगी भाई जान ' याने अपने सलमान खान .अटल जी भले ही 'आर–पार' और 'काल के कपाल' पर लिखने का हौसला रखते थे पर कभी शादी करने की हिम्मत नही जुटा पाये। पोखरण में विस्फोट करना आसान है, पत्नी को बर्दश्त करने से . पूर्व महामहिम कलाम साहब ने कितनी ही अग्नि और पृथ्वी मिसाइल बनायीं पर पत्नी नाम की मिसाइल घर लाने की हिम्मत जुटा नहीं पाए . शादी कर लेते तो नोन, तेल ,लकडी का भाव पता चल जात. ा। एक अदद पत्नी और दो अदद बच्चे सारी हेकडी निकाल देते.फिर तीन जोड़ी पेंट शर्ट में काम नही चलता. – एक बार पत्नी की दहशत में जिये आदमी को आतंकवाद से डर नही लगता।जब मुंबई में विस्फोट हुये तो सब मुंबईकरों के जज्बे को सलाम कर रहे थे पर मुझे बडी हंसी आ रही थी।कितने नादान लोग हैं जो मजबूरी को जज्बे का नाम दे रहे थे।परिवार और पत्नी की जरूरतों की फेहरिस्त से आतंकित मुंबईकर तो ईर्ष्या कर रहे थे उनसे जिन पर आतंकवादियों ने कृपा की और रोज–रोज की जरूरतों के

जाल में छटपटा कर मरने से मजबूर कुछ दर्जन पतियों को मुक्ति प्रदान कर दी।कुछ अदूरदर्शी लोग आतंकवाद को बडा मसला मानते हैं परमुझे लगता है कि देश की नही विश्व की बहुत सी विकरालसमस्याओं का निदान देर –सवेर हमें आतंकवाद में ही मिलेगा।जैसे बेरोजगारी ने हमारे देश के बहुत से युवाओं कोआतंकवाद में ही रो. जगार मुहैया कराया हुआ है और इसकाम में पाकिस्तान सच्चे पडोसी का फर्ज निभाते हुये हमारीदिलोजान से मदद कर रहा है।भले ही उनके अपने भूखे नंगे तालिबान के यहां ट्यूशन पढाकर गुजारा कर रहे हैं पर वह हमारे नौजवानों को बढिया तालीम दे अव्वल दर्जे का आतंकवादी बनाने में कोई कोर कसर नही छोड रहा है.पाकिस्तान तो कहता है कि उनके यहाँ हमारी शोध संस्था ने भी अपना इंस्ट्रीट्यूट खोला है और बहुत अच्छा काम कर रही है .काश ये सच हो इससे एक तो पड़ोसियों को अच्छी तालीम मिलेगी और हमारे सर से भी कुछ अहसान उतर जायेगा. अहसान तो भाई का भी चुकाना चाहिये–फिर पाकिस्तान तो अपना पड. ोसी है।

हमारे तो भगवान तक अर्द्ध नारीश्वर हैं और पत्नी से भयाक्रांत हैं फिर हम नराधमो की बिसात ही क्या ? आतं. कवाद हमारे लिए इतना परिचित और सहज हो गया है कि अब यदि कुछ दिन तक कहीं से बम फटने की सूचना नही आती तो लगता है कि ये इंटेलीजेंस वाले सारे के सारे नाकारा हो गये हैं––.पता ही नही चलता कि 'आई बी 'और'रा' आजकल प्रदेशों को कोई 'इनपुट' भेज भी रही है या सब विरोधी पार्टियों का 'आउटपुट' पता करने में ही लगी हैं.ना जाने कितने प्रधानमन्त्री और गृहमंत्री आये गये . सत्ता के शिखर पर जाने कैसी कैसी डिजायन के लोग बैठे और बिठाये गये पर सबका पसंदीदा सम्वाद नहीं बदला.

–''––आतंकवाद को बर्दाश्त नही किया जायेगा ''। कुछ दिन तक कोई आतंकवादी हरकत नहीं होती है तो विदेश मंत्री को चिंता हो जाती है कि बयान का वाला कागज खो गया तो नया टाइप करवाना पडेगा। गृहमंत्री भी सोचने लगते हैं कि शायद आतंकवादी भी अपनी पुलिस की तरह नाकारा हो गये हैं. पर तभी कही ना कही धमाका करके आतंकवादी सभी को संकट से उबार लेते हैं।आम हिंदुस्तानी भी आतंकवाद को सहन करने की अपनी क्षमता को लेकर आश्वस्त हो जाता है.आतंकवाद का नया झटका झेलते ही अपनी पत्नी औरअपने देश पर फख्र महसूस होता है जिन्होंने उसे आतंकवादके साथ जीने का , सामंजस्य बिठा लेने का इतना आत्मविश्वास बख्शा है कि उसे परवेज मुशर्रफ की परमाणु बम की धमकी सुरेन्द्र शर्मा का चार लाईना लगने लगी है . ये पत्नी के आतंकवाद का ही प्रताप है कि अब आतंकवाद से हमारे देश और देश वासियों को झूठे भी भय नही है .अब तो घर से दफ्तर तक अघोषित आतंक के साथ जीने में मजा आने लगा है उसे–.क्योंकि,भ्रष्टाचार, बेरोजगारी महंगाई,कुंठा ,संत्रास का एकमुश्त उत्तर है आतंकवाद .इसलिये डरे नही वरन स्वागत करें आतंकवाद का क्योंकि वह है पत्नी की ही तरह आपके साथ सदैव यत्र–तत्र –सर्वत्र।

❑❑

सुभाष चंदर,
नोएडा

एक सच्ची मुच्ची की प्रेम कहानी

कहानी कुछ ऐसे शुरू करता हूं।

एक शहर में एक अदद लड़का था और एक नग लड़की थी। लड़का और लड़की दोनों ही इश्किया फिल्मों के शौकीन थे। इश्किया फिल्म देखकर आहें भरते थे और रोज प्रार्थना करते थे – हे भगवान काश हमें भी ये निगोड़ा इश्क हो जाये।

लड़के ने तो बाकायदा मन्नत मांग र खी थी कि जिस दिन वो इश्क के इम्तिहान में पास हो जायेगा। ठाकुर जी के मंदिर में सवा किलो देसी घी के लड्डू चढ़ायेगा। इसके लिए वह काफी यतन भी करता था। मसलन वह प्रचलित फैशन के हिसाब से बालों का फुग्गा बनाता था, रंगीन छींटदार शर्ट पहनता था, उसके नीचे घिसी हुई जीन्स धारण करता था। दिन हो या रात, आंखों पर काला चश्मा चढ़ाए रखता था। दिन में कई घंटे आइने को भेंट करता था। उसे कई फिल्मों के डायलॉग याद थे जिन्हें वह अपनी भावी प्रेमिका को सुनाने के लिए बेताब था। पर उसकी यह मनोकामना सिद्ध नहीं हुई। हारकर उसने एक प्रेम विशेषज्ञ से सम्पर्क किया। ये लवगुरू महाराज वाकई गुरू थे, एक अदद बीबी और नौ प्रेमिकाओं को एक साथ अफोर्ड करते थे। कहीं कोई लफड़ा भी नहीं होने देते थे। ऐसे महानुभावों के तो दर्शन करने से भी पुण्य मिलता है। सो हमारा हीरो, उस लव गुरू की शरण में पहुंचा। जाकर सीधे उसके चरणों में गिर गया।

लव गुरू ने पहले लड़का देखा, उसका जुगराफिया जांचा, उसकी जेब का हाल मालूम किया। इश्क पर उसके इन्वेस्टमेंट की संभावनाएं तलाशीं। तब जाकर उवाचे– ''बालक, तेरा भविष्य उज्जवल है। इश्क की बिसात पर तेरी गोटी जरूर फिट बैठेगी। मैं तुझे एक लव लैटर डिक्टेट करा देता हूं। तू इसकी कम्प्यूटर पर सात आठ कॉपी तैयार कर लियो और जहां–जहां तुझे थोड़ी सी भी संभावना लगे, इन्हें बांट दियो। कामदेव ने चाहा तो तू जल्दी ही इश्क के मैदान में कबड्डी खेलने लगेगा।'' हीरो ने डिक्टेशन ली। पत्र पढ़कर उसकी बांछें खिल गयी। उसके मंह से बेसाख्ता निकल पड़ा दृ ये मारा पापड़वाले को।'' उसने लव गुरू के दुबारा पैर पकड़ लिया। लव गुरू प्रसन्न भए। उसे विजयी भव का आशीर्वाद दिया। लड़का जब जाने लगा तो उसे पीछे से टोककर बोले–

"बालक इश्क के मैदान में एक बार घुस जाने के बाद कदम पीछे मत हटाईयो। हो सकता है कि लड़कियों के भाई – बाप, नाते – रिश्तेदार तेरे दो–चार दांत तोड़ दें। तेरा एकाध हड्डी चटका दे। पर उनसे डरने का नहीं है। दांत नकली लग सकते हैं, हड्डी दुबारा जुड़ सकती है पर इश्क का चांस एक बार निकल गया तो आसानी से हाथ नहीं आयेगा।" कहकर लव गुरू ने पान का बीड़ा मुंह के हवाले कर लिय। लड़के ने बड़े श्रद्धाभाव से गुरू की बातें गांठ में बांध लीं और अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ गया। पहले राउन्ड में उसने प्रेम–पत्र की सात कॉपियां कम्प्यूटर पर तैयार कराई। तीन प्रतियां उसने कॉलेज में, दो पड़ौस में और दो उस टाइम सेंटर में इंवेस्ट कर दीं, जहां वह टाइप सीखने जाता था। सात कन्याओं को प्रेमपत्र वितरित करने के बाद वह उनके जवाब के इंतजार के काम में लग गया। छह पत्रों का जवाब जल्दी आ गया। कॉलेज वाली दो कन्याओं ने तो उसे लगे हाथ थप्पड़ों का भुगतान कर दिया तो तीसरी कन्या के भाई और उसके दोस्तों ने यह काम सम्पन्न किया। हीरो का मन कॉलेज से तो खट्टा हो गया पर मीठे की आशा अब भी थी क्योंकि पड़ोस और टाइप सेंटर के विकल्प अब भी खुले थे। अगले दिन तक पड़ोस का भी जवाब आ गया। एक कन्या ने बताया कि वह पहले से ही इन्गेज्ड है, इसलिए सॉरी। दूसरी की अम्मा, हीरो की अम्मा से मिलने आ पहुंची। कहना ना होगा कि प्रेम पत्र उसके हाथ में था फिर क्या था अम्मा ने पहले अपना माथा ठोका, फिर लड़के को। मामला फिर भी काफी सस्ते में निपट गया क्योंकि अम्मा ने सिर्फ चार–पांच चप्पलें मारी और गालियां भी एक दर्जन के करीब ही दीं। अब उसकी आशा टाइप सेंटर पर केन्द्रित हो गयी। वहां दो पत्रों का इन्वेस्टमेंट था। एक लड़की ने तो उसे अपनी शादी का कार्ड थमा दिया। मतलब यहां भी भैंस पानी में थी। पर सातवां पत्र जिस पर कन्या रत्न के पास था, उसी पर सारी उम्मीदें टिकी थीं।

अब कहानी को थोड़ा लड़की यानी कहानी की हीरोइन की तरफ मोड़ देता हूं। पहले ही बता चुका हूं कि लड़की फिल्मों की शौकीन थी और उसका पसंदीदा गाना भी था– ऐ काश किसी दीवाने को हम से भी मौहब्बत हो जाये। वह दिन में तीन बार कपड़े बदलती थी और तीस बार आईना देखती थी। मतलब हर तरह से हीरोइन बनने की पात्रता रखती थी। वैसे उसके मन मंदिर में तो सलमान खान बसा था पर अपनी व्यस्तताओं के कारण न तो वह उसका मोबाइल चार्ज करा सकता था, ना अपनी मोटर साईकिल पर मॉल ले जा सकता था और तो और वह उसे पिक्चर भी नहीं दिखा सकता था। सो इन हालातों में उसे एक फुलटाइम आशिक की जरूरत थी, जो ये सब पात्रताएं पूरी कर देता। वह हमेशा सपनों में देखती कि उसका आशिक उसे कनॉट प्लेस में चाट–पकौड़ी खिला रहा है, महंगे–महंगे गिफ्ट दिला रहा है बॉक्स में फिल्में दिखा रहा है और इनसे समय बचने के बाद प्यार की गाड़ी भी हांक रहा है। सो वह एक अदद इश्क के लिए बेचौन थी और खासी बेचौन थी। इसी बेचौनी के हालातों में उसे हमारे हीरो का लवलैटर मिल गया। बस फिर क्या था, उसका दिल मीटरों उछल गया। पर उसने दिल के भावों को चेहरे पर आने नहीं दिया। रात भर में उसने प्रेम पत्र को बीस–पच्चीस बार पढ़ा। चालीस–पचास बार चूमा और फिर पिया मिलन की आस वाला गान गाकर सो गयी। कहना ना होगा कि आज उसके सपने में सलमान खान की जगह अपना हीरो गाना गा रहा था।

अगले दिन लड़का और लड़की... नहीं अब उन्हें हीरो और हीरोइन कहेंगे.... तो अगले दिन हीरो–हीरोइन पत्र में लिखी जगह पर मिले। हीरो सच्चे भारतीय आशिक की तरह समय से आधा घंटे पहले पहुंच गया। अलबत्ता हीरोइन ने प्रेमिका के किरदार की लाज रखी। वह सिर्फ एक घंटे लेट पहुंची। हीरो ने धड़कते दिल से हीरोइन को गुलाब का भेंट किया। लड़की ने थोड़ी ना–नुकुर के बाद स्वीकार कर लिया। उसके बाद बातों का सिलसिला चल पड़ा। कुछ संवाद यहां प्रस्तुत है... कृपया ध्यान दें कि कोष्ठक के संवाद पात्रों के मन से फूट रहे हैं–

– क्यों जी... इतनी चुप क्यों हो... कुछ बोलो ना?

– (चुप्पी)... क्या बोलूं... आपने तो मुझे फंसा दिया है। आप जानते हैं मैंने तो इस बारे में कभी सोचा भी नहीं था। सच्ची... मैं ऐसी लड़की नहीं हूं (मन में सोचती तो हर वक्त रहती थी, पर किसी कमबख्त ने घास ही नहीं डाली)

– सच कहूं जी – मैं भी ऐसा लड़का नही हूं– मेरा भी यह पहला प्यार है। मैंने भी आज तक किसी लड़की की तरफ आंख उठाकर नहीं देखा (जब भी देखा, टकटकी लगाकर देखा)

– फिर मुझमें ऐसा क्या था... खिस्स... हंसने की आवाज....

– आप में तो वो बात है जो दुनिया की किसी लड़की में नहीं। आपकी आंखे प्रियंका चोपड़ा जैसी है, नाक कैटरीना जैसी और होंठ तो बिल्कुल करीना जैसे हैं– (बोलना तो आगे भी कुछ चाहता हूं... पर पहली मुलाकात में ... नो... नो... पांच सात मुलाकात के बाद ही कुछ बोलूंगा... हो सका तो...)

– हुम्म (शर्माकर) – मैं कहां ऐसी हूं... मैं तो बिल्कुल सिम्पल सी हूं... पता नहीं, आपने मुझमें क्या देख लिया (कमबख्त मेरी तुलना इन फटीचर हीरो. इनों से कर रहा है, ये तो मेरे आगे पानी भरती हैं... दो चार मुलाकातें और हो जाने दे... फिर देखूंगी, तू कैसे हीरो. इनों का नाम लेता है)

– ये आप क्या कह रही हैं। मैं तो पहली नजर में ही आप का दीवाना हो गया था। सोचता था कि प्यार करूंगा तो सिर्फ आपसे ही... वरना जीवन भर कुंआरा रहूंगा

(कब से सोच रहा था, ये डायलॉग मारूंगा, पर ससुरा मौका ही नहीं मिला। अब तुम्हें क्या बताऊं कि सात को लव लैटर दिए थे, पसंद तो मुझे अपनी क्लास फैलो तृष्णा थी... पर ठीक है जो मिल गया)

– क्या हुआ... जी... किस सोच में पड़ गये। अच्छा, अभी आपने कहा था कि मैं अगर आपको नहीं मिलती तो आप जीवन भर कुंआरे रहते। क्या इतनी दूर की सोच रहे हैं... बोलिए ना चुप क्यों हैं?

– ऐं... (अब क्या बोलूं, घबराहट में ऐसी बेवकूफियां तो हो ही जाती है, गजब कर दिया– अपने पैरों पर पहली मुलाकात में ही कुल्हाड़ी मार ली। लड़की सैंटी हो गयी तो आफत आ जायेगी)

– सुनो जी... क्या सोच रहे हैं?

– कुछ नहीं... अब बताइये... आपको देखने के बाद सोचने को रह ही क्या जाता है। वो क्या कहा है शायर ने... तुमको देखें कि तुमसे बात करें (बात तो थोड़ी बनी प्यारे)

– खिस्स... आप भी ना... (शर्माना) ... अच्छा सुनिये जी... मुझे शिप्रा मॉल जाना है। एक दो ड्रेस खरीदनी है– आप मुझे वहां छोड़ देंगे (पट्ठे पता चल जायेगा मॉल में कि तू कितने पानी में है)

– (ड्रेस खरीदवायेगा तो मामला फाइनल वरना जैराम जी की, सोच लूंगी, कोई बहाना) हां जी बोलिए छोड़ देंगे, मोटर साइकिल से।

– अरे... क्यों नहीं... क्यों नहीं... मोटर साइकिल आपकी... हम आपके, चलिए ना... इसी बहाने आपके साथ कुछ वक्त और गुजर जायेगा (वक्त तो गुजरेगा बेटे, पर सारा जेब खर्च स्वाहा हो जायेगा, लोंडिया को ड्रेस तो दिलवानी ही पड़ेगी... आखिर फर्स्ट इम्प्रेशन का मामला है)

– चलिये जी... क्या सोचने लगे... (ये तो सोचने लगा, कमबख्त कहीं बाहर छोड़कर ही ना चला जाये)

– आइये जी... बैठिये ... मोटर साइकिल की घर्र–घर्र...

– सुनिये... थोड़ा आगे सरककर बैठिये... पिछले पहिये में हवा कम है... .

– जी... ठीक है... (ये तो काफी शरारती लगता है... चलो अपना क्या जाता है।) मोटर साइकिल की घर्र– घर्र...

आगे की कहानी में जुड़ता है। हीरो हीरोइन के साथ मॉल जाता है। ड्रेस की दुकान के पास हीरो के कदम ठिठकते हैं, लड़की तड़ाक से हीरो का हाथ अपने हाथ में ले लेती है। नतीजा अच्छा निकलता है। हीरो तीन ड्रेस खरीद देता है। हीरोइन खुश हो जाती है और मोटर साइकिल पर हीरो से चिपककर बैठती है। हीरो का इन्वेस्टमेंट सार्थक हो जाता है।

तीन चार मुलाकातों में इश्क काफी आगे बढ़ता है। हीरो हीरोइन का मोबाइल चार्ज कराता है। चाय पकौड़ी का रसावादन करता है। सिनेमा दिखाता है। गाहे–बगाहे गिफ्ट देता है। बदल में किसी पार्क के कोने में या सिनेमा हॉल के अंधेरे में छुआ–छुई, पुच–पुच का सुख पाता है। हीरोइन खुश है। हीरो इश्क की परीक्षा में पास हो गया। हीरो अपने खर्चे का हिसाब लगाता है, इश्क का सुख उसे खर्चे से बड़ा लगताहै और लगभग साल भर तक लगता रहता है। लड़की सुरक्षित दूरी की सीमा को पीछे छोड़कर आधुनिक सीमाओं में प्रवेश करती है। यानी इश्क की गाड़ी अपनी मंजिल तलाशने लगती है।

कहानी कुछ ज्यादा ही फुटेज ले रही है, सो अब थोड़ा दी एंड की ओर बढ़ा जाये।

एक दिन लड़की के रिश्ते वाले घर आते हैं। उन्हें लड़की पसंद है। लड़का अपने बाप की इकलौती संतान है। बैंक में प्रोबेशनरी ऑफिसर है। घर का मकान है। देखने–सुनने मे अच्छा है। हीरो से अच्छा। रिश्ता पक्का हो जाता है। हीरोइन और हीरो फिर मिलते हैं। उनके डायलॉग (मन वाले कोष्ठक के डायलॉगों के साथ पाठकों की सेवा में प्रस्तुत हैं)

– सुनो जी.... आज मेरा मन बहुत खराब है।

– क्या हुआ जानू?

– पता है आज सुबह मेरा रिश्ता पक्का हो गया (ऊं... ऊं... ऊं...)

– हे भगवान... ये किस को हमारे प्यार की नजर लग गयी। (गहरी सांस) ... रोओ मत... भगवान ठीक करेगा। भगवान तो जो करता है, ठीक ही करता है। मैं तो सोच रहा था कि मेरे गले ना पड़ जाये, वरना बापू बहुत मारता, लाखों का दहेज मारा जाता)

– तुम बताओ जी... अब मैं क्या... मन तो करता है कि जहर खाकर जान दू दूं (सिसकियां) (जान दें मेरे दुश्मन)

– अरे... अरे... रोओ मत... तुम रोती हो तो दर्द मेरे दिल में होता है (वाह क्या फंडू डायलॉग मारा है प्यारे)

– सच्ची कहती हूं... मैं तुम्हारे बिना एक पल भी नहीं रह पाऊंगी... तुम कहो तो मैं शादी के लिए इंकार कर दूं... तुम्हारी नौकरी लगने तक मैं इंतजार कर लूंगी (निठल्ले तू बस इश्क के मतलब का ही है, वर्ना क्या अब तक नौकरी ना पा जाता, तेरा इन्तजार करे मेरी जूती। मैं तो बैंक अफसर की बीबी बनूंगी) बोलो ना जी... क्या कहते हो?

– (गहरी सांस)– मैं क्या कहूं जानू... मैं तो किसी लायक हूं ही नहीं, मां–बाप के टुकड़ों पर पल रहा हूं.. और पता नहीं... नौकरी कब तक मिलेगी... (मिल भी जाये तो क्या तुझसे शादी करुंगा, तेरा कंजूस बाप कुछ देगा भी?)

– (सिसकियां)– तो तुम क्या कहते हो... मैं जीते जी उस नर्क मे गिर जाऊं। सच कहती हूं जी तुम्हारे बिना तो मैं एक पल भी नहीं जी पाऊंगी....

– (गहरी सांस)– क्या कहा जानू... मजबूरी है। तुम मेरा इन्तजार भला कब तक करोगी। तुम्हारी दो बहने और भी तो हैं... मेरी मानो तो... (गहरी सांस)... तुम शादी कर ही लो (सिसकियां)

– सुनो जी... अब तुम रोने लगे... प्लीज मत रोओ ... देखो, हम दोनों एक–दूसरे से हमेशा प्यार करते रहेंगे, शादी के बाद भी।

– सच कहती हो ना... मुझसे शादी के बाद भी प्यार करोगी...

– हां हां... हमेशा करूंगी.. मेरे देवता... (सिसकियां) तो जानू अब पक्का रहा ना

कि मुझे अपने घर वालों की मर्जी से शादी करनी पड़ेगी। रिश्ते को हां कर दूं ना... (रिश्ता तो पहले ही पक्का हो गया है, लल्लू, मैं तो तुझे सिर्फ खबर कर रही हूं।
– हां.. हां... हां कर दो... सच कहूं, मेरा दिल फटा जा रहा है (अच्छा हुआ, बला टली)
– तो जानू... अब में चलूं... लड़के वाले अब भी घर पर हैं....
– ठीक है जानू... तुम जाओ...
– अच्छा चलती हूं... सुनो... मैंने सुना है लडके वाले शादी के लिए जल्दी कर रहे हैं अगले महीने ही शादी हो जायेगी। सुनो. .. अब हम आगे नहीं मिल पायेंगे.. . मेरी मजबूरी समझ रहे हो ना... प्लीज... समझ लेना... (लल्लू, ये सब मैं इसलिए कह रही हूं कि तू शादी में कोई बवाल ना कर दे)
– हां.. हां... जानू... मैं नहीं चाहता कि बदनामी से तुम्हारी शादी टूट जाये। ठीक है तुम्हारी खातिर मैं अपने दिल पर पत्थर रख लूंगा... पर तुमसे कभी नहीं मिलूंगा... बाय... जानू...
– ...बाय मेरे राजा... मेरे हीरो... अच्छा हां... सुनो... मेरा मोबाइल रिचार्ज करा देना... चलती हूं...
हीरोइन चली जाती है। हीरो कुछ देर वहीं खड़े होकर मुक्ति का आनंद लेने के लिए एक सिगरेट फूंकता है। अपने मोबाइल से संभावित गलफ्रैण्ड का नम्बर मिलाता है। कुछ पुराने डायलॉग दोहराता है। भावी गलफ्रैण्ड से मिलने का टाइम फिक्स हो जाता है। अब वह निर्णय लेता है कि वह लड़की का मोबाइल रिचार्ज नहीं करायेगा। इस प्रोजेक्ट पर और इन्वेस्टमेंट करना बेकार है।
इस घटना के कुछ दिन बाद हीरोइन की सहेली मिलती है।
– क्यों री... मैंने सुना है तू शादी कर रही है..
– हां... री.. अगले हफ्ते ही तो शादी है। मेरे होने वाले वो ना... बैंक में अफसर हैं। देखने में बिल्कुल हीरो जैसे हैं... हमारी जोड़ी खूब जमेगी।
– अरी वो तो ठीक है पर वो लड़का... जिससे तेरा अफेयर चल रहा था... उसका क्या होगा?
– मैंने क्या उसका ठेका ले रखा है वो भी कर लेगा, कहीं शादी.. हुम्म...
– पर तुम लोग तो एक दूसरे के पीछे दीवाने थे एक साथ जीने मरने की कसमें खाते थे...
– तो क्या हुआ...
– फिर भी बता ना... तूने उससे शादी क्यों नहीं की?
– अरी तू पागल है क्या... उस निठल्ले से शादी करके क्या करती। क्या कमाता... क्या खिलाता... खाली इश्क से पेट भरता क्या... और सुन.. एक बात और कहूं... अपने कान जरा पास ला।
– हां.. बोल...
– (फुसफुसाकर)– शादी तो मैं किसी अच्छे कैरेक्टर के लड़के से ही करुंगी.. वो तो कमीना...।
सहेली का मुंह खुला रह जाता है, इतना खुला कि एक मक्खी उसमे घुस जाती है और कुछ देर घुम घामकर साबुत बाहर निकल आती है।
आधुनिक युग की एक सच्ची प्रेम कथा का अन्त यूं भी होता है।

❑❑

अनन्या देवी, 5 वर्ष,
दून इंटरनेशनल स्कूल,
एम्स हाउसिंग कॉम्प्लेक्स,
पात्रापारा, भुवनेश्वर,
ओडिशा

डॉ रामचन्द्र स्वामी
राजस्थान

ध्यान योग

अगर हम अन्दर से आनन्द में है तो बाहरी दुनिया की बड़ी से बड़ी चुनौति का भी आसानी से सामना करने में समर्थ होंगे परन्तु यदि भीतर में दु:ख और अवसाद से भरे पड़े हैं तो छोटी मोटी विपरीत अवस्था से भी हम बिखरते नजर आएगें। समझना यह है कि वह बेशकीमती भीतर का आनन्द हम सबके अन्दर हैं ।

बस , हम उससे अनभिज्ञ हैं, इसीलिए सिकन्दर नहीं हैं । ध्यान में लीन होकर गहरा भीतर उतरते जायेंगे तो हम आनन्द महसूस करेंगे । महावीर ने प्रथम पात्र गौतम को चुना, उन्होंने बताया – जीवन में महानतम उपलब्धि आत्म साक्षात्कार है और वह ध्यान से होती है, गौतम स्वामी प्राय : चार प्रहर ध्यान करते थे और चार प्रहर का स्वाध्याय, यह क्रम आगे बढ़ा, साधक ध्यान के समय तपस्या भी करते है।

जब ध्यान में बाधा उपस्थित होने लगती है तब ध्यान को छोड़कर तपस्या में लीन हों जाते है, जैन साधना में ध्यान का वही स्थान है,जो शरीर. में गर्दन का है। ध्यान से वीतरागी की वाणी को सुनना अति दुष्कर होता है व जन्म–मरण के बीच का समय जीवन होता है । रागी हो या वीतरागी दोनो के लिये जीवन पर जीवन के प्रति नजरिया भिन्न – भिन्न होता हैं । आसक्ति से भरा रागी, अनासक्ति से भरा वीतरागी का जीवन होता हैं । जिसकी अन्तिम परिणति कैसे दोनों की समान होगी । सब भावों का ही तो परिणाम हैं ।

वीतरागी का ज्ञाता–द्रष्टा भाव होता है जिसकी अन्तिम परिणति सिद्ध गति होता है जिसमे अनन्त सुखों मे लीन हो जाते है , वही दुसरी और रागी मे राग–द्वेष का भाव होता है जिसकी अन्तिम परिणति संसार रुपी दुख सागर मे डूब जाना है । अनासक्त भाव व समता में रहकर अन्तिम परिणति का मंग. लमय होना सम्भव है । अन्दर तो आनन्द का खजाना भरा पड़ा है इसलिये ध्यान लगा कर देखिए और उस आनन्द का आनन्द लीजिए।

❑❑

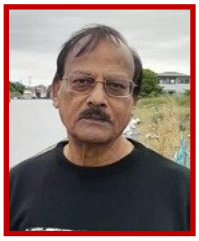

डॉ मरीज तुम्हारे हवाले

डॉ शकील सिद्दीकी
मुंबई

भाग –2 (अंतिम भाग)

'' नीतू, मैं तुम्हें पहचान गयी हूं । इस हालात में मुलाकात होगी सोचा नहीं था। मैं तुम्हें किसी बात के लिए दोषी नहीं मानती । मैं जानती हूं लड़कियों को इश्क में क्या क्या थपेड़े झेलने पड़ते हैं। मुझे सिर्फ इतना बताओ उस दिन के बाद क्या हुआ?
"मैने जब अपनी मंशा मां को बताई तो कोहराम मचना लाजमी था।"
'' लो, सुन लो । यह महारानी अपनी मर्जी से शादी करने की सोचने लगी । मैंने पहले ही इसकी पढ़ाई बंद करने को कहा था । ज्यादा पढ़ाई और आजादी का नतीजा है जो अपनी शादी खुद करने की बात करने में कोई भी लज्जा नहीं है । दूसरे जात में शादी कर खानदान का मान सम्मान मिटटी में मिल जायेगा। ये दिन देखने से पहले मैं मर जाऊंगी ।'' रितु की मां किशोरी ने उसके पिता को उलाहना दिया और पूरा घर सर पर उठा लिया ।
'' अभी रितु की शादी के बारे में सोचने की जरुरत नहीं है । उसका लक्ष्य डाक्टर बनने का है उसके बाद सोचा जायेगा । वैसे तुम्हें अच्छी तरह मालूम है कि ठाकुर हमारे खून के प्यासे है, मेरी इज्जत उछालने का उन्हें मौका मिल जायेगा । मेरी खानदानी और राजनीतिक विरासत मिट जाएगी ।'' पिताजी ने इस मसले को सिरे से नकार दिया ।
'' पिताजी , मैं तुरंत शादी की बात नहीं कर रही हूं । रतन का परिवार जौनपुर का रहने वाला है, उसके पिता आर्मी में थे और देश के लिए शहीद हुए हैं , ऐसे खानदान से रिश्ता कर आप का सम्मान ही बढ़ेगा । मैं रतन को पसंद करती हूं और शादी डाक्टर बनने के बाद ही करूंगी , रतन भी अप. ने मकसद में कामयाब होने के बाद ही शादी करेगा । ''
मैंने पिताजी को समझाने की कोशिश की । मेरे पिता एक कुशल राजनीतिक खिलाड़ी थे उनका कोई भी फैसला उनके नफे, नुकसान की तराजू पर तौला जाता था । वक्त की नजाकत को समझते हुए उन्होंने कल बात करने के लिए मसले को टाल दिया , लेकिन उनकी मंशा मुझे संदिग्ध लगी । दूसरे दिन ही मुझे नीलम दीदी से मिलना भी था ।न जाने रात में क्या हुआ,सवेरे आश्चर्यजनक रूप से दोनों का रवैया बिलकुल बदला हुआ था। मां ने रतन के परिवार और खानदान के बारे में विस्तार से बात की, मैं आशंका और आशा के झूले में गोते लगा रही थी , इतनी जल्दी दोनों हथियार डाल देंगे सोचा नहीं था । पिताजी ने बात शुरू की,
'' देखो रितु, तुम पढ़ी लिखी और समझदार लड़की हो । मैंने तुम्हें दुनियां को समझने और सामाजिक परिवेश में ढलने के लिए शिक्षा दी है । अपना अच्छा बुरा सोचना और भविष्य के बारे में फैसला लेने का तुम्हें पूरा हक है । तुम्हारी इच्छा के बारे मैंने तुम्हारे मामा सुदेश से बात की है । मेरी ओर से कोई रूकावट नहीं है तुम्हें मामा को उनके मापदंड पर संतुष्ट करना होगा । ''

पिताजी मामा के पाले में बाल डाल बरी हो गए ।मेरे मामा सुदेश रावल देहरादून के प्रसिद्द व्यापारी और समाजसेवी थे। तीन बार विधायक और मंत्री भी रह चुके थे ।
'' दो दिन बाद सुदेश दिल्ली जा रहे हैं इसलिए आज ही देहरादून चलना होगा ।'' उन्होंने तुरंत चलने का आदेश दे तैयारी करने को कहा । मेरे पास इतना समय नहीं था कि सूचना दे सकूं ।
देहरादून पहुँचते ही पिताजी असली रूप में आ गए, जिसकी मुझे आशंका थी । वहां उससे कोई राय नहीं ली गयी और मामा ने आदेश दे दिया कि रितु अब देहरादून में रह कर डाक्टरी की पढ़ाई करेगी और उसे उनके सख्त पहरे में रहना होगा । रिजल्ट के बाद मेरा दाखला देहरादून मेडिकल कॉलेज में करा दिया गया और बॉडीगॉर्ड के संरक्षण में कॉलेज जाने लगी । मुझे बिना इजाजत किसी से बात करने की भी छूट नहीं थी । मैं समझ नहीं पायी की किस तरह रतन से संपर्क करून। अब तो मैं खुद को बेवफा और खुदगर्ज समझने लगी थी ।मुंबई जाने के पहले मैंने रतन के बारे में पता करने और हालात को बयां करने के लिए यूनिवर्सिटी हॉस्टल में पता किया लेकिन कोई जानकारी नहीं मिली । मैं सिर्फ गांव के बारे में इतना ही जानती थी कि वह कानुवान के रहने वाले थे लेकिन पता लगाना असंभव था । मुंबई में मैंने जवान मेडिकल सेंटर खोला अपना नाम रितु जवान कर लिया , इस उम्मीद से कि कभी मेरा जवान आएगा और उसकी अदालत में मैं अपनी बेगुनाही बयां कर सकूंगी ।"
इधर जब दूसरे दिन रितु नहीं आयी और उसका कोई सन्देश नहीं आया तो दोनों चिंतित हो गए । उसके घर जाकर पता लगाने पर उनके देहरादून जाने की बात मालूम हुई । नीलम और रतन इस रहस्य को समझ नहीं पा रहे थे । नीलम को विश्वास था कि रितु किसी मुसीबत में है और रतन कुछ समझ नहीं सका । धीरे धीरे एक महीना गुजर गया दोनों रितु की ओर से निराश होने लगे क्योंकि अब तक कोई सन्देश न देना इस बात की इशारा कर रहा था की रितु ने रतन के जज्बात से खेला है और उसे धोखा दे गयी । अभी भी उसे यकीन नहीं हो रहा था कि रितु उसके साथ बेवफाई करेगी लेकिन वफा का भी कोई संकेत नहीं था । धीरे धीरे वह अवसाद और निराशा से घिरने लगा

। किसी काम में ध्यान नहीं लगता , हर तरफ रितु और उसकी बेवफाई दिखाई पड़ती । एक दिन नीलम दीदी ने समझाया ।

'' रतन, रितु को ऐसे दोष देना अच्छा नहीं है. हमें उसकी मजबूरियों या मुसीबतों के बारे में भी सोचना चाहिए । अगर वह तुमसे प्यार नहीं करती होती तो साफ साफ बता देती क्योंकि वह आधुनिक , सम्पन्न और संस्कारी लड़की है । वादे के अनुसार न आ सकने में कोई अनहोनी घटना से भी इंकार नहीं किया जा सकता है।इसलिए कुछ दिन इंतजार करना बेहतर होगा, अभी कोई निर्णय पर नहीं पहुंचना चाहिए । तुमने रितु से अपने कुछ निश्चित लक्ष्य के बारे में वादा किया था। तुम्हें अपना वादा नहीं भूलना है , परिश्रम करके कामयाबी हासिल करो, इससे जब कभी भी तुम उससे मिलोगे तो तुम्हें शर्मिंदगी नहीं होगी । तुम दोनों का इरादा अपनी मंजिल को पाने के बाद ही शादी करने का था । हो सकता है वह जिस हालत में हो अपने लक्ष को पाने के लिए संघर्ष कर रही हो ।''

दीदी की बातों ने रतन को जीवन संभल दिया और वह जी जान से सेना में जाने की तैयारी करने लगा , और एक साल में ही कमीशन पा कर कॅप्टन हो गया । ट्रेनिंग के बाद उसकी पहली पोस्टिंग कश्मीर में हुई । आतंकवादी संगठनों को नेस्तनाबूद करना उसका लक्ष था । एक परिवत. न उसमे आया कि उसे अब मृत्यु से एकदम भय नहीं लगता । दुश्मनों पर हमला करते वक्त वह बड़ी ही मुस्तैदी से उनके अड्डों पर हमला करता और कई जोखिम भरे मिशन में कामयाबी हासिल की ।अपनी बटालियन में वह एक दिलेर और सूझबूझ वाला ऑफिस मशहूर हो गया ।पांच साल के अंदर कश्मीर के इलाकों में कई दुरूह मिशन में सफलता मिली और वह कर्नल बन गया । अभी तक रतन को रितु के बारे में कोई जानकारी नहीं मिली थी इसलिए वह कभी कभी बेचौन हो जाता और यकीन होने लगा कि रितु अब बीते दिनों की यादें और कड़ुई सच्चाई है। नीलम की भी शादी बनारस में हो गयी और वह यूनिवर्सिटी में इकोनॉमिक्स की प्रोफेसर हो गयीं । उनको कैंपस में बंगला भी मिल गया ।

एक दिन नौशेरा इलाके में एक बहुत ही खतरनाक ऑपरेशन के लिए रतन अपने जवानों के साथ लगे थे । आशा के विपरीत आतंकवादियों के पास बहुत हथियार थे और वह बस्ती की भीड़ का भी फायदा उठा रहे थे । रतन को कम से कम नागरिकों की जान जोखिम में डाले उन्हें काबू में करना था या उनका सफाया करना था। बस्ती के बाहर की तरफ बर्फीले नाले में तैर कर उसनेआतं. कवादियों को घेर लिया । फायरिंग में एक साथ तीन गोली उसके पैर में लग गयी ,उसका पैर बर्फ में फँस गया , उसे लगा उसका पैर गल कर गिर गया क्योंकि वह तो सुन्न हो गया था, लेकिन वह हिम्मत नहीं हारा और आठ लोगों में पांच को मार दिया और तीन को पकड़ लिया। इतनी देर में गोली अंदर तक घुस चुकी थी काफी खून बह जाने से रतन को बेस हॉस्पिटल लाया गया । बहुत दिनों तक इलाज चला लेकिन उसके पैर का दर्द कम नहीं हुआ और वह चल नहीं सकता था। सेना की ओर से उसे एकसाल के लिए मेडिकल छुट्टी दी गयी । मेडिकल हॉस्पिटल के डीन डॉ मनीष ने रतन को मुंबई जवान हॉस्पिटल ले जाने की सलाह दी । यहां आने पर हमें क्या मालूम था जो क्रूर अतीत हम दोनों छोड़ चुके थे उससे कभी छुटकारा नहीं मिला था । जिसके कदम के साथ जिन्दगी भर साथ चलना था उसी को नयी जान देने का काम अब नीतू तुम्हारे हाथ में है । अपनी बात को बेबाकी और बिना झिझक बयान करने के बाद मैंने रितु को आंसुओं में सराबोर पाया । अपने मरीजों को उम्मीद और जीवन दान देने वाली एक डाक्टर को पहली बार इतना टूटा हुआ देखा। उसके आंसू का एक एक कतरा उसकी बेगुनाही और बेबसी के सबूत थे ।

'' रितु जो भी हुआ, जैसे हुआ उसे नियति समझ अपने आप को दोष मत दो । मैंने कभी भी तुम्हें बेवफा और दोषी नहीं माना और रतन का भी यही सोचना था । अब हालत काफी बदल चुके हैं, क्या अभी भी तुम रतन को अपनाने को तैयार हो? तुम मुल्क की एक कामयाब डाक्टर हो और रतन का साहस, शौर्य और बलिदान देश के लिए मिसाल है ।लेकिन वर्त्तमान स्थिति में वह दूसरे पर निर्भर रहेगा । तुम्हें हक है कि सभी पहलू और सम्पूर्ण जीवन को ध्यान में रख फैसला करो । मैं ये नहीं पूछूँगी की तुमने अपना सरनेम सेठी से जवान क्यों रखा '' '' दीदी, क्या रतन मुझे माफ कर देगा?'' मैंने पूछा

रतन किस तरह रियेक्ट करेगा यह तुम्हारे निर्णय पर निर्भर करेगा । मैं हर हालत में तुम्हारे साथ हूँ, मेरी चिंता सिर्फ रतन की जिन्दगी में खुशियां तलाशना है साथ मैं तुम्हारी मान मर्यादा और सामाजिक मान्यता को भी नकार नहीं सकती ।'' दीदी ने अपनी धारणा बता दी । '' दीदी अब मैं रतन को कभी भी खोना नहीं चाहती, इसलिए आप का निर्देश सर्वोपरि है ।''

❑❑

धनिष्ठा
उम्र 8 वर्ष
कक्षा 6 बी
माइंड ट्री स्कूल
अम्बाला कैंट

शशि महाजन
नाइजीरिया

राम का न्याय

भाग–3

गोधूलि का समय था , सीता ने कुटिया के मुख्य द्वार से देखा , बहुत से ग्रामीण पुरुष धूल उड़ाते हुए चले आ रहे हैं , अर्थात , आज फिर वह चाहते हैं रामन्याय करें , रात को यहीं रहेंगे और सीता को उनके भोजन तथा शयन की व्यवस्था करनी होगी। उन्होंने भीतर जाकर राम और लक्ष्मण को बुलाया ताकि वेआगे बढ़कर अतिथियों की अगवानी कर सकें।स्वयं जाकर उन्होंने जल का मटका तथा कुछ कुल्हड़ बाहर रख दिए , ताकि अतिथि सबसे पहले अपनीप्यास बुझा सकें और हाथ मुहं धो सकें।राम और लक्ष्मण मुख्य द्वार पर स्वागत कर रहे थे , और सीता भीतरी द्वार पर अतिथियों से जल ग्रहण करने तथाजंगल से ताजा आये फल लेने का आग्रह कर रही थी।जब अंतिम अतिथि आ चुका तो राम और लक्ष्मण भी भीतर आ गए।लक्ष्मण भीतर से चटाइयां ले आये , राम बैठे तो सभी अतिथि उन्हें घेर कर बैठ गए।लक्ष्मण ने सीता के निकट जाकर कहा , " इनके भोजन की क्या व्यवस्था की जाये भाभी ।" मेरे विचार से तुम बाहर आग लगा दो , लकड़ियां भीतर बहुत हैं , मैं उस पर खिचड़ी चढ़ा देती हूँ , चावल ,घी,नमक और दाल कुटिया में हैं, आशा है पर्याप्त होंगे ,सारी रात आग को जलाये रखना होगा , इतने सारे प्राणी कुटिया में नहीं समा सकते, आग से गर्मी भी मिलेगी और वन्य प्राणियों से रक्षा भीहो जायगी।

" सीता ने कहा " सोने के लिए कुछ जन चटाईयों पर सो जायेंगे , और कुछ मृगछालों पर। " लक्ष्मण ने सुझाया " हाँ , उनकी व्यवथा में कठिनाई नहीं होनी चाहिए। " सीता बोलीं

" भैया के भक्त तो बढ़ते ही जा रहे हैं , अच्छा हो हम भोजन , शयन आदि की व्यवस्था को बढ़ाने का उपाय सोचें।

" लक्ष्मण सोचते हुए बोले

" वो भी हो जायगा। "कहकर सीता भीतर चल दी और लक्ष्मण भी लकड़ियां उठाने के लिए उनके पीछे चल दिए।बाहर राम कह रहे थे ," इससे पहले की हम वार्तालाप आरम्भ करें मैं चाहता हूँ हम सब संध्या के मंत्र पढ़ें और ईश्वर से मन की शांति की प्रार्थना करें। "

सबने आँखें बंद कर ली , और उस जंगल में मंत्रों का स्वर गूँज उठा , लक्ष्मण और सीता , एकदूसरे को देखकर मुस्करा दिए, वे जानते थे कि राम किसीभी चर्चा से पहले सबसे पहले मन की शांति की प्रार्थना करते थे , ताकि सत्य बिना भावनाओं में भटके , स्वयं उजागर हो सके। प्रार्थना के बाद , राम ने हाथ जोड़कर पूछा ," कहिये अतिथिगण , कैसे आना हुआ ?"

" राम , आप तो जानते हैं , इन जंगलों में कई गांव बसे हैं , कुछ गांव नदी किनारे हैं , कुछ पहाड़ पर हैं, कुछ घाटी में हैं , कहने का अर्थ है , प्रत्येक कीअपनी एक अर्थव्यवस्था है , जो उस गांव के लोगों के लिए पर्याप्त है , परन्तु दूसरे गांव के लोग घुसकर हमारे गांव में अपना सामान बेचने चले आते हैंजिससे हमारे गांव की अर्थव्यवस्था में अस्थिरिता आ जाती है , और बार बार युद्ध की स्थिति का निर्माण होता है।हम यहां बारह गांव के प्रतिनिधि आयेहैं आप निर्णय करें । " एक प्रौढ़ ने कहा

राम ने कहा , " कृपया जो लोग इसके पक्ष में हैं हाथ उठायें। "

छःलोगों ने हाथ उठा दिया ,राम मुस्करा दिए।

" तो पहले विपक्ष के लोग बोलें । " राम ने मुस्करा कर कहा ।" सुनिए राम , हमारा गांव नदी किनारे है , हम चाहते हैं हम मछलियां बाकी के गांवों में बेचें और बदले में इनके यहां जो है , खरीदें। " किसी ने खड़े होकर कहा ।

" और राम हमारे यहां की भूमि उपजाऊ है , हम अपनी उपज दूसरे गांवों में बेच कर इनका सामान लेना चाहते हैं। " दूसरे ने कहा बहुत अच्छे , " अब पक्ष के लोग बोलें ।" राम ने हाथ उठाकर कहा ।

" राम, हमारी जमीन पथरीली है , यदि ये लोग अपनी उपज बेचते हैं , तो हमारी उपज कोई नहीं लेता , वह इनसे मंहगी होती है , बाहर के लोग हमारीजीविका समाप्त कर रहे हैं।" एक युवक ने दुखी होते हुए कहा । " और राम , हमारे गांव की धरती हमें इतना देती है जो हमारे लिये पर्याप्त है , पर यह भी सही है कि हमारे कारीगर इतने कुशल नहीं हैं , बाहर वालेआकर हमारे कारीगरों की जीविका को नष्ट करते हैं। " एक वृद्ध ने युवक के समर्थन में कहा ।

राम ने उस व्यक्ति के कंधे पर हाथ रखते हुए, मुस्करा कर कहा , मैं समझ रहा हूँ। "

फिर थोड़ा रुककर राम दृढ़ता पूर्वक बोले, " मेरे विचार से एक व्यक्ति को यदि दूसरे गांव में अपना सामान बेचना है तो , उसे ऊँचे कर देने होंगे। "

किसी ने आपत्ति उठाते हुए कहा , " राम , व्यापर है तो सबकुछ है , लोग इसतरह से एक दूसरे के रहन सहन , भाषा , विचारों को जानते हैं। "

" और इससे युद्ध भी होते हैं। धनी गांव निर्धन गांवों को हथियार बेचकर और समृद्ध हो जाते हैं। " पहले वाले युवक ने विरोध के स्वर में कहा ।

राम ने कहा " यह सही है आवश्यकता से अधिक धन पाने की लालसा ही दूसरों के अधिकार छीनने की भावना को जन्म देती है। "

" पर राम मनुष्य इस लालसा के साथ ही जन्म लेता है।" विरोधी दल में से किसी ने दार्शनिकता पूर्वक कहा ।

राम यकायक खड़े हो गए , उनके चेहरे पर तेज था और आँखों में दृढ़ता " तो मनुष्य का युद्ध इस भावना के साथ होना चाहिये, न कि एक दूसरे के साथ ।"

सीता ने आकर कहा , भोजन तैयार है , आप सब हाथ धोकर पंक्ति मैं बैठ जाएँ। "

" हमें भोजन नहीं न्याय चाहिए। क्या आज करुणामय राम न्याय देने मैं असमर्थ हैं ?" किसी अतिथि ने चुनौती देते हुए कहा ।

" यह आप क्या कह रहे हैं अतिथि ?" लक्ष्मण ने क्रोध से कहा।

" राम न्याय देगा , पर उससे पहले आप सीता की रसोई से कुछ ग्रहण करें ।" राम ने बिना संयम खोये , हाथ जोड़ते हुए कहा।सभी शांत हो गए, राम , सीता , लक्ष्मण तीनों ने भोजन परोसा , सीता ने देखा , खिचड़ी समाप्ति पर है , पर अतिथि अभी भूखे हैं , उसने राम की औरचिंता से देखा , राम के चेहरे पर पीड़ा उभर आई ।उन्होंने हाथ जोड़कर कहा , " आज राम का सामर्थ्य बस इतना ही है। "

" राम तुम्हारे आग्रहवश हम बैठे थे , वरना हमारी भूख तो तुम्हारे स्नेह से ही मिट गई थी। " किसी ने कहा राम, सीता , और लक्ष्मण , तीनों ने हाथ जोड़ दिए।सोने के लिए चटाइयां तथा मृगछालाएँ बिछा दी गई " राम , हमें न्याय दो , सुबह सूर्य उदय से पहले हमें चल देना है।

" पहले वाले वृद्ध ने कहा ।

" मेरा न्याय यह है कि यदि कोई गांव अपनी सीमाओं को व्यापर के लिए नहीं खोलना चाहता तो दूसरों को उसके इस चयन का सम्मान करना चाहिये ।" राम के निश्चयपूर्वक कहा कुछ लोग राम के इस निर्णय से इतने प्रस्सन हुए कि उन्हें कंधों पर उठा लिया ।राम के आग्रह पर नीचे उतारा तो जय जयकार के नारों से जंगल को गुंजायमान कर डाला।राम ने उन्हें शांत कराते हुए कहा ," परन्तु मेरी बात अभी समाप्त नहीं हुई है। "

सब शांत होकर उनके आगे बोलने की प्रतीक्षा करने लगे ।

राम ने कहा , " मैंने इसलिए यह निर्णय दिया है , क्योंकि मैं नहीं चाहता मनुष्य के जीवन का ध्येय धन अर्जित करना हो। मैं चाहता हूँ, हमारे युग के मनुष्यके जीवन का ध्येय शांति प्राप्त करना हो , ताकि सब मानसिक तथा बौद्धिक ऊंचाइयों को छू सकें। "

राम की वाणी मैं इतनी आद्रता थी कि लग रहा था जैसे हवा भी दम साधे उनके शब्दों की प्रतीक्षा कर रहा थी।

राम ने कहा , " प्रत्येक गांव अपनी सीमा पर गुरुकुल बनवाये , जहाँ ओजस्वी गुरु सभी विषयों पर शिक्षा दें, मनोरंजन ग्रह बनवायें, स्वतंत्र व्यापर के स्थानपर स्वतंत्र शिक्षा और मनोरंजन हो, इसतरह से लोग आपस में मेलजोल बढ़ाएं , और एक ऐसे युग का निर्माण करें जिसमें हथियारों की आवश्यकता न रहे।राम के इस विचार ने सबका मन मोह लिया। एकांत में राम ने सीता से पूछा , " कैसा लगा मेरा निर्णय ?"

" ठीक आपकी तरह मोहक। " सीता ने मुस्करा कर कहा ," लक्ष्मण भी बहुत प्रसन थे , पर आज उन्हें भी भूखा सोना पड़ा। "

" कोई बात नहीं , कल यह जंगल हमें भरपूर देगा। " राम ने आसमान देखते हुए स्वप्नमयी आँखों से कहा ।

❑❑

सीमा वर्णिका,

दूधो नहाओ पूतो फलो

दूधो नहाओ पूतो फलो इस आशीर्वाद से राधा के तन बदन में आग लग जाती। विमल से उसकी शादी हुई दो वर्ष बीत चुके थे। आज जिंदगी के जिस मोड़ पर वह खड़ी थी वह समझ नहीं पाती कि किसको जिम्मेदार ठहराए अपने भाग्य को या माता–पिता की विवशता को।

कोरोना काल की विसंगतियों का शिकार उसका परिवार भी हुआ था। प्राइवेट कंपनी में उसके पिताजी नौकरी करते थे। आपदा की मार से त्रस्त कंपनी घाटा झेल नहीं पाई बंद हो गयी। उसके पिता जी बेरोजगार हो गए। तीन बेटियों व एक बेटे का खर्चा माता–पिता कैसे झेल पाते कहीं कोई नौकरी भी नहीं मिल रही थी। पिताजी ने घर के बाहर एक छोटी सी परचून की दुकान खोल ली थी बस किसी तरह गुजर बसर हो रही थी। बेटियों की उम्र बढ़ रही थी माता–पिता जी चिंता में उम्र से पहले बूढ़े हो चुके थे। एक दिन शकुंतला चाची एक रिश्ता लेकर आई।

पिताजी को बता रही थी उनका अपना मकान खेत दुकान गाड़ी सब कुछ है संपन्न परिवार का इकलौता लड़का है जोर दे रही थी ऐसा रिश्ता फिर नहीं मिलेगा कोई माँग जाँच भी नहीं है राधा बिटिया की शादी कर दो। अंधे को चाहिए क्या आँखें दो।

चट मंगनी पट ब्याह कर राधा ससुराल आ गई। विमल शांत रहते लगता नया रिश्ता है या स्वभाव ऐसा ही होगा। कई दिन रस्मो रिवाज मन्नतों पूजा पाठ आदि में निकल गए। धीरे–धीरे राज खुलने लगे थे भीड़भाड़ छट गई थी। पग फेरे की रस्म भी अफरा तफरी में करा दी गई। विमल नहीं गए थे रिश्ते के देवर विदा कर लाए थे। माता–पिता जी से वह क्या कहती सब ठीक है यह कहकर उसने उनको आश्वस्त कर दिया था।

राधा के पैरों तले जमीन खिसक चुकी थी जब उसे पता चला कि उसका पति मंदबुद्धि है चुप्पी के पीछे उसकी गंभीरता नहीं बल्कि जन्मजात कमजोरी है।

ससुराल वाले वारिस की बाट जोहने लगे थे। राधा का मन नहीं मानता कि वह मूर्खों की कतार खड़ी करे कुछ भी हो –

लघुकथा

अनुवांशिकता का असर तो पड़ता ही है। इसी ऊहापोह में वह परेशान रहने लगी थी।

सामने सामने दैनिक समाचार पत्र पड़ा देख वह उसके पन्ने पलटने लगी उसकी निगाह एक विज्ञापन पर ठहर गई एक नए अस्पताल का उद्घाटन हुआ था उसके दिमाग में एक विचार कौंधा। सासू माँ बहुत दिनों से कह रही थीं डॉक्टर को दिखा लो काहे बच्चा नहीं हो रहा। बस वह डॉक्टर को दिखाने के बहाने से अस्पताल जा पहुँची।

'डॉ साहिब मुझे विट्रो फर्टिलाइजेशन कराना है। सुना है आपके यहां यह सुविधा उपलब्ध है , 'राधा ने डॉक्टर को सारी बात बताई। डॉक्टर ने स्पर्म बैंक की सलाह दी कुछ आवश्यक प्रक्रियाओं से गुजर कर कुछ दिनों बाद राधा को गर्भवती होने की सूचना की पुष्टि हो गई थी। आज राधा आश्वस्त थी । उसने सासू माँ के पैर छुए उनका 'दूधो नहाओ पूतो फलो' का आशीर्वाद आज उसे खल नहीं रहा था।

❑❑

नायशा देवी, 13 वर्ष,
दून इंटरनेशनल स्कूल,
पताः 203/टाइप 5/ए ब्लॉक।
एम्स हाउसिंग कॉम्प्लेक्स,
एम्स अस्पताल के पास, पात्रापारा,
भुवनेश्वर, ओडिशा

कविता

वर्षा कुमारी
अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय
नालंदा

मैं गौतम बुद्ध नहीं होता

ननिहाल देवदह जाने के क्रम में
यदि मां को प्रसव नहीं होता
वैसाख पूर्णिमा का सूरज
अगर मेरे उपर न दहका होता
जन्मोपरांत सात दिन बाद
मेरी मां फा निधन नहीं होता
शैशव पालन, वात्सल्य लाड़, प्यार
अगर मौसी गौतमी से
नहीं मिला होता
तो मैं गौतम बुद्ध नहीं होता।

संसार में अनुकंपा का भाव
जो प्रकृति ने नहीं भरा होता
इंसान बचपन की याद लिए
दो कदम यदि न चला होता
शैशव बच्चों की हर्षध्वनि में
यदि हृदयग्राही प्रेम नहीं होता
तो मैं गौतम बुद्ध नहीं होता।

सत्य–असत्य, न्याय – अन्याय का
यदि जीवन में सबक नहीं होता
देवदत के शर से लथपथ होकर
अगर वह हंस गिरा नहीं होता
अपकार से है परोपकार श्रेष्ठ
ये अंतस में उतरा नहीं होता
तो मैं गौतम बुद्ध नहीं होता।

वात्सल्य पिता शुद्धोधन ने
तीन ऋतुतुमहल न बनाया होता
ऋतु बसंत, उपवन दर्शन
यदि जो ये दुर्लभ होता
बुढ़ापे की झुर्रियां परिलक्षित
मुख पर रोग नैराश्य नहीं होता
धिक्कार जवानी 'जीवन सोख '
सिद्वार्थ के मुख से नहीं निकला होता
तो मैं गौतम बुद्ध नहीं होता।

छः वर्ष शरीर को दे कष्ट
वन – बाग नगर न भटका होता
वीणा की तार न कसो न छोड़ो
ये गीत स्त्रियों की न सुना होता
अति किसी बात की नहीं अच्छी
ये बात हमें न जँचा होता
सुरीले स्वर की राज जानकर
अगर मध्यम मार्ग नहीं पकड़ा होता
तो मैं गौतम बुद्ध नहीं होता।

बैसाखी पूर्णिमा का दिनमान
आज फिर से न चमका होता
सुजाता की मन्नत पूर्ण अभिलाषा
अगर मेरे लिए दुआ न बना होता
इस अवनी पर बोधगया का
आज कोई इतिहास नहीं होता
सिद्धार्थ से 'भगवान बुद्ध' का जन्म
इस लोक में अबतक हुआ नहीं होता
तो मैं गौतम बुद्ध नहीं होता।

रुग्न संसार की सुन कराह
मन मेरा व्यथित नहीं होता
चार कंधों पर शव का भार लिए
रोते – बिलखते
परिजन न देखा होता
'रामसत्य' है यही संसारगत है
ये मर्सिया न अगर सुना होता
लोकभार उठाये मौन यशोधरा की
अगर मेरे जीवन में
साथ नहीं मिला होता
तो मैं गौतम बुद्ध नहीं होता।

मनोरम हिरण्यवती तट पर
यदि कुशीनगर वन न होता
तब निर्वाण वहाँ पर बुद्धदेव का
निश्चय हीं नहीं हुआ होता
जन–जीवन शांति फैलाने
तब निर्वैर तथागत न आता
तो मैं तो मैं गौतम बुद्ध नहीं होता ।

❑❑

रेणुका /उम्र 10/कक्षा 6

सरोज आहूजा
पानीपत

मुझे अच्छा लगता है

आज मैं 73
वर्ष की हो गई हूँ
सबको लगता है मैं बूढ़ी हो गई हूँ
पर मैं...
आज भी पूर्णरूपेण स्वस्थ हूँ
खूब घूमती हूँ मस्ती करती हूँ
किट्टी पार्टी करती हूँ मीटिंग्स में जाती हूँ
पर..जब मै सीढ़ी चढ़ती हूँ तो
मेरे बच्चे मेरा हाथ पकड़ लेते हैं
तब मुझे अच्छा लगता है।
मैं कहीं जाती हूँ तो ..
मेरे बच्चे हाथ पकड़कर गाड़ी में बैठाते हैं
और निकलते वक्त तो मेरे दोनों हाथ
पकड़ लेते हैं और
कार के दरवाजे को भी
अपने पीछे कर लेते हैं ताकि
मुझे उतरने में तकलीफ न हो
ये मुझे अच्छा लगता है।
मैं चार ईंच की चप्पल पहनकर
खूब अच्छे से चलती हूँ पर..
मेरे बच्चे एक छोटे बच्चे की तरह
मेरा हाथ पकड़कर
दूसरे हाथ से आनेवाली गाड़ी को
रोकने का इशारा करके
मुझे सड़क पार करवाते हैं
तब मुझे अच्छा लगता है।
मेरी बहुएँ मेरी परवाह करती हैं।
मेरा पूरा ख्याल रखती हैं और
हरदम नये नये फैशन के कपड़े
पहनने को कहती हैं
मुझे नये जमाने से अपडेट रखती हैं
अपने साथ हर जगह घूमने ले जाती हैं
चाट पकौड़ी खिलातीं हैं
खूब मजे कराती हैं
ये सब मुझे बहुत अच्छा लगता है।
मैं जब बीमार होती हूँ
सब इकठ्ठे हो जाते हैं
डाक्टर पास ले जाते हैं
खूद दवाई देते हैं
तब....
मुझे बहुत–बहुत बहुत अच्छा लगता है।
सब मेरी परवाह करते हैं ,
मुझे बहुत प्यार करते हैं
ये देख मुझे लगता है
मैं संसार की सबसे खुश किस्मत माँ हूँ
ये सोचकर मुझे अच्छा लगता है।

❑❑

संजय शुक्ल
कोलकाता

सरस्वती वंदना

हे ज्ञान दायिनी सरस्वती ।
मां हम सबका कल्याण करो।।
तेरे द्वारे आ बैठे हैं।
अब ज्ञान भरो और तिमिर हरो।।

हो ज्ञान पुंज की धारा तुम।
तुमसे ही बुद्धि विवेक मिले।
तेरे द्वारा हे ज्ञान देवि,
चहुंदिशी ही ज्योति प्रकाश खिले।
सब तिमिर मिटा दो जीवन से
मानवता का कल्याण करो।।

खुशबू भर जाए जीवन में।
और बागों में मकरंद भरो।
सब निर्विकार हों तन मन से।
निज जीवन का अभिमान हरो।।

पुष्पित हो जाएं वन उपवन
जग से मिट जाए अंधियारा।।
लहराए लालिमा अंबर तक।
मां तेरा धवल परिधान रहे।
सब ओर रहे भाई चारा।
चमका दो मां ए जग सारा।
मिट जाए तिमिर अमावस का।
जग में मां अक्षर ज्ञान भरो।।

मिट जाए कलह इस दुनिया से।
विद्वेष हरो व्यभिचार हरो।
अपनी वीणा झंकृत करके ,
मानवता का संचार करो।

न रहे कोई भूखा प्यासा।
कर दो पूरी मां अभिलाषा।
कर दो प्रवाह अब गंगा की
नूतनता का आह्वान करो।।

तेरे प्रकाश से फैला है
सबके जीवन में उंजियारा।
कुछ ध्यान करो अज्ञानी पर ।
संजय में ज्ञान विवेक भरो।।

❑❑

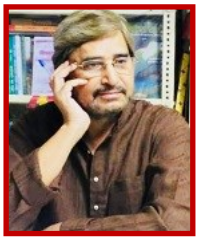

डॉ हरीश नवल
नई दिल्ली

हाफ लाइनर

दोस्तो मेरे घर के सिरहाने एक खूबसूरत पुष्प वृक्ष है जिसमे बरसों बरस सुंदर पुष्प ि खलते रहे।

2 साल पहले मैने वहां की बांस की दीवार के पास मालती की बेल रोपी जो देखते के देखते फैलती गई और उस वृक्ष का सहारा लेकर बढ़ने लगी।

हम विदेश चले गए कुछ माह बाद लौटे तो देखा कि मालती की बेल वृक्ष के शीर्ष तक पहुंच रही थी।हम उसे कटवाना चाहते थे पर कटवा नहीं पाए ,वृक्ष पर भी ध्यान नही दिया और बेल पूरे वृक्ष पर आच्छादित हो गई।

अब वह वृक्ष बेलमय हो चुका है।पता नही चलता कि मालती के पत्तों और पुष्पगुछों से ढका छिपा वृक्ष कैसा है ,बेल ही बेल नजर आती है वृक्ष नही।
क्या सचमुच अब उस वृक्ष का अस्तित्व नही रहा।

क्या समाज में ऐसा नही होता कि जो सहारा देता है कभी कभी सहारा लेने वाला उसके ध्यान न देने पर उसके सिर चढ़ जाता है और उसे ऐसा जकड़ लेता है कि उसका वजूद सहारा देने वाले के स्थान पर
लेने वाला सा बनने लगता है।

जिनको सम्बल देकर प्रेम से पोषित होने दिया जाता है ,कभी कभी वे भी ऐसे ही आच्छादित हो जाते हैं और आश्रयदाता को ही मानो आश्रय देते प्रतीत होते हैं।यह सत्य का भ्रम लगने लगता है।

आपने भी क्या ऐसे लम्बे बौने देखे हैं ?

❑❑

धारावाहिक उपन्यास

तलाश अस्तित्व की

भाग–6/7

अजय शर्मा
जयपुर,राजस्थान

सही सलामत वापस अपने कर्म क्षेत्र में पहुंच गया था यश। अपने फ्लैट पर कमरे में जाकर बिस्तर पर आराम के लिए तनिक लेटा ही था कि दीवार पर वही चिर परिचित परछाई उभर आई और कानों में वही जलतरंग बजे उठे, ''शाबाश यश, बहुत जल्दी घर से लौट आए तुम ।वहां मन नहीं लगा क्या?लगेगा भी कैसे ? तुम्हारा तन और मन तो पूरी तरह से मेरे नियंत्रण में है।वैसे सच कहूं तो मुझे बहुत पसंद आते हैं वे लोग जिनमें अपने लक्ष्य को लेकर एक जुनून होता है। सच पूछा जाए तो तुम भी वैसे ही एक नौजवान हो। इसीलिए तुम पर मेरी खास मेहरबानी हुई है। और तुम्हें मैंने एक बहुत खास लेकिन खतरनाक मिशन के लिए चुना है।''

यश ने पागलों की तरह चीख कर कहा, ''प्लीज मुझे बता दो ,कि तुम कौन हो? मेरी जिंदगी में क्यों आई हो? और मुझसे क्या करवाना चाहती हो?''हा हा हा हा, कमरा मधुर ठहाकों से गूंज उठा।''तुम्हारे पहले दो सवालों का जवाब देना मैं जरूरी नहीं समझती। लेकिन तुम्हारे तीसरे सवाल का जवाब यह है कि मैंने तुम्हें एक खास मिशन के लिए चुना है। तुम्हें मेरे दिए हुए तीन टास्क पूरे करने होंगे। उसके बाद तुम पूरी तरह से आजाद हो । घर जाओ, शादी करो, माता पिता का सपना पूरा करो, मेधा का भविष्य संवारो। करोड़पति बनकर ऐश करो।

और हां, तुम्हारे इस टास्क में मैं तुम्हारा पूरा साथ दूंगी, अपनी काली रहस्यमयी ताकतों के साथ।बस यह समझ लो कि जहां तुम्हारी सीमा आ जाएगी वहां मेरी भूमिका शुरू होगी ।और जहां मैं रुक जाऊंगी, वहां तुम्हें आगे बढ़ कर उस काम को पूरा करना होगा। कल सुबह तुम्हारी टेबल पर एक नीला लिफाफा रखा होगा। जिसमें सब कुछ लिखा होगा कि तुम्हारा पहला टास्क क्या है? और तुम्हें उसे कैसे पूरा करना है? शुभ रात्रि।'',कह कर एक रहस्यमयी मुस्कान फेंक कर वह अनजान आकृति लुप्त हो गई और छोड़ गई कुछ अनुत्तरित सवाल ,जिनके हल ढूंढते ढूंढते कब यश नींद के आगोश में चला गया, उसे पता ही नहीं चला?

सुबह जब आंख खुली तो यश को सब कुछ सामान्य नजर आया वही फ्लैट, वही सोसाइटी ,वही सामने गार्डन ,वही कंक्रीट का जंगल। नहा धोकर तैयार होकर जब आया तब तक उसकी कुक खाना बनाकर जा चुकी थी। खाना खत्म करके हाथ धोए ही थे कि सामने रखी टेबल पर एक नीला लिफाफा नजर आया। यश का दिल जोरों से धड़क उठा।

कांपते हुए हाथों से उसने लिफाफा खोला तो उसमें बहुत खुबसूरत अक्षरों में लिखा हुआ था–''आज रात को पब्लिक लाइब्रेरी के चार नंबर होल में रखी ,52 वें नंबर की अलमारी के तीसरे खाने में, ऊपर से चौथी किताब जो लाल कवर की है, और सबसे बांयी तरफ रखी है ,उसे तुम्हें मेरे लिए लेकर आना है। उस पर एक तीर का निशान अंकित है ।यह काम आज रात को ही पूरा करना है।

ठीक 10 बजे तुम्हारे दरवाजे पर एक नीली कार आकर खड़ी हो जाएगी। जिसमें नीली वर्दी पहने एक ड्राइवर बैठा होगा। तुम्हें एक शब्द भी नहीं बोलना है। सब कुछ अपने आप ही मेरी योजना के अनुसार होता जाएगा। और हां रास्ते में कोई पुलिस या लाइब्रेरी में कोई गार्ड कोई नहीं मिलेगा। सारे दरवाजे खुले मिलेंगे, अलमारी पर भी कोई ताला नहीं होगा। यह विशेष व्यवस्था रात के 10.00 से 12.00 के बीच रहेगी। इस 2 घंटे में तुम अपना काम पूरा करके आ जाना और वह किताब इसी टेबल पर लाकर रख देना। बस यही तुम्हारा पहला टास्क है। शुभकामनाएं।''

यश को समझ नहीं आया कि आखिर वह रहस्यमयी सत्ता उससे क्या करवाना चाहती है, जब सारी शक्तियां उसके पास हैं। और सब कुछ उसके मुताबिक हो रहा है तो फिर उसको अपना काम खुद करने में क्या समस्या है? उसने उसे क्यों चुना है? और उस किताब में आखिर ऐसा क्या है जिसके लिए वह यह सब कर रही है ।उस किताब को पाने के पीछे आखिर उसका क्या लक्ष्य है? सवालों के भंवर में फंसकर रह गया यश, लेकिन क्या करता बचने का कोई उपाय भी तो नहीं था। आखिर उसे यह काम तो पूरा करना ही था ।और देखा जाए तो कोई रिस्क वाली बात भी नहीं बस रहस्य अवश्य था।

यश के लिए समय बिताना बहुत मुश्किल हो गया। दिन भर इधर–उधर घूमता रहा। किसी काम में मन नहीं लगा। शाम को लौट कर फ्लैट पर आ गया। थोड़ा बहुत खा पीकर कोई किताब लेकर पढ़ने बैठ गया। उसकी आंखें दरवाजे पर लगी हुई थी।

जैसे ही घड़ी ने रात के 10:00 बजाए, उसे फ्लैट के नीचे किसी गाड़ी के आने की आवाज आई। वही नीले रंग की गाड़ी थी ।यश चुपचाप आकर बैठ गया। उसके बैठते ही ड्राइवर ने गाड़ी चालू कर दी । शहर की सुनसान सड़कों पर चलते हुए कुछ समय के बाद गाड़ी लाइब्रेरी की बिल्डिंग के सामने आकर खड़ी हो गई। बिल्डिंग का छोटा दरवाजा खुला था। 10: 30बज गए थे। यश चुपचाप बिल्डिंग के अंदर प्रवेश कर गया।

आश्चर्य की बात कि वहां कोई नहीं था। 4 नंबर हॉल के अंदर रखी 52नंबर की अलमारी का ताला भी खुला था। यश ने अलमारी के तीसरे खाने में ऊपर से चौथे नंबर की किताब जिसका रंग लाल था और जिसके ऊपर तीर का निशान था ,को कांपते हाथों से उठा लिया। किताब को स्पर्श करते ही उसे एक अजीब सी झनझनाहट का एहसास हुआ मानो किसी रूहानी ताकत को छू लिया है।

यश ने चुपचाप उस किताब को अपनी पीठ पर रखे काले थैले में रखा और बिना मुड़ कर पीछे देखे चुपचाप आकर गाड़ी में बैठ गया। उसके बैठते ही ड्राइवर ने गाड़ी स्टार्ट कर दी और शहर की सुनसान सड़कों पर चलने लगा । गाड़ी में एक अजीब सा सन्नाटा पसरा हुआ था। लगभग 11:30 बजे ड्राइवर ने यश को उसके फ्लैट के नीचे उतार दिया और चुपचाप गाड़ी लेकर चला गया। यश अपने कमरे में आया और चुपचाप टेबल पर वह किताब रख दी। किताब को स्पर्श करने की हिम्मत उसमें नहीं थी । वह सोच रहा था कि आखिर इस सब के पीछे क्या रहस्य है? सोचते सोचते 12:00 बज गए और कुछ समय बाद उसको नींद की झपकी आने लगी । लेकिन तभी सड़कों पर सायरन की आवाज सुनकर उसकी नींद खुल गई। पुलिस की गाड़ियां तेजी से सड़क पर दौड़ती जा रही थीं । उसकी समझ में नहीं आया कि क्या बात हो गई? शायद रहस्यमयी आकृति के जादू का समय समाप्त हो गया था और पुलिस अब अप. ने रूटीन वर्क पर चल रही थी। कुछ समय के बाद यश गहरी नींद के आगोश में चला गया। उसे सपना आया जिसमे रहस्यमयी आकृति ने अपना पहला टास्क

रामा तक्षक,
नीदरलैंड

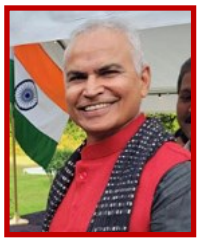

देव नागरी लिपि : दार्शनिक पक्ष

पूरा होने पर उसे बधाई दी थी और उसके सिरहाने एक लाल बैग रख दिया था।

सुबह जब आंख खुली तो यश ने देखा कि उसके सिरहाने वास्तव में एक लाल बैग रखा हुआ था। उत्सुकता वश उसने उसे खोला तो उसकी आंखें फटी की फटी रह गई। बैग के अंदर सोने के बिस्किट रखे हुए थे। ठीक पारले जी बिस्किट की शेप और पैकिंग में। यश को आश्चर्य का एक जबरदस्त झटका लगा। उसे समझ में नहीं आया कि उसकी जिंदगी में आखिर क्या हो रहा है, अच्छा कहा जाए या बुरा। आखिर उसका नुकसान ही क्या है? इतने साधारण से काम के लिए इतना बड़ा इनाम? और उसे ही इस काम के लिए क्यों चुना गया है, यह सब बातें यश के समझ से बाहर की थी। उसने उठकर बिस्किट्स को सुरक्षित जगह पर रखा और अपनी रोजाना की दिनचर्या में व्यस्त हो गया।

आज थोड़ा बहुत कंपनी का काम भी था ।और उसे अपने कुछ साथियों से भी मिलना था। आकाश के घर एक छोटी सी पार्टी का इंतजाम किया गया था। जिसमें उसका जाना जरूरी था आखिर आकाश ने बहुत साथ निभाया उसका और इसके अल. ावा उसका मन भी बहल जाएगा और थोड़ा टाइम भी पास हो जाएगा। तैयार होकर थोड़ा नाश्ता करके यश अपने घर से ऑफिस के लिए रवाना हो गया। कुछ जरूरी काम निपटा कर वो मार्केट की तरफ निकल गया।

जैसे ही शाम हुई सब लोग आकाश के घर इकट्ठा हो गए। एक बहुत शानदार पार्टी हुई। म्यूजिक सिस्टम भी काफी अच्छा था। सभी लोगों ने बहुत एंजॉय किया ले. किन यश का मन कुछ खोया खोया सा था। आकाश ने नोटिस भी किया और उससे पूछना भी चाहा लेकिन यश ने कोई जवाब नहीं दिया। सब अपनी मस्ती में मस्त थे। लेकिन यश का मन कहीं दूर अपने भविष्य में विचरण कर रहा था।

आखिर उस रहस्यमयी आकृति का अगला कदम क्या होगा और उसे अगला टास्क क्या करना होगा, इसी के इर्द–गिर्द उसकी सोच सिमट कर रह गई थी। पार्टी खत्म होते ही अपने घर आया और सोने चला गया। नींद उसकी आंखों से कोसों दूर थी। काफी देर तक बिस्तर पर करवटें बदलते रहा। अंत में गहरी नींद के आगोश में कब चला गया उसे खुद पता नहीं चला।

❑❑

विनोबा भावे को गांधीवादी कहा जाता है। वे विज्ञान और गणित में निपुण छात्र थे। लेकिन जीवन और जगत को जानने की प्यास में, वे हिमालय की राह चल पड़े थे। हिमालय की राह जब वे रेल में थे तो वे शिव का धाम, काशी में ही उतर गये। उन्हें पता चला कि महात्मा गाँधी काशी में हैं। काशी में उन्होंने गाँधीजी को खबरों में पढ़ा और पत्र लिख भेजा। इस पत्र का उत्तर मिला और वे गाँधी जी से मिलने वर्धा पहुँच गये। उनकी हिमालय की यात्रा की दिशा देश सेवा में बदल गई। कुछ ही समय बाद वे स्वतंत्रता आन्दोलन में कूद पड़े।

मैंने विनोबा भावे को आन लाइन उपलब्ध चित्रों में देखा है। एक शांत, निर्भीकता और भोलापन उनके चेहरे का आकर्षण है। मुझे लगा कि इस व्यक्तित्व को पढ़ने के लिए अन्तदृष्टि चाहिए। विनोबा भावे का जन्म 11 सितम्बर 1895 को हुआ था। उनका जन्म का नाम विनायक था। उसने माँ का सा स्वभाव पाया था। विनोबा को अध्यात्म के संस्कार और भक्ति–वेदांत की ओर ले जाने का श्रेय, बचपन में विनोबा के मन में, संन्यास और वैराग्य की प्रेरणा जगाने में, उनकी मां रुक्मिणी बाई को जाता है।

नागरी लिपि के महत्व को रेखांकित करते हुए आचार्य विनोबा भावे ने कहा था ''हिंदुस्तान की एकता के लिए हिंदी भाषा जितना काम देगी, उससे बहुत अधिक काम देवनागरी देगी। इसलिए मैं चाहता हूं कि सभी भाषाएँ देवनागरी में भी लिखी जाएं। सभी लिपियाँ चलें, लेकिन साथ साथ देवनागरी का भी प्रयोग किया जाये।''

विनोबा भावे ''नागरी ही'' नहीं ''नागरी भी'' चाहते थे। उन्हीं की पहल और प्रेरणा से 1975 में नागरी लिपि परिषद की स्थापना हुई थी। नागरी लिपि परिषद, भारत की एक अकेली ऐसी संस्था है, जो नागरी लिपि के प्रचार प्रसार का अनवरत काम कर रही है।

पं जवाहर लाल नेहरू की अध्यक्षता में,1961 में, सम्पन्न मुख्य मंत्रियों के सम्मेलन में, प्रस्ताव रखा गया कि ''भारत की सभी भाषाओं के लिए एक लिपि अपनाना वांछनीय हैं। इतना ही नहीं, यह सब भाषाओं को जोड़ने वा. ली एक मजबूत कड़ी का काम करेगी और देश के एकीकरण में सहायक होगी। यानि जोड़ लिपि का काम करेगी।

नागरी लिपि का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है कि देवनागरी लिपि में सभी गुण हैं। इन गुणों के ठोस आधार पर, यह लिपि सभी भारतीय भाषाओं को जोड़ने में सक्षम है। इसी कारण इस लिपि को संसार की सबसे अधिक वैज्ञानिक और ध्वन्यात्मक लिपि कहा जाता है।

यहाँ मुझे एक इटालियन यात्री फिलिप्पो सास्सेती याद आते हैं। उनका उल्लेख करना भी जरूरी है। वे एक इटालियन नागरिक थे। वे पुर्तगाली कम्पनी में अधिकारी थे। वे पुर्तगाली कम्पनी के अधिकारी के रूप में, 1583 –1588 में कोचीन, भारत में रहे। उन्होंने, भारत में रहकर, संस्कृत भी सीखी। भारत में रहते हुए उन्होंने बहुत सारे पत्र इटालियन भाषा में लिखे हैं। उनके ये सभी उपलब्ध पत्र, भारतीय पत्र (स्मजजमतम प्दकपंदम) के शीर्षक के साथ 1942 में प्रकाशित हुए। इन पत्रों को एनाउदी प्रकाशन ने प्रकाशित किया था। मुझे यह पुस्तक सितम्बर 2022 में, इटली के पेरूजा शहर के साप्ताहिक बाजार में, दिखाई पड़ी तो मैंने इसे खरीद लिया। इन दिनों मैं इन इटालियन भाषा में लिखे पत्रों का हिंदी अनुवाद कर रहा हूँ।

इस पुस्तक के पृष्ठ 49 पर, पत्र क्रम 10 में, फिल्लिपो सास्सेति लिखते हैं ''प्लिनी (इतालवी दार्शनिक) ने भी ब्राह्मणों के बारे में उल्लेख किया है। वह इन पूर्वी लोगों के व्यवहार के बारे में विस्तार से लिखता है। प्लिनी कहते हैं: ब्राह्मण, शब्दावली और ध्वनि के संकलन कर्ता हैं। वे अपनी भाषा, संस्कृत में, बहुत निपुण हैं।''

इसी पत्र में अगले पृष्ठ 50 पर वे लिखते हैं ''इनकी भाषा स्वयं में बहुत ही रमणीय और सुन्दर ध्वनि देने वाली है। इस भाषा में 53 वर्ण हैं। जिनमें से सभी बोले और वैसे ही लिखे जाते हैं। इन सभी वर्णों का जन्म मुँह और जीभ की विभिन्न, ध्वनियों और गतिविधियों से होता है। ये हमारी सभी अवधारणाओं को आसानी से अपनी भाषा में अनुवादित करते हैं। ये लोग मानते हैं

कि हमारी भाषा के वर्णों की संख्या, इनके वर्णों से आधी या उससे भी अधिक की कमी के कारण, हम अपनी ही भाषा में इनके जैसा उपयोग नहीं कर सकते।''

दूसरे शब्दों में यदि मैं यह कहूं तो अतिशयोक्ति न होगी कि मानव देह की, मानव मन की अभिव्यक्ति की सबसे सशक्त लिपि है नागरी। मानव द्वारा उच्चरित हर स्वर को शब्दों में, शक्ल देने की क्षमता है नागरी लिपि में।

इन अर्थों में देवनागरी लिपि में छिपे दर्शन को समझना जरूरी है। हम सब भलीभाँति जानते हैं कि वचन और अर्थ पूरक हैं। शब्द हो और उसका अर्थ न हो तो उस शब्द का कोई औचित्य नहीं है। अर्थ हो और उसे शब्दों में बताया न जा सके या अर्थ को शब्दों में परिभाषित न किया जा सके तो उसका भी कोई औचित्य नहीं है।

वाक और अर्थ का जोड़ अन्तर्दृष्टि के धरातल से है। वाक, अर्थ और अन्तर्दृष्टि के धरातल का पुल अनुभूति है। अनुभूत ही मानव के चिंतन की जड़ों को सींचता और पोषित करता है। यह सब आपकी इन्द्रियों और साँसों से जुड़ा है। हर साँस हमारे होने, हमारे अस्तित्व के मूल तक पहुँच बनाती है। मानव देह के अस्तित्व का मूल है उसका अधिष्ठान चक्र। जिसे योग ने मूलाधार चक्र कहा है। मानव देह में, साँसों के बीच विद्यमान है एक सतत ऊर्जा। वही जीवन है। वही देह की कान्ति है।

संवाद के लिए बोलना आवश्यक है। लेखन के लिए भाषा आवश्यक है। भाषा के लिए शब्द आवश्यक हैं। शब्द लेखन के लिए वर्ण का होना जरूरी है। वर्ण के लिए ध्वनि आवश्यक है। देह से ध्वनि को प्रकट करने के लिए ऊर्जा आवश्यक है। ऊर्जा के लिए देह के तल आवश्यक हैं। विभिन्न ध्वनियाँ निकालने के लिए विभिन्न अंग और तल आवश्यक हैं। यानि ध्वनियों की तरंगों को विभिन्न धरातल चाहिए। ध्वनियों के प्रकटीकरण के लिए विभिन्न तल, विभिन्न दिशाएँ, विभिन्न शिराएँ और निकास द्वार चाहिए। इससे भी आगे ध्वनि की ऊर्जा को खुला आकाश भी चाहिए।

देह की ऊर्जा, शब्द और अर्थ से जुड़ी है। देह की ऊर्जा ही शब्दों को सम्प्रेषित करती है। ये शब्द वर्णों का गठजोड़ हैं। बोलने या लिखने के लिए वर्णों का उपयोग शब्दों में करना होता है। यह सब लिपि पर टिका है।

भारतीय ऋषियों ने और इसी श्रंखला में पाणिनि ने नागरी लिपि के माध्यम से देह की सर्वांगीण ऊर्जा को वर्णों में, अक्षर में बाँधने का या उसे परिभाषित करने का बहुत ही महत्वपूर्ण काम किया है। नागरी लिपि बहुत गूढ़ शोध की उपज है। इस लिपि का सृजन मनुज देह में देवत्व का दर्शन है। यह लिपि, मनुज देह में, देवत्व को परिभाषित करती है। इसीलिए इसे देवनागरी नाम दिया गया है।

ध्वनि, पुकार या संवाद के समय, वर्णों और शब्द के कहन, गायन से उपजी देह ऊर्जा के उतार, चढ़ाव और ऊर्जा की यात्रा के साक्षी भाव का दर्शन, आम जीवन में एक ऐसा, एक अनदेखा अध्याय है। जिस पर सतत चर्चा होनी चाहिए। सजगता के इस महत्वपूर्ण सोपान पर संवाद होना चाहिए।

हम कोई भी भाषा बोलें, उसमें उपयुक्त हर स्वर या ध्वनि उच्चारण के समय, हर मानव, साक्षी भाव की दर्शन क्रिया से गुजरता है। उदाहरणार्थ संविधान की शपथ के समय, प्रार्थना के समय, अजान के समय, राष्ट्रीय गीत के समय, न्यायालय में शपथ दिलाकर साक्षी बनना, साक्षी भाव का सुंदर उदाहरण है। साक्षी भाव दर्शन मौन में तो सम्भव है ही।

कभी आपने अपनी भाषा के वर्णों और शब्दों का उच्चारण करते हुए, अपनी देह के विभिन्न तलों पर घटती, बढ़ती ऊर्जा की ओर ध्यान दिया है ? आपके उच्चारण के समय आपके होट, जीभ, नासिका, कण्ठ और उससे भी आगे, आपकी रीढ़ के तल तक चोट करती ऊर्जा पर कभी आपका ध्यान गया है ? सामान्यतः हम इस ओर ध्यान नहीं देते। शायद इसलिए कि ये सब विरासत में मिला है। विरासत में मिले को हम गम्भीरता से नहीं लेते हैं।

सुरेंद्र बंसल लिखते हैं ''भाषा का प्रत्येक स्वर, भाषा का प्रत्येक शब्द और प्रत्येक वाक्य, हजारों करोड़ों मानवीय अनुभवों, परिवर्तनों और क्रियाओं के पदचिह्न हैं।'' उन्हीं की बात को आगे बढ़ाते हुए मैं जोड़ना चाहूँगा कि इस सबकी संवाहक है लिपि।

ध्वनियाँ हमारी देह से निकलती हैं। ये ध्वनियाँ हमारे अस्तित्व का जोड़ हैं। सामान्यतः हम बाहर के जगत को देखने में व्यस्त रहते हैं। ध्वनियाँ और संवाद हमारे आंतरिक जीवन का छोर हैं। हमें अपने अंतर के जगत को प्राथमिकता से देखना होगा। यही दर्शन है।

हम सामान्यतः स्वयं की ऊर्जा पर प्रयोग और शोध की बातों से भी बचते हैं। जबकि शोध की राह, हमारे जीवन की सर्व सम्पन्न विरासत है। शोध की राह ही दर्शन है। यही जीवन और जगत का सत्य उद्घाटित करता है।

हमारी अपनी देह के तल पर तैरती, घटती और बढ़ती ऊर्जा पर ध्यान, जीवन का सबसे सहज और गहन शोध है। इसके अतिरिक्त जीवन से जुड़ी बात चाहे घरेलू हो, शैक्षिक हो, वैदिक साहित्य हो, दार्शनिक हो, लिपिगत हो, चिकित्सा शास्त्र की हो, ज्योतिष की हो। तथ्यों के साथ शोध, जीवन और जगत को नई दिशा देता है। हमें जीवन की बारीकियों की तह का पता देता है।

मेरे देखे, नागरी लिपि के दार्शनिक पक्ष की बात के साथ साथ भारतीय शिक्षा व्यवस्था की पृष्ठभूमि के बारे में थोड़ा बहुत जान लेना बहुत जरुरी है।

भारत के तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय बहुत ही समृद्ध और महत्वपूर्ण शिक्षा संस्थान थे। सुना है कि तक्षशिला विश्व का प्रथम विश्विद्यालय था। इसकी स्थापना सातवीं ईसा पूर्व में की गई थी। विश्व का दूसरा विश्विद्यालय नालंदा विश्वविद्यालय रहा है। नालंदा, वर्तमान बिहार राज्य के नालंदा जिला में स्थित है। तक्षशिला विश्वविद्यालय में तो पूरे विश्व के 10,500 से भी अधिक छात्र अध्ययन किया करते थे। यहां 60 से भी अधिक विषयों को पढ़ाया जाता था। 326 ईस्वी पूर्व में विदेशी आक्रमणकारी सिकन्दर के आक्रमण के समय, यह संसार का सबसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालय ही नहीं था, अपितु उस समय के चिकित्सा शास्त्र का एकमात्र, सर्वोपरि केन्द्र था।

आँकड़े यह भी बताते हैं कि 1850 तक, भारत में लगभग साढ़े सात लाख गाँव थे। साथ ही इस समय, सात लाख तीस हजार गुरुकुल भी थे। यानि औसतन लगभग हर गाँव में एक गुरुकुल था। इन गुरुकुलों में 18 विषय पढ़ाये जाते थे। ये सब तथ्य इस ओर संकेत करते हैं कि भारत में उस समय एक बहुत ही व्यवस्थित और विकसित शिक्षा प्रणाली थी। गुरुकुलों में शिक्षा निःशुल्क दी जाती थी। इन गुरुकुलों को राजा महाराजाओं का प्रश्रय नहीं था।

उस समय, उत्तर भारत में 97 प्रतिशत और दक्षिण भारत में पूरी सौ प्रतिशत साक्षरता थी। साक्षरता के ये तथ्य दो अंग्रेज अधिकारियों, जी. डब्ल्यू. लूथर के उत्तरी भारत और थोमस मुनरो के दक्षिण भारत के साक्षरता सर्वे पर आधारित हैं।

भारत के औपनिवेशिक काल में अंग्रेजों का एक ही उद्देश्य था। भारत के इस शैक्षणिक ताने बाने को तहस नहस कर, इस देश को गुलामी की जंजीरों में कस देना।

भारत में अंग्रेजी शिक्षा के जनक, मैकाले ने तो स्पष्टतः कहा था कि भारत की शिक्षा व्यवस्था और संस्कृति को नष्ट करके ही इस देश को सदा सदा के लिए गुलामी की बेड़ियों में बांधा जा सकता है। उनका एक ही मत था कि भारतीय शिक्षा व्यवस्था का सफाया कर, अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था का ढाँचा खड़ा किया जाये ताकि अंग्रेजी विश्वविद्यालयों से निकलने वाले छात्र, दिखने में भारतीय लगेंगे लेकिन वे अंग्रेजी व अंग्रेजों का हित साधेंगे।

मैकाले का कहना था कि जैसे फसल उगाने के पहले खेत को पूरी तरह जोत दिया जाता है उसी तरह भारतीय सामाजिक व सांस्कृतिक व्यवस्था को भी जोतना होगा। साथ ही अंग्रेजी शिक्षा व्यवस्था भी खड़ी करनी होगी। अपने इसी कथन को सिद्ध करने के लिए मैकाले ने अंग्रेजी सत्ता से पहले गुरुकुल व्यवस्था और बाद में संस्कृत को गैरकानूनी घोषित करवाया। इस तरह गुरुकुलों को समाज से मिलने वाला आर्थिक सहयोग, कानून की खिलाफत हो गया। कानून की खिलाफत करने वालों को जेल की सजा मिलने लगी। कहते हैं कि अंग्रेजों ने गाँव बस्तियों में जाकर, गुरुकुलों को जला डाला।

मैकाले की योजना को क्रियान्वित करने के लिए अंग्रेजों ने सबसे पहला कान्वेन्ट स्कूल कलकत्ता में खोला था। इसके बाद अंग्रेजों ने कलकत्ता, मुम्बई व मद्रास में विश्वविद्यालयों की स्थापना की। ये तीनों ही विश्वविद्यालय आज भी मौजूद हैं।

ये सब बातें यहाँ साझा करना इसलिए आवश्यक है कि अंग्रेजों ने भारतीय शिक्षा और सांस्कृतिक विरासत को मटियामेट करने में कमी नहीं छोड़ी। इस तथ्य से हर भारतीय को परिचित होना चाहिए ताकि वह अपनी शैक्षणिक और सांस्कृतिक विरासत के विषय में सजग हो सके। दूसरी बात यह कि भारतीय शिक्षा की मूलाधार लिपि, नागरी लिपि की महत्ता व उसके दार्शनिक पक्ष के साथ जीवन मूल्यों को रेखांकित करना है।

नागरी लिपि की उपेक्षा के कारण भी हैं। इस लिपि का एक महत्वपूर्ण कारक भी है। यह कारक है नागरी लिपि का दार्शनिक पक्ष। जैसा कि मैंने पहले लिखा। हमारा ध्यान नागरी लिपि के दार्शनिक पक्ष पर नहीं गया है। इस बारे में हमें, कहीं पढ़ाया भी नहीं गया है। यह व्यवस्था की एक बहुत बड़ी खामी रही है। यानी नागरी लिपि के दार्शनिक पक्ष को सामने न लाना अधूरापन है। यह भारतीय दर्शन को जानने एवं समझने की राह में बहुत बड़ी चूक रही है। नागरी लिपि के दार्शनिक पक्ष पर शोध होना भी बहुत जरूरी है। इस शोध को मातृभाषाओं और बोलियों के क्षेत्र तक ले जाना हमारा काम है। इससे मातृभाषाएँ और बोलियाँ भी बचेगी। साथ ही लिपि भी बचेगी और हमारी संस्कृति भी संरक्षित होगी।

नागरी लिपि देह के दर्शन की उपज है। इन अर्थों में नागरी जीवन दर्शन से परिपूर्ण है। नागरी लिपि के वर्ण, एक– एक वर्ण मंत्र हैं। मंत्र होने का अर्थ, अस्तित्व की ऊर्जा की परिपूर्णता, अस्तित्व से समग्र सामंजस्यता से है। इसीलिए नागरी लिपि के वर्णों को अक्षर कहा गया है। अक्षर यानी जिनका क्षर न हो।

एक बात चार्वाक दर्शन पर भी। चार्वाक दर्शन का मत थाः

''यावत जीवेत सुखम जीवेत, ऋणम कृत्वा घृतम पीबेत।'' अर्थात जब तक जीओ, सुख से जीओ। कर्ज लेकर भी घी पीओ।

चार्वाक के इस मत के प्रतिपादन ने भारतीय ऋषियों को झकझोर दिया था। चार्वाक के बाद, ऋषियों के जीवन के प्रति गहन ध्यान और शोध स्वरूप, भारतीय दर्शन ने जीवन की नई ऊँचाइयों को छुआ। इसी के फलस्वरूप आप नागरी लिपि में, जीवन की नई ऊँचाइयों को छूने वाले, दार्शनिक शब्दों की भरमार पाएंगे। ये शब्द दूसरी भाषाओं में नहीं हैं। कम से कम अंग्रेजी भाषा में तो नहीं हैं। वर्तमान में, इनमें से बहुत से शब्दों ने पाश्चात्य जगत में भी अपनी ठोस पहचान बना ली है। मैं यहां कुछ शब्दों का उल्लेख करता हूं :

मंत्र, सूत्र, योग, शांति, कर्म, अवतार, सम्यक, ब्रह्म, जीवात्मा, प्रकृति, स्थितप्रज्ञ, स्वीकार भाव, साक्षी भाव, सत् चित्त आनंद, ब्रह्म मुहूर्त, सत्यम शिवम सुंदरम, निर्वाण, मंगल, भक्ति, श्रद्धा और शुभ आदि। ऋषियों ने इन शब्दों और इन शब्दों में उपयुक्त वर्णों के माध्यम से जीवन के दर्शन को खड़ा किया।

नागरी लिपि के इन दार्शनिक शब्दों के समानार्थी शब्द रोमन लिपि में नहीं हैं। यह आश्चर्य की बात नहीं है।रोमन लिपि की क्षमता नागरी लिपि की अपेक्षा पचास प्रतिशत कम है। उसमें केवल छब्बीस वर्ण हैं।

एक प्रश्न हमारी सांस्कृतिक जड़ों से भी जुड़ा है। यह कि हम मंत्र बोलने लिए, हम विशेष अवसरों पर, मंत्र उच्चारण के लिए पंडित के पीछे क्यों भागते हैं? क्या आपने कभी इस विषय में सोचा है ?

हम पंडित के पीछे इसलिए भागते हैं कि हम मंत्र उच्चारण से देह के दर्पण में, स्वयं को देख सकें। मंत्रोच्चार कर, अपने आप में, झाँक सकें। चेतना की यह पकड़ जन–जन में देखने को मिल जाएगी। नागरी के वर्णों में चेतन के शीर्ष तक पहुंचाने की क्षमता है।

हमारे पाणिनि जैसे महर्षि और ऋषि नागरी लिपि के वर्णों के जरिए, साधना की राह उतरकर, चेतना के तार तार का पता पा सके। वे सहज 'वसुधैव कुटुम्बकम', 'ओम शांति' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया' कह सके।

देवनागरी लिपि के वर्ण, मानवीय देह की ऊर्जा की पूर्ण अभिव्यक्ति हैं। देह ऊर्जा को यदि हम नहीं समझ सकते तो हम जीवन और जगत को नहीं समझ पायेंगे। देवनागरी लिपि के वर्ण सजगता का पायदान हैं। देवनागरी लिपि के वर्ण

आत्मिक विकास की सीढ़ी हैं।

''मैं कौन हूँ?'' यह वाक्य एक महामंत्र है। यदि आप इस वाक्य का लगातार और बार बार उच्चारण के समय, साक्षी भाव से देखेंगे तो एक स्थिति आयेगी। जिसमें आप कह सकेंगे ''अहम् ब्रह्मास्मि।''

"Who am I" का उच्चारण भी अवश्य करके देखें और ''मैं कौन हूँ'' का उच्चारण भी करके देखें। ऐसा करने भर से आपको अपनी देह की ऊर्जा द्वारा अभिव्यक्त वर्णों की क्षमता समझ में आ जायेगी।

अक्षर ब्रह्म है। यही कारण है कि दुनिया भारतीय दर्शन का लोहा मानती है।

जिस लिपि में इतनी क्षमता हो और उसका ह्रास हो रहा हो, लिपि का उपयोग ना हो रहा हो। यह कमी हम में है। यह कमी व्यवस्थागत है। रोमन लिपि के 26 वर्ण यानी नागरी लिपि के पचास प्रतिशत वर्ण, नागरी लिपि पर सूरज ग्रहण लगा रहे हैं। यह अनदेखी हम कब तक सहेंगे ? केवल इसलिए की रोमन लिपि में तकनीक उपलब्ध है। रोमन लिपि में पुस्तकें उपलब्ध हैं। प्रश्न यह है कि आखिर इस तकनीक और पुस्तक सामग्री को अंग्रेजी भाषा के समानांतर नागरी में क्यों नहीं खड़ा किया गया ?

मैं यहां एक नोबेल पुरस्कार विजेता, अंग्रेज साहित्यकार, टी. एस. इलियट6 का नाम लेना चाहूंगा। जिन्होंने अपनी कविता जैम ूजमसदक का अंत, शांतिः, शांतिः, शांतिः शब्द के साथ से किया है। उन्होंने एक जगह भारतीय व पाश्चात्य दार्शनिकों की तुलना करते हुए कहा है कि पाश्चात्य दार्शनिक, भारतीय दार्शनिकों के समक्ष प्राथमिक पाठशाला के छात्र हैं।

एक अन्य उदाहरण है पॉप गायिका मैडोना। इन्होंने बीबीसी के माध्यम से बनारस के विद्वान वागीश शास्त्री से संस्कृत सीखी है। इस महिला के पास अपार धन है और अकूत लोकप्रियता भी। फिर क्या कारण है कि इस बहुत ही महान गायिका ने संस्कृत सीखने की ठानी ? आप इस प्रेरणा के पीछे क्या देखते या सोचते हैं ? क्या भारतीय दर्शन के पीछे नागरी लिपि कहीं लुप्त हो गई है ? हमारा अपना सामर्थ्य, नागरिक लिपि की इस क्षमता को देखने में सक्षम क्यों नहीं है ?

एकाहर्ट टोले वर्तमान में भारतीय दार्शनिक पक्ष के सशक्त समर्थक हैं। 2008 में, नीदरलैंड के शहर रोटरडम में, उनसे संक्षिप्त मुलाकात हुई थी। वे हर समय अपने वक्तव्य में मंत्रों का उच्चारण करते हैं। भारतीय संस्कृति की बात करते हैं। भगवत गीता को हाथ में लिए पढ़कर, भारतीय संस्कृति से जीवन जीने की सीख जानने और समझने की कहते हैं।

मातृभाषा की बात करते हुए हम प्रायः नागरी लिपि की वैज्ञानिकता की बात करते हैं। हमें नागरी के दर्शन पक्ष को भी सामने लाना होगा। केवल नागरी लिपि की वैज्ञानिकता की बात करना, अधूरी बात करने जैसा है। नागरी लिपि का अधूरा पक्ष प्रस्तुत करने जैसा है।

आइए दो शब्दों 'बैठ' व 'नहीं' और इन शब्दों में उपयुक्त वर्णों के उच्चारण और इनके उच्चारण के समय, देह में उपजी ऊर्जा और उस ऊर्जा की दैहिक यात्रा की बात करते हैं। 'बैठ' शब्द का जब जब भी आप उच्चारण करेंगे तो 'बै' वर्ण के उच्चारण के समय आपके होटों और मुख से उपजी ऊर्जा आपके कण्ठ के रास्ते, आपके सहस्रार की ओर गमन करती है। 'बैठ' शब्द के दूसरे वर्ण 'ठ' का उच्चारण करते समय उपजी ऊर्जा आपकी रीढ़ के तल तक चोट करती हुई, आपके धड़ में फैल जाती है। 'ठ' वर्ण घड़े का सा आकार ले लेती है।

मैं दूसरे शब्द 'नहीं' के उच्चारण की बात करूँ, इससे पहले एक आग्रह भी है कि आप अंग्रेजी के समानार्थी शब्द 'पज' व 'दव' शब्दों का उच्चारण कर, अपनी देह में ऊर्जा की यात्रा पर ध्यान दें और तुलना भी अवश्य करें।

जब आप 'नहीं' 'न' और 'हीं' का उच्चारण करते हैं तो 'न' का उच्चारण, आपकी नासिका से उपजी ऊर्जा की उठान आपके सहस्त्रार तक जाती है। 'न' वर्ण के बाद 'हीं' का उच्चारण 'न' के उच्चारण से ऊर्जा की सहस्त्रार तक बनी पहुंच को रीढ़ के तल तक ले आती है। आपकी देह में, 'नहीं' का उच्चारण पूरा होते होते, ऊर्जा सहस्त्रार से लेकर रीढ़ के तल में, कील सी खड़ी हो जाती है।

इन दो शब्दों के माध्यम से मेरे कहने का आशय है कि नागरी लिपि, जीवन से जुड़ा बहुत गहन शोध है। आप इस पर गौर करें। ये वर्णों और शब्दों के उच्चारण के छोटे छोटे प्रयास, आपको अपनी देह की ऊर्जा के प्रवाह और ऊर्जा की पड़ती चोट, तल तक का पता देंगे। आपकी अपनी देह और अस्तित्व के प्रति आपकी सजगता को उत्तरोत्तर बढ़ायेंगे।

शायद आपने जे पी नौटियाल का नाम सुना होगा। वे, 'हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है' इस तथ्य को स्थापित करने के लिए, पिछले कई दशकों से प्रयासरत हैं। नौटियाल के मतानुसार ''हिंदी भाषा को 'एथ्नोलोग संस्था' विश्व की तीसरे स्थान पर दिखाता है। जबकि हिंदी विश्व की सर्वाधिक बोले जाने वाली भाषा है।''

इस विषय पर नागरी लिपि के साथ–साथ विमर्श होना चाहिए। आखिर जयंती प्रसाद नौटियाल का शोध ा, एथ्नोलोग द्वारा अब तक क्यों स्वीकार नहीं किया जा रहा है ? क्या सरकार को भी इस विषय में कुछ करना चाहिए ? नौटियाल के इस शोध से यदि 'हिंदी विश्व की सर्वाधिाक बोले जाने वाली भाषा है' का स्थान एथ्नोलोग द्वारा स्वीकार हो जाता है तो इससे नागरी लिपि को बहुत बल मिलेगा।

अंत में एक अंग्रेज ऋषि कवीन्द्र को रेखांकित करना चाहूंगा। वे इस समय शायद 77 – 78 वर्ष के हो चुके हैं। उन्होंने ' ठींहूंज हममजं बवउमे सपअम' पुस्तक भी लिखी है। उनके जन्म का नाम जैफरी आर्मस्ट्रांग है।

'संस्कृत की वैश्विक विरासत' आयोजन के तहत मेरा उनसे साक्षात्कार हुआ। वे स्वयं को भारतीय कहते हैं। वे 'इंडिया' व 'इंडियन'

' शब्द के उपयोग का घोर विरोध करते हैं। हालांकि वे ऑक्सफोर्ड में पढ़े हैं। उनका कहना है कि मैं भारतीय हूँ। मैं ऋषि हूँ। 'इंडिया' व 'इंडियन' ये दोनों ही शब्द औपनिवेशिक हैं। हर भारतवंशी को स्वयं को भारतीय कहना चाहिए। हर भारतीय को संस्कृत सीखनी चाहिए। हर भारतीय को 'भगवत गीता' पढ़नी चाहिए।

उनके ही शब्दों में, भारत शब्द में 'भा' का अर्थ है 'ज्ञान' और 'रत' का अर्थ जो व्यक्ति ज्ञान के अर्जन में रत है। अर्थात जो ज्ञान के अर्जन की राह पर है, इस धरती पर ऐसा हर एक व्यक्ति भारतीय है।

ऋषि कवीन्द्र यह भी कहते हैं कि ऑक्सफोर्ड शब्दकोश के बजाय 'एटीमोलॉजी डिक्शनरी' को उपयोग में लेना चाहिए। ताकि आपको यह पता लग सके की मूल शब्द का उद्गम कहाँ से है। अमुक शब्द का अर्थ क्या है ? उनका यह भी कहना है कि एटीमोलॉजी डिक्शनरी के उपयोग से आपको यह भी ज्ञात होगा की संस्कृत शब्दावली से, ग्रीक और लेटिन से कितना, कुछ, किस रूप में, ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी में लिया हुआ है।

मैकाले की चर्चा यहाँ फिर से करना बहुत आवश्यक है। मैकाले द्व ारा, अपने पिता को लिखे एक पत्र को रेखांकित करना भी अपरिहार्य सा है। उन्हीं के शब्दों में ''भारत में कॉन्वेन्ट स्कूलों की स्थापना की जाए। इन स्कूलों से निकले छात्र, दे खने में तो भारतीय लगेंगे परंतु वे मानसिकता से अंग्रेज होंगे। ऐसे बच्चों को अपने देश के बारे में कुछ भी पता न होगा। ये अपनी संस्कृति से भी अनभिज्ञ होंगे। ये अपनी परम्पराओं से परिचित नहीं होंगे। ऐसी पीढ़ी अंग्रेजियत को जीवित रखेंगी।''

आज आप सोसियल मीडिया पर हिंदी भाषा को युवा पीढ़ी ही नहीं हम और आप जैसे और हमसे बुजुर्ग भी अपनी मातृभाषा को देवनागरी में न लिखकर, रोमन में लिख रहे हैं। इस प्रवाह को हमें मोड़ना होगा।

मेरा आप सभी मित्रों, आप सुधि विद्वानों से एक और निवेदन है कि जब–जब भी आप नागरी लिपि की वैज्ञानिकता पर कहें तो साथ में दार्शनिक प क्ष की भी बात करें। ताकि पाठक व श्रोता नागरी लिपि के दार्शनिक पक्ष से परिचित हो सकें।

इन सब बातों तथ्यों को कहने का मेरा तात्पर्य है कि नागरी लिपि की क्षमता की दृ ष्टि से उन सभी बोलियां, जिनकी बोलियों की लिपि नहीं है, उन बोलियों के लिखने में नागरी लिपि को अपनाने के विमर्श को दृढ़ता पूर्वक आगे बढ़ाया जाए।

वैसे भी देवनागरी की क्षमता अपार है। इस विषय पर मीरा गौतम लिखती हैं ''देवनागरी लिपि की ही अपार क्षमता है कि यह देशी और विदेशी शब्दों का तादात्म्यीकरण आसानी से कर लेती है।''

ज्ञानेन्द्र पाण्डेय के अनुसार ''भाषा वस्तुतः भावाभिव्यक्ति का एक माध्यम है। भाषा, भावाभिव्यक्ति का साधन, किसी लिपि से ही संपन्न होकर परिभाषित होती है।''

लॉर्ड मैकाले ने संस्कृत व खड़ी बोली की फसल, भारतीय संस्कृति की फसल को नष्ट करने का आह्वान किया था। यह बहुत पुरानी बात नहीं है। उसने गुरुकुल और संस्कृत पर टैक्स लगाकर, भारत की भाषा के स्वाभिमान, भारत की संस्कृति के स्वाभिमान, आम नागरिक के स्वाभिमान को तोड़ने की नींव डाली थी।

अब भविष्यवाणी हो रही है कि 2028 तक भारत आर्थिक शक्ति बनेगा। वर्तमान समय, भारत के आर्थिक जागरण का समय है। हम अमृत काल के दौर से गुजर रहे हैं। मैकाले की लहर को पलटने और पटक लगाने की तैयारी करने का सही समय है।

एक आन्दोलन की शुरुआत हो ''देवनागरी में लिखो। देवनागरी बचाओ।'' यह सही समय है अपनी विरासत को बचाने का।

आज भारतीय संस्कृति, भारतीय मातृभाषाओं और देव नागरी लिपि के स्वाभि मान को खड़ा करने का समय है। इसी राह नागरी लिपि के स्वाभिमान को खड़ा करने का अवसर है। व्यक्तिगत, सामाजिक और संस्थागत तौर पर, यह मेरी और आपकी यानि हम सबकी जिम्मेदारी है। नागरी लिपि के वर्ण साँस की डोरी से बंधे हैं। अतः नागरी लिपि की महत्ता और उसमें छिपे जीवन दर्शन को अब और अनदे खा न किया जाये।

❑❑

लखनऊ, उत्तर प्रदेश, भारत में साहित्य उत्सव–2024 का भव्य समारोह

14 जुलाई को स्वतंत्रता सेनानी साहित्यकार रमाकान्त श्रीवास्तव की 103 वीं जयन्ती की पूर्व संध्या पर 'डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव साहित्यिक संस्थ. ान' एवं 'उत्तर प्रदेश भाषा संस्थान' के संयुक्त तत्वावधान में साहित्योत्सव 2024 का आयोजन किया गया।

साहित्योत्सव 2024' की अध्यक्षता डॉ. रामकठिन सिंह, मुख्य अतिथि डॉ. शिवमोहन सिंह और डॉ. मिथिलेश दीक्षित के संरक्षण, डॉ. अमिता दुबे, डॉ. रश्मि श्रीवास्तव, डॉ. हेमांशु सेन के विशिष्ट आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

जिसमें 'साहित्य और पत्रकारिता के साधक: रमाकान्त श्रीवास्तव' विषयक संगोष्ठी में विषय प्रवर्तन संस्थान की संरक्षक डॉ. मिथिलेश दीक्षित जी ने किया।

जिसमें समीक्षक डॉ. श्रीवास्तव की 'समीक्षायन' समीक्षा संग्रह का लोकार्पण भी किया गया। समारोह में मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. मंगलमूर्ति सुपुत्र आचार्य शिवपूजन सहाय को साहित्य क्षेत्र में जीवन समग्र उपलब्धियों के लिए 'डॉ. रमाकान्त श्रीवास्तव स्मृति अति विशिष्ट सम्मान' से सम्मा. नित किया ।

डॉ. अलका अस्थाना ' अमृतमयी' को श्रीमती श्याम सुंदरी स्मृति काव्य रत्न सम्मान व डॉ. सरिता सिंह को श्रीमती श्याम सुंदरी स्मृति काव्य मनीषा सम्मान, वरिष्ठ पत्रकार सम्पादक सुशील अवस्थी को 'पत्रकारिता गौरव' व लाल देवेन्द्र श्रीवास्तव को 'पत्रकार शिरोमणि' सम्मान से विभूषित किया गया।

इस अवसर पर रमाकान्त श्रीवास्तव के साहित्य और पत्रकारिता के क्षेत्र में अविस्मरणीय अवदानों की चर्चा के साथ ही उनको याद किया गया। इस अवसर पर आयोजन में बड़ी संख्या में लखनऊ और प्रदेश से आये साहित्यकार, पत्रकार, और साहित्य प्रेमियों ने अपनी उपस्थिति दर्ज करायी। ❑❑

भारतीय ज्ञान परंपरा में मध्यम मार्ग की प्रासंगिकता

डॉ जयशंकर शुक्ला

सारांशिका:

किसी भी तरह से साधना में अति को वर्जित बताया गया है और निष्क्रिय होना भी अच्छा नहीं माना गया है। मानव मात्र को अपने जन्म के साथ ही विभिन्न अधिकार और कर्तव्य दोनों प्राप्त हो जाते हैं, चूँकि यह वर्गीकरण जन्म के आधार पर हो रहा था, तो स्वाभाविक था कि यह जाति केवल जन्म से धर्मगुरु के अनुसार स्थापित होती रही, ज्ञान और गुणों के आधार पर नहीं । ऐसे में धर्म के नाम पर इनके द्वारा अंध ाविश्वास, रूढ़िवाद और जड़ क्रिया–कांडों का समूचा प्रचार चल रहा था । जन समाज का सामूहिक शोषण उन लोगों में रोष को बढ़ा रहा था। परंतु कोई दूसरा विकल्प नहीं होने से परम्परा के ताने–बाने को तोड़ना भी सम्भव नहीं लग रहा था । अभाव में समूचा वर्ग स्वयं भ्रमित था और दूसरों के भी भ्रमित कर रहा था।

बीज शब्द:

अंधविश्वास, यज्ञ, तर्पण, धर्म, सनातन स्वरूप, उजागर, आर्य सत्य, अष्टांग मार्ग, शिक्षाओं, माध्यम, खोखले आश्वासन, उपदेशों में संतुलन, धारणा, महत्व, आवश्यक, योग ।

1– Δ अध्ययन का उद्देश्य:

1.1– भारतीय संस्कृति के वैश्विक परिप्रेक्ष्य में चिंतनशील अध्ययन के परिवर्तनकारी अनुभव को सभी के लिए प्रेरणा के रूप में प्रदर्शित करते हुए हम पाठक, समाज परिवर्तन की अप. नी यात्रा स्वयं शुरू करें।

1.2– बौद्ध संस्कृति विरासत का वि. भन्न संदर्भों में समग्र ज्ञान मन को आह्लाद देने वाला है, मानवीय शांति देने वाला है।

1.3– यह अतीत की जानकारी देने वाला है, अतः कल्याणकारी है और जो कल्याणकारी है वही श्रेयस्कर है।

1.4– बौद्ध संस्कृति विश्वकल्याण के लिए मैत्री भावना पर बल देती हैं। ठीक वैसे ही जैसे समकालीन अन्य संस्कृतियों ने मित्रता एवं समन्वय के प्रसार की बात कही है।

1.4– प्राचीन कालीन संस्कृतियों के अध्ययन के द्वारा हम यह मानते हैं कि संस्कृतियों में वर्णित ज्ञान विश्व बंधुत्व एवं मैत्री के मोगरों की महक से ही संसार में प्रेम व सद्भाव का सौरभ फैल सकता है।

1.5– बौद्ध संस्कृति के संदर्भ में कहा जाता हैं कि यह विश्व बंधुत्व को समर्पित रही है अर्थात बैर से बैर कभी नहीं मिटता। अबैर से मैत्री से ही बैर मिटता है।

1.6– बौद्ध संस्कृति के अनुशीलन एवं अवगाहन के माध्यम से हम समका. लीन विश्व के अतीत में आपसी जुड़ाव को लेकर कह सकते हैं कि मित्रता ही सनातन नियम है ।

1.7– बौद्ध संस्कृति के लिए निश्चित रूप से तत्कालीन व्यवस्था का अध्ययन करना अन्य संस्कृतियों के संदर्भ में अत्यंत आवश्यक है।

1.8– बौद्ध संस्कृति जिस की व्याप्ति भारतीय संस्कृति के रूप में भी समग्रता से स्वीकार किया जाता है, अपने आप में भारतीय और भारतीयता को समाए हुए हैं।

1.9– यह निश्चित तौर पर मानवीय संवेदनाओं और लक्ष्यों के मध्य में संबंध में रखते हुए मध्यम मार्ग का प्रतिपादन करते आगे बढ़ती है ।

1.10– इसने मानव मात्र के लिए कल्याण का मार्ग उसके इसी जीवन में प्रशस्त किया है।

2– Δ तर्क:

प्रस्तुत शोध पत्र में हिंदू संस्कृति के अनुशीलन के सामजिक, सांस्कृतिक पारस्परिक एवं पारंपरिक प्रभाव एवं ग्राह्यता पर प्रकाश डालते हुए , इसका समीक्षात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिसके माध्यम से हिंदू संस्कृति के माध्यम से वर्णित प्रमुख भावनाओं व विचारों का सरलीकरण एवं इनके उद्देश्य मानवीय संवेदनशीलता के आलोक में प्रस्फुटित हो सकें द्य

3–Δ अनुसंधान क्रियाविधि:

3.1– नमूना: नीति दस्तावेज और दिशानिर्देश

3.2– उपकरण: गुणात्मक दस्तावेज विश्लेषण

3.3– डिजाइन: वर्णनात्मक साहित्य समीक्षा

4– अध्ययन :

मुख्य रूप से निष्कर्षों के लिए फॉर्म दस्तावेजों में पहले से मौजूद डेटा का उपयोग करता हैध्आशय।

5– प्राथमिक स्रोत:

5.1– मूल संदर्भ एवं संस्कृत आधार ग्रंथ।

5.2– अनुवाद एवं मूल हिंदी साहित्य।

6– प्रस्तावना –

जब संपूर्ण देश में वैदिक काल का बोलबाला था। कर्मकांड की अत्यधिक महत्ता थी। समाज का वर्गीकरण जातियों में, जो पहले कर्म के आधार पर होता था, वह अब जन्म के आधार पर होने लगा। उच्च जाति के लोगों ने तथा धर्म गुरुओं ने स्वयं को निम्न जाति वालों से श्रेष्ठतर व उच्चतर समझना शुरू कर दिया। धर्म के नाम पर अंधविश्वास, रूढ़िवाद और जड़ कर्मकांडों की व्यापकता पूरे समाज में फैल गई। ऐसे समय में गौतम बुद्ध ने आंतरिक यात्रा के पथ से चलते हुए अपने भीतर बुद्धत्व को प्रकट किया और 'धर्म' के उस सनातन व शाश्वत स्वरूप का अनुभव एवं प्रस्फुटन किया , जो समय की गर्त में खो रहा था । उस आत्मज्ञान के

7– गौतम बुद्ध द्वारा सुनिश्चित मध्यम मार्ग की अवधारणा :

गौतम बुद्ध द्वारा सुनिश्चित मध्यम मार्ग आज भी उतना ही प्रासंगिक व सामयिक है जितना की गौतम बुद्ध के समय में था।

उनके मध्यम मार्ग को एक वीणा के

उदाहरण द्वारा समझा जा सकता है। अर्थात संगीत वाद्य के द्वारा एक विशेष प्रक्रिया में सुर प्राप्त किया जा सकता है।

संगीत यंत्र वीणा के तारों को इतना अधिक नहीं खींचना चाहिए कि वे टूट जाए और न ही इतना ढीला छोड़ना चाहिए कि स्वर की ध्वनि ही सही ढंग से न निकले।

इसी प्रकार जीवन यापन में न अधिक कठोरता व न अधिक कोमलता रखते हुए मध्यम मार्ग अर्थात बीच की स्थिति का अनुसरण करना चाहिए।

अधिक कठिनाई पूर्ण जीवन जीना अथवा बेहद सरल जीवन जीना, यह दोनों ही गौतम बुद्ध ने वर्जित बताए हैं।

गौतम बुद्ध के अनुसार इनके मध्य में सरलीकृत कठिनता को लेकर के चलने की बात कही है, जिसे मध्यम मार्ग के रूप में माना गया है।

गौतम बुद्ध ने मध्यम मार्ग का निरूपण करते हुए मानव मात्र के लिए उनके निर्वाण हेतु इसे परम आवश्यक माना है।

गौतम बुद्ध का निर्वाण मृत्यु के बाद का निर्वाण नहीं है अपितु जीवन जीते हुए निर्वाण की प्राप्ति को उन्होंने सुनिश्चित किया है।

जो ऊपर दिए गए चरणों यथा चार आर्य सत्यों और उन आर्य शक्तियों के आधार पर आठ मार्गों और उन मार्गों को लेकर के हमारे द्वारा अपनाए जाने वाले क्रियाकलापों को स्वीकृति प्रदान करता है।

इस तरह के मार्गो से हम अति से बचते हुए और सरलता से कुछ पृथक रहकर के अपने आप को अपने श्रेष्ठ स्थान तक ले जाने का प्रयास करते हैं, यही मध्यम मार्ग है।

8– मध्यम मार्ग का आशय :

मूल रूप से मनुष्य जीवन में अधिक कठिनाई पूर्ण कार्य करना अथवा सरल रास्तों को ढूंढना दोनों ही वर्जित माना गया है। गौतम बुद्ध ने इन दोनों मार्गों का जिनमें ज्यादा सरलता हो या ज्यादा दुर्गमता हो दोनों को मना किया है। और कहा है कि इन दोनों के मध्य का जो मार्ग है जोकि बहुत ज्यादा कठिन नहीं हो और बहुत ज्यादा सरल भी नहीं हो वही हमारे लिए सर्वश्रेष्ठ है। हम उसी का पालन करके जीवित रहते हुए निर्वाण रूपी उत्कृष्ट मानवीय चेतना के महान उपलब्धि को प्राप्त कर सकते हैं।'

10– भारतीय संस्कृति व उसका इतिहास, लेखक– सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रकाशक– सरस्वती सदन मसूरी, प्रकाशन वर्ष– 1968, पृष्ठ संख्या – 6/71. मध्यम मार्ग को इस प्रकार स्पष्ट किया जा सकता है–

8.1– ज्ञान देने वाला है– मध्य मार्ग ज्ञान देने वाला है जिससे हम सही व गलत में भेद कर पाते हैं जीवन के सत्य को वास्तविकता को समझ पाते हैं और उसके द्वारा सफलतापूर्वक जीवन जापान कर पाते हैं। हमारे जीवन में हमें ज्ञान की आवश्यकता हमेशा होती है। ज्ञान ही हमें हमारे मूल से जोड़ता है। और हमारे जीवन में आने वाले शक्तियों से हमारा साक्षात्कार करवाता है ज्ञान का आशय जानकारी से है जो प्रकृति के अंशुलझे रहस्य के रूप में हमारे चारों ओर बिखरे हुए हैं। इनके माध्यम से ही हम जीवन को पहचान सकते हैं। उसकी कठिनाइयों को दूर कर सकते हैं और उसमें सहजता को उत्पन्न कर सकते हैं।

8.2– शांति देने वाला है– क्योंकि यह ज्ञान देने वाला है इसलिए यह शांति प्रदान करने वाला है। जब मनुष्य को ज्ञान प्राप्त होता है तब उसे सत्य का, वास्तविकता का तथा अन्य पहलुओं का पता चलता है और उसके मन– मस्तिष्क में एक संतुष्टि का और शांति का प्रादुर्भाव हो जाता है। ज्ञान के बाद हमें शांति प्राप्त होती है वास्तव में शांति किसी भी विषय किसी भी वस्तु को जानने के उपरांत प्राप्त वह स्थित है, जो हमें उसके बारे में अपने विचारों को स्थापित करने में मदद करती है। शांति हमारा मूल आत्मिक स्वभाव भी है जो इस जगत में आकर के निरूपित हो गया है।

8.3– निर्वाण देने वाला है– यह मध्यम मार्ग निर्वाण और मोक्ष को प्रदान करने वाला सिद्ध होता है। इस मार्ग से हमें ज्ञात होता है कि संसार तो क्षण– भंगुर है। मन की एकाग्रता से अर्थात ध्यान केंद्रित करके ही समाधिस्थ होकर निर्वाण अर्थात मोक्ष को प्राप्त किया जा सकता है। यही मनुष्य जीवन की चरम परिणति है। गौतम बुद्ध के अनुसार हमारे जीवन का परम लक्ष्य निर्माण है जो मृत्यु के बाद नहीं बल्कि जीवित रहते हुए ही हमारे द्वारा प्राप्त किया जाना परम आवश्यक है मध्य मार्ग हमें निर्माण की ओर केवल बढ़ता ही नहीं बल्कि हमें निर्माण प्राप्ति करने में पूर्ण रूपेण हमारी सहायता करता है और इस तरह हम जीवन के उसे परम लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मध्यम मार्ग के सहयोग से स्वयं को सफल सिद्ध कर पाते हैं।

8.4– कल्याणकारी है– यह मध्यम मार्ग ज्ञान, शांति तथा निर्वाण प्रदान करने वाला है। अतः स्वाभाविक रूप से यह मनुष्य के लिए अत्यंत कल्याणकारी और मंगलकारी भी सिद्ध होता हैऔर वही श्रेयस्कर है।

गौतम बुद्ध विश्वकल्याण के लिए मैत्री भावना पर बल देते हैं। ठीक वैसे ही जैसे महावीर स्वामी ने मित्रता के प्रसार की बात कही थी। गौतम बुद्ध मानते हैं कि मैत्री के मोगरों की महक से ही संसार में सद्भाव का सौरभ फैल सकता है। वे कहते हैं कि बैर से बैर कभी नहीं मिटता। अबैर से मैत्री से ही बैर मिटता है। मित्रता ही सनातन नियम है । आपसी सौहार्द्र तथा मेल मिलाप जीवन यापन के लिए अत्यंत आवश्यक है।

9– बौद्ध संस्कृति का प्रसार एवं विस्तार–

इस प्रकार हम देख सकते हैं बौद्ध संस्कृति के प्रसार एवं विस्तार के फल स्वरुप मनुष्य मात्र के लिए नए मार्गों का सृजन ही नहीं हुआ अपितु नए–नए जीवन जीने के आयामों का निरूपण और निर्धारण सहज ही स्वीकृत और सुनिश्चित होना प्रारंभ हो गया।

9.1– मानवीय व्यावहारिक परंपरा–

यह मानवीय व्यावहारिक परंपरा का सुधीर्घ काल से विरचित एक विशिष्ट प्रकल्प था जिसके माध्यम से जीते जी निर्वाण की संकल्पना को साकार होते हुए मानव मात्र ने देखा। ज्ञान प्राप्ति के उपरांत व्यक्ति ने अपने जीवन में बहुत सारे परिवर्तन जो सकारात्मक थे और आध्यात्मिकता के शीर्ष को सुशोभित करने वाले थे, देखने को तैयार कर पाया।

9.2– मानव जीवन संघर्ष का जीवन–

मानव जीवन संघर्ष का जीवन है जीवन पर्यंत एक व्यक्ति अपने जीवन को चलाए रखने के लिए संघर्ष करता रहता है और इस संघर्ष में जरा और मृत्यु उसके साथ जुड़े रहते हैं गौतम बुद्ध ने अपने धर्म के स्थापना में इन्हीं दोनों बिंदुओं को सामने रखते हुए इसे पृथक जीवन संचालन की अवधारणा को पुस्ट किया। मनुष्य के लिए उसकी उपलब्धियां अध्यात्म और भौतिक जीवन के बीच संतुलन बैठाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण शोपनो को पार करता हुआ आगे बढ़ता है।

10– **निष्कर्ष एवं प्राप्तियां:**

10.1– निवर्तमान प्रचलित अर्थहीन कर्म–कांडों ने जब लोगों के भीतर सही विचार के द्वार बंद कर दिए थे, तब भगवान बुद्ध ने जन–समाज को अपने मौलिक विचारों की शक्ति से अवगत कराया ।

10.2– इस प्रकार जन–समाज को अपने मौलिक विचारों की शक्ति से अवगत कराते हुए उनका उद्धार करने का और उनका कल्याण करने का बीड़ा उठाया।

10.3– यहीं से एक नए युग का आरम्भ हुआ। इस नए युग में सभी बुराइयों पर कुठाराघात करते हुए नवीन मंगलकारी तथा कल्याणकारी मूल्यों की स्थापना की गई।

10.4– चूँकि हर काल में हर मनुष्य की मूलभूत चाहत होती है 'दुःख से मुक्ति और सुख की प्राप्ति' और इसी इच्छा का दुरुपयोग कर के प्रचलित धर्मों द्वारा जन–समाज को गुमराह करके लूटा जा रहा था ।

10.5– ऐसे में भगवान बुद्ध ने चार आर्य सत्यों की अत्यंत स्पष्ट व जोरदार प्ररूपणा की। इसके अलावा अष्टांग मार्ग तथा मध्यम मार्ग का प्रचार– प्रसार भी बड़े प्रभावपूर्ण और सशक्त रूप से किया।

10.6– बौद्ध की विचारधाराओं के फलस्वरुप ही लोगों के अंदर ज्ञान का तथा शांति का प्रादुर्भाव हुआ। उन्होंने निर्वाण और मोक्ष को समझा और अपने जीवन को श्रेयस्कर मार्ग की ओर अग्रसर किया।

10.7– जन–जन के मानस में यह चार आर्य सत्य, अष्टांग मार्ग तथा मध्यम मार्ग कुछ इस तरह से जगह बनाते गए कि लोगों में कल्पित कर्म–कांड के शोषण का भय कम होने लगा और वास्तविकता का परिचय प्रगाढ़ होने लगा ।

10.8– यहीं से एक नए विचार–शील मानव का जन्म हुआ, जो कार्य–कारण सिद्धांत के आधार पर विचार करता और उसी के अनुरूप आचरण की प्रमुखता रखता था।

11– **संदर्भ ग्रंथ सूची :**

1– विनय–पिटक / अनुवादक,राहुल सांकृत्यायन य संपादक, प्रियसेन सिंह, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष– 2008, संस्करण पृष्ठ संख्या –4/54

2– भारतीय संस्कृति व उसका इतिहास, लेखक– सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रकाशक– सरस्वती सदन मसूरी, प्रकाशन वर्ष– 1968, पृष्ठ संख्या – 6/51

3– विनय–पिटक / अनुवादक,राहुल सांकृत्यायन य संपादक, प्रियसेन सिंह, सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष– 2008, संस्करण पृष्ठ संख्या –4/217।

4– बौद्ध संस्कृति का इतिहास, लेखक– भाग चंद्र जैन, प्रकाशक– आलोक प्रकाशन नागपुर, प्रकाशन वर्ष–1972, पृष्ठ संख्या 121।

5– मज्झिम निकाय, सुत्त पिटक, अनुवादक राहुल सांकृत्यायन, प्रकाशक– सम्यक प्रकाशन नई दिल्ली, प्रकाशन वर्ष– 2022, पृष्ट संख्या –53।

6– भारत में बौद्ध धर्म का इतिहास, लेखक तारा नाथ लामा, प्रकाशक– काशी प्रसाद जायसवाल शोध संस्थान पटना, प्रकाशन वर्ष –1971, पृष्ठ संख्या –221।

7– बौद्ध संस्कृति, लेखक– राहुल सांकृत्यायन, प्रकाशक– महाबोधि सभा सारनाथ वाराणसी, प्रकाशन वर्ष– 1952, पृष्ठ संख्या– 7/35।

8– बुद्ध कालीन समाज एवं धर्म, लेखक– डॉक्टर मदन मोहन सिंह, प्रकाशक– बिहार हिंदी ग्रंथ अकादमी, पटना, प्रकाशन वर्ष– 1974, पृष्ठ संख्या –2/ 157।

9– बुद्धचर्या, लेखक– राहुल सांकृत्यायन, प्रकाशक–महाबोधि सभा, सारनाथ वाराणसी, प्रकाशन वर्ष –1952, पृष्ठ संख्या – 3 /68।

10– भारतीय संस्कृति व उसका इतिहास, लेखक– सत्यकेतु विद्यालंकार, प्रकाशक– सरस्वती सदन मसूरी, प्रकाशन वर्ष– 1968, पृष्ठ संख्या – 6/71.

लेखक:

डॉ जयशंकर शुक्ल
विषय विशेषज्ञ, कोर एकेडमिक यूनिट, परीक्षा शाखा, शिक्षा विभाग, शिक्षा निदेशालय, राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली– 110054

पत्राचार का पता–

भवन संख्या– 49, पथ संख्या– 06,
बैंक कॉलोनी, मंडोली, दिल्ली– 110093.
मोबाइल – 09968235647.
ई–मेल– jayashankarshukla@gmail-com

❑❑

जपजी कौर

उम्र 15 वर्ष 60–1,एन–2 रोड, नई सब्जी मंडी,
हरजिंदर नगर ,कानपुर (यू.पी.)

कहमुकरी

ललिता श्रीवास्तव
इंदौर

क्या सखि साजन

सावन भादौं इत उत दौड़े
सर के ऊपर ही मंडरावे
कृष्ण श्याम सों दीखै काजल
क्या सखि साजन न सखि बादल

हुआ हुआ का शोर मचाए
देख, शेरनी डर छिप जाए
कर ना पाये स्वयं शिकार
क्या सखि साजन न सखि सियार

पंक्ति बना ही बढ़ती जाए
सदा झुंड का साथ निभाए
सुई चुभै पर खाए मीठी
क्या सखि साजन न सखि चींटी

इत उत डोले चहुँ ओर मंडरै
सुमन गंध दूर तलक ले जावे
अब तक कोई ठोर न पावा
क्या सखि साजन न सखि हवा

फूल देख नित गाना गावे
पीतांबर पहन मंडराए
गोल गोल घूमे सों चकरा
क्या सखि साजन न सखि भँवरा

अंखियन से अंसुवन टपकाए
लेकिन मन को बहुतै भाए
चुराए देखो जियरा हमरा
क्या सखि साजन न सखि बदरा

नग से भागे धरा पे फैले
टेढ़ी–मेढ़ी चाल वो चाले
ऋणी सदा सारी है दुनिया
क्या सखि साजन न सखि नदिया

❑❑

नीरजा मेहता 'कमलिनी
गाजियाबाद

ऐ सखि साजन

रूप रंग मनभावन प्यारा
जग में दिखता सबसे न्यारा
जिया चुराए बन चितचोर
ऐ सखि साजन ?, ना सखि मोर।

जोर–जोर से मुझे पुकारे
ना जाऊं तो राह निहारे
मन मेरा है उससे लागा
ऐ सखि साजन ?, ना सखि कागा।

कानों में वो बीन बजावे
रात–रात भर मुझे नचावे
पढ़े प्रेम का ढाई अक्षर
ऐ सखि साजन ?, ना सखि मच्छर।

❑❑

शेफालिका श्रीवास्तव
भोपाल

ऐ सखि साजन

रात भर वो संग में जागे
सुबह होते ही बिछुड़ने लागे
दूर होऊँ तो घबराए जिया
ऐ सखि साजन – ना सखि दीया

रखती उसको दिल से लगाए
बिन उसके अब रहा ना जाए
पास में रखूँ मारूँ स्टाइल
ऐ सखि साजन – ना सखि मोबाइल

साँसें मेरी तुमसे है
जीवन मेरा तुमसे है
तुम बिन में रह ना पाती
ए सखि साजन–ना सखि नाती

❑❑

संतोष तोषनीवाल
इंदौर मध्यप्रदेश

क्या सखि साजन

खुशबू प्यारी बिखेरे वो,
मन को भावे हमारे वो,
महक उससे भी जाए आंगन
क्या सखि साजन , ना सकी चंदन।

प्रीत की डोरी से वो सजे,
प्यार का उससे संगीत बजे।
पूजा में हो जैसे चंदन,
क्या सखि साजन ना सकी बंधन ।

बुलाने से जो हैं आये,
हर बात में वह इतराये।
रखते हैं वह खूब अरमां
क्या सखि साजन ,ना सखि मेहमां

गर्मी में है जो बहुत सताए,
कभी आए और कभी न आए।
देखे बाट शायद आय कल,
क्या सखि साजन ना सखी नल।

सरसराहट हमेशा करता,
भरी रहती हमेशा ममता।
आंखों में रमे ज्यों काजल,
क्या सखी साजन न सखी आँचल

❑❑

समर्थ मिश्रा
आयु 9 वर्ष
मानव माँगत स्मार्ट वर्ल्ड स्कूल
जीरकपुर पंजाब

लालित्य ललित
नई दिल्ली

आलस्य श्री से पूछ लिया

वत्स
ये क्या हुआ
आज सूर्योदय कहां से हुआ
उसने घूरते हुए कहा
मेरी मर्जी
जहां से भी हुआ
हुआ
अब ये बताइए
कि हमारी नींद में खलल डालने का अपराध किस ने किया
और क्यों!
सुनकर मैंने कहा
ये अपराध मैंने किया
सूरज निकल कर दूध लेने चला गया
दूध ले आया
और चाय बना दी और पी भी गया
उसके पश्चात भी आपने उठने में कोई भी कसर नहीं छोड़ी
ये गलत बात है
उसने फिर कहा
जब इस संसार में दुनिया में इतना सब कुछ हो रहा है
उनको कुछ न कहते हुए
आप मुझे उठाने में लग गए

मन ने कहा
जहां प्रेम किया जाता है
वही अपराध भी किया जाता है
बहरहाल कहा गया है
कि नियम से उठने में दुनिया का चक्र सही तरीके से चलता है
देखो बाहर आ कर
और तुम ठहरे अफलातून
तुम कहां उठोंगे!
खुश रहिए
आबाद रहिए और यह कहता हुआ
मैं अंतर्धयान हुआ
यह सोच कर भैंस के आगे बीन बजाने से क्या फायदा!

पांडे जी की इस आदत से रामप्यारी अजीज आ चुकी है,लेकिन किस से क्या कहे!
उधर पांडे जी ने सोच लिया है कि अब वे किसी नए विषय पर काम करेंगे किस्थानीय बड़बोले लेखकों के प्रेम किस्से हैं तो किस तरह के रहे!
क्या वे कभी अपने सार्वजनिक जीवन में किसी लड़की के सेंडिल से पीटे हैं!
कभी उनकी और लोगों ने मिलकर पिटाई की है!

जब से विलायती राम पांडेय का प्रस्ताव लीक हुआ तब से ज्ञात और अज्ञात किसिमके लेखक दिल्ली से नो दो ग्यारह हो गए। पांडेय जी को भी समझ में आ गया किआजकल सभी जगह लोगों ने अपनी पार्टियां गठित कर ली है, महल्ले बांट लिए ळे और अपनी डपली अपने आप ही बजाने का शौक पालते है,कोई और उन्हें नजर नहीं आता।

शौक कई तरह के होते है।

पहले नंबर का है आत्ममुग्ध वाले लोग आइए उनके बारे में जान लेते हैं
(1)

वे अपनी संस्था गठित करते है और कुछ नामचीन लोगों को अपने साथ रखते है और किसी ठीक सी जगह कोई कार्यक्रम रखते है और उन्हें साहित्य,समाज की अनेक पदवियों से सम्मानित करते है। जो सम्मानित हो रहा होता है वह कितने लोगों को रोजगार देता है!
(2)

प्रेस वाले को जो आपकी कुर्ते की अकड़ बनाए रखता है और आपकी अकड़ जब निकलती है जब आप किसी अस्पताल की आप्रेशन टेबल पर होते है और आपकी कमर का हिस्सा सुन्न कर दिया जाता है, कहानी फिनिश। और ऐसे लोग बाज नहीं आते,वहां पर होश आने पर भी लाइक,कमेंट के बुखार से दूसरों को भी मानवीय स्तर पर दुखी करते है। कमेंट भी वैसे आएंगे..
जल्दी स्वस्थ हो जाएं,गेट वेल सून।मानो सारी पृथ्वी का काम काज उसी बंदे की वजह से रुका पड़ा है।
(3)

इस श्रेणी में वे लोग आते है जो किसी अखबार, पत्रिका से जुड़ा हुआ हों,ऐसे लोगों को लेखक नुमा जीव अपने जन्मदिन, अपनी वर्षगांठ के मौके पर आमंत्रित करता है और उनके पेय से संबंधित महंगे ब्रांड का विशेष ध्यान रखता है, आमंत्रित लोग बहुत महंगे उपहार तो नहीं लाते, मसलन पेन सेट, डायरी और कोई हुआ तो कुर्ते पायजामे का सेट ले आया, या प्रेमचंद की कहानियों का सेट,जो उसके लिए घर में अनुपयोगी था।
(4)

स्वार्थ और आत्म प्रसंशा से दुखी लोगों की संख्या में कमी नहीं, इसका अर्थ यह भी कि पैसे का अभाव नहीं,इस श्रेणी में वे लोग आते है जो चर्चा में बने रहने के लिए बहुत किसिम के पापड़ बेलते है, वे किसी भी संगठन को नाराज नहीं करते, मतलब तेरी भी गुड और उसकी भी, समझ रहे है न!
(5)

पांडेय जी को वह दिन याद आ गया,जब किसी बड़े घराने की पत्रिका का एक संपादक अपने घर में ही अज्ञात कारणों से मरा पाया गया, उसकी अंतिम यात्रा में कायदे से दस लोग भी शामिल नहीं हुए, जबकि श्मशान घाट के पांच किलोमीटर के दायरे में पचास लेखक रहते थे,जो अपने स्वार्थ के कारण शामिल नहीं हुए, और जब वह संपादक जीवित था तो उसकी हां में हां मिलाने को दौड़ते थे। वक्त बदला,लोग भी और एक बात यह कि स्वार्थ नहीं बदला,अब वह पैकेजिंग के जमाने में निखर कर आया है। जिसे उद्पादक भी समझ रहा है

और उपभोक्ता भी।

स्वार्थ की माया है और मायावी दुनिया है जिसे समझते हुए हर स्वार्थी एक दूसरे की प्रसंशा में लगा हुआ है,अद्भुत है समय और अद्भुत है वे लोग जो किसी का भला करने के बजाय नुकसान कर रहे है,समय से जुड़ी गतिविधियों का,वे बेचारे अबोध लोग।

(6)

कुछ ऐसे लोग है जिन्हें सबको साथ लेकर चलने का फितूर है,वे पैसा खर्च करते है और समय के साथ सा क्षात्कार करने में भी अव्वल रहते है, यह जो लाइम लाइट में बने रहने का चस्का है वह बड़े ग्रेट किसिम का है,यह वह अवस्था होती है जब आप हैं हैं ही ही करने के सिवाय कुछ नहीं कर सकते, इसी बहाने कुछ लोग आ जाते है और खा पी कर निकल जाते है और फिर शुरू होता है उसके साथ की तस्वीरों का खेल,यह खेल स्थानीय,राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय होता हुआ विज्ञापित होता है, संसार है और यहां भांति भांति के लोग रहते है। जहां किसी को कुछ कह दो तो उसकी अज्ञात किसिम की बीमारियां बाहर निकल आती है,बहरहाल जीवन है जो चुप रहने का संकेत करती है।

तभी पांडेय जी अचानक से रामप्यारी से पूछ बैठे कि अब तबियत कैसी है!

रामप्यारी ने कहा कि ऐसा महसूस हुआ कि कल रात बीपी लो हो गया! अच्छा! ऐसा किया करो खाना , लंच और ब्रेकफास्ट स्किप मत किया करो, जब रूटीन बिगड़ जाता है तो ऐसा होता है, और ध्यान दिया करो, मेरी तो रामप्यारी एक ही है कोई दोचार नहीं, समझी!

इतना कहते ही रामप्यारी मुस्करा दी, कहने लगीं क्या आपके मित्रों की दो चार है!

अरे! एक ही झेल ले सब!

अच्छा!

पांडेय जी ने कहा ध्यान रखो, मैंने संतरे छील दिए है,खा लो,जब तक मैं शाम में एक चक्कर लगा आता हूं।

अच्छा चीकू ने बाल कटवाए।

अभी तो नहीं,पैसे जरूर लिए थे,दोपहर में,गुब्बारे में लगा रहता है, होली का भूत सवार है उस पर।

भूत कैसा भी क्यों न हो, उतर जाता है। देर लगती है,पर उतरना उसकी नियति है, इसको ऐसे समझिए जैसे एक गुब्बारा हवा में उड़ा, उसमें गैस थीं,वह सैर करता रहा, और ऊपर और ऊपर,उसके बाद उसका दबाव घटता चला गया,वह नीचे आया और किसी पेड़ की टहनियों में उलझ गया।

समझें कुछ!

ज्यादा नहीं उड़ने का,अगर आपका उत्साह अति में चला गया तो आपका भटकना तय है और उलझना भी,एक बार कहीं अटक गए तो नीचे तो आओगे ही और कहीं न कहीं उलझोगे भी, इसलिए कहीं भी जाने से पहले,सोचना और सोचते हुए निर्णय लेना कि जो सोचा गया क्या उसका निर्णय ठीक था अथवा नहीं!

तभी रामप्यारी आई और कहने लगीं कि जरा इधर आना, देखन केमरे पर, यह कौन बुजुर्ग है! जो आपके पिताजी का नाम के रहा है!

पांडेय जी नीचे गए और उनकी आधी अधूरी बातों को सुनते हुए कहा कि बाऊजी, हमारी किसी संस्था में कोई रुचि नहीं, हम कोई चंदा वंदा नहीं देते। जो कुछ भी देने की कभी वार्षिक इच्छा हुई भी हो तो स्थानीय नेत्रहीन विद्यालय में दे आते है,इसलिए आपकी किसी भी कहानी में कोई रुचि नहीं, सामने वाले ने सोचा कि मैं इन्हें टोपी पहनाने आया था भाई ने मुझे ही टोपी पहना दी,अब पांडे जी ने रामप्यारी से कहा आया था बाबा टोपी पहनाने , मैंने ही ओवरकोट पहना दिया, अब भूल से भी नहीं आएगा,दुबारा।

वाह! पापा जी, आप तो टरकाने में बादशाह है, वह तो हूं

क्यों रामप्यारी जी!

रामप्यारी मुस्कराई और चाय बनाने भीतर चली गई।

अचानक से कहीं ढोल बजने की आवाज आने लगीं। पांडेय जी ने अनुमान लगाया कि फिर किसी के जीवन में अनेक प्रकार की विसंगतियों का प्रवेश होने वाला है, पांडेय जी ने लेटे लेटे ही अनेक तरह की शुभकामनाएं देते हुए कहा " चढ़ जा बेटे, सूली पर भगवान जी तुम्हारी रक्षा करें, हरि ॐ।

चीकू लाइट बंद कर देना,बेटा जी।जी, पापा जी,चीकू ने लाइट बंद की और पांडेय जी नींद के आगोश में खो गए,यानी सो गए।

❑❑

प्रिंस
कक्षा 6 /उम्र 11 वर्ष
महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय
दादर(अलवर) ,राजस्थान, भारत

सरकारी स्कूल

जूते नहीं है,
चप्पल में ही खुश है
महंगे कपड़े नहीं है,
पुराने चेपी लगे
कपड़ो में ही खुश है।।
सवेरे उठते ही नहा धोकर
पीकर चाय
सरकारी स्कूल जाते हैं।
वहाँ भरपेट रोज
अलग अलग खाना खाते है।।

स्कूल में जिस दिन
मिलता राजमा–चावल,
उस दिन खूब मजे से
भरपेट खाते है।
हाँ जी हाँ हम
हँसते खेलते हुए रोज
सरकारी स्कूल जाते है।।

❑❑

गौरव

राम राज्यः एक आदर्श राज्य

डा. गायत्री पाण्डेय

"राम राज्य" एक ऐसा शब्द है जिसका उपयोग भगवान राम द्वारा परिकल्पित समाज की आदर्श स्थिति का वर्णन करने के लिए किया जाता है, जिसमें पूर्ण सद्भाव, न्याय, धर्म और समृद्धि शामिल है, जहाँ लोग शांति और खुशी से रहते हैं। हालाँकि, "राम राज्य" की अवधारणा की अलग–अलग लोगों द्वारा अलग–अलग तरीकों से व्याख्या की गई है।

स्वाधीनता आंदोलन में जिस आदर्श का सबसे अधिक शब्द–प्रयोग हुआ वह है रामराज्य। वस्तुत रामराज्य की अवधारणा केवल स्वतंत्रता का राजनीतिक अर्थ प्रस्तुत नहीं करती अपितु यह मानव सभ्यता में एक ऐसे विशिष्ट राष्ट्र की कल्पना है जिसमें सभी नागरिक विधि सम्मत मर्यादा में रहकर धर्म का पालन करते हैं।

रामचरितमानस में एक आदर्श राज्य का दिग्दर्शन होता है जिसमें किसी प्रकार का शोषण और अत्याचार नहीं है सभी लोग एक दूसरे से स्नेह रखते हैं। राम राज्य में कोई किसी का शत्रु नहीं है।

रामराज बैठे त्रैलोका।
हरषित भये गए सब सोका।।
बयरु न कर काहू सन कोई।
राम प्रताप विषमता खोई।।

श्री रामचंद्र जी निष्काम और अनासक्त भाव से राज्य करते थे। उनमें कर्तव्य परायणता थी और वे मर्यादा के अनुरूप आचरण करते थे। अयोध्या में सर्वत्र प्रसन्नता थी। वहां दुख और दरिद्रता का कोई नाम तक नहीं था। ना कोई अकाल मृत्यु को प्राप्त होता था कारण कि सभी लोग अपने वर्ण और आश्रम के अनुरूप धर्म में तत्पर होकर वेद मार्ग पर चलते थे और राम राज्य में दैहिक दैविक और भौतिक ताप किसी को नहीं सताते थे। राम के राज्य में राजनीति स्वार्थ से प्रेरित ना होकर प्रजा की भलाई के लिए थी। मारीच रावण को समझाते हुए राघव के गुणों का वर्णन और रावण को सन्मार्ग दिखाने के संदर्भ में कहते हैं:

रामो विग्रहवान धर्मः साधुः सत्यपराक्रमः।
राजा सर्वस्य लोकस्य देवनामिव वासवः।

महामना श्री मदन मोहन मालवीय के शब्दों में रामचरितमानस में हिंदू सभ्यता के जिस ऊंचे आदर्श का इतिहास है वह सदा पढ़ने और मनन करने योग्य है। रामायण में हिंदू गृहस्थ जीवन का आदर्श बतलाया गया है। मैं चाहता हूं सब लोग प्रतिदिन नियम पूर्वक रामायण का पाठ करें और उसमें बतलाए हुए मार्ग पर चलकर हिंदू जाति को पुनः राम राज्य बना दें।

रामराज्य की विधि या धर्म सम्मत मर्यादा की अवधारणा केवल राजा या शासक के कर्तव्यों का विचार नहीं है अपितु एक ऐसी समग्र राज्य व्यवस्था की निर्मिति है जिसमें सामाजिक जीवन का प्रत्येक कोना धर्म के चार चरणों– सत्य, सोच, दया और दान पर अवलंबित होता है। यह एक ऐसी चतुष्पाद व्यवस्था है जो राज्य और समाज के सभी आधारभूत घटकों को सच्ची श्रद्धा से ओत–प्रोत करते हुए सबकी स्वतंत्रता सुनिश्चित करती है। सभी सर्वत्र भद्र कल्याण देखेंगे। कोई दीन, दुखी, दरिद्र नहीं होगा। सभी शिक्षित, बोध संपन्न होंगे और सभी प्रकार की शुभता से युक्त होंगे।

श्रीराम के राज्य में कोई अप्रसन्न न था। प्रत्येक व्यक्ति को उसके श्रम और कर्म का उचित फल प्राप्त होता था। सबके साथ न्याय होता था। न्याय और धर्म की तुला पर राजा और रंक, शीर्ष और निम्नतल के आधार पर विशेषाधिकारों का भेद न था। गोस्वामी तुलसीदास ने रामराज्य में ऐसे जीवन की कल्पना की है, ऐसे सामूहिक जीवन की कल्पना की है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति, नर–नारी अहंकार और दंभ से मुक्त हैं। सभी परिजनों को आदर देने वाले हैं। सभी में कृतज्ञता का भाव है। छल और कपट से मुक्त जीवन जीने वालों का समाज है।

वस्तुतः रामराज्य की अवधारणा ऐसे सुशासन की कल्पना है, जिसमें सबको योग्य बनने और योग्यता के अनुसार सब प्राप्त करने का अधिकार है। इसमें सर्वत्र पारदर्शिता है। किंतु समाज के अंतिम व्यक्ति के अभ्युत्थान की चिंता प्रमुख है।

गोस्वामी तुलसीदास ने राम. राज्य की कल्पना करते हुए राजा के लिए कुछ गुणों का उल्लेख किया है। यथा– लोक वेद द्वारा विहित नीति पर चलना, धर्मशील होना, प्रजापालक होना, सज्जन एवं उदार होना, स्वभाव का दृढ़ होना, दानशील होना आदि। श्रीराम में आदर्श राजा के सभी गुण विद्यमान हैं। उनको अपनी प्रजा प्राणों से भी अधिक प्रिय है। प्रियजन, पुरजन, गुरुजन सबके प्रति राम का व्यवहार आदर्श एवं धर्म के अनुकूल है। ऐसे रामराज्य में विषमता टिक नहीं सकती और सभी प्रकार के दुखों से प्रजा को त्राण मिल जाता है। महात्मा गांधी ने जिस रामराज्य की कल्पना की है, उसका मूल आधार भी तुलसीदास जी की रामराज्य परिकल्पना ही है। निश्चय ही यह एक आदर्श शासन व्यवस्था है जिसका मूल आधार लोकहित एवं मानवतावाद है। आज दुनिया के सामने विविध प्रकार के संकट हैं। कोई कह सकता है कि उसमें श्रीराम क्या करें? श्रीराम ने तो आदर्श स्थापित किए। श्रीराम तो वह हैं जो उत्तर से दक्षिण तक इस देश को जोड़ते हैं। जो अयोध्या से लेकर धनुषकोडी तक जन–जन को जोड़ते हैं। वे व्यक्ति के श्रेष्ठ –

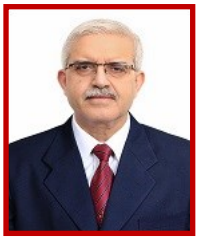

अरुण भगत
नई दिल्ली

शून्य और शून्य के बीच

आचरण को सामने रखकर जोड़ते हैं। वे स्वयं अनेकानेक कठिनाइयां धारण करते हैं, लेकिन देवी अहिल्या को मुक्त करते हैं। वे खुद सीता वियोग में दुखी हैं, करुण क्रंदन करते हैं, लेकिन माता शबरी के दुख को दूर कर उन्हें शांति देते हैं, आह्लाद देते हैं, सम्मान देते हैं। उन्हें वैसा ही सम्मान देते हैं, जैसा वे कौशल्या, सुमित्रा या कैकयी को देते हैं। ये श्रीराम वह हैं, जिन्हें अयोध्या की प्रजा और सेना नदी के किनारे तक छोड़ने आई है। उनसे भी श्रीराम अनुनय करते हैं। ये श्रीराम तो वह हैं जो अपने ही राज्य के केवट से अनुनय करते हैं कि नाव पर बैठाओ और उस पार ले जाओ। वे समाज के अंतिम सिरे पर खड़े व्यक्ति को अपने हृदय से लगा लेते हैं।

रामराज्य में मनुष्य और प्रकृति सभी निजधर्म का पालन करते हैं। वे सभी कल्याण के लिए उदारचेता होकर त्याग करते हैं। उनमें संग्रह की प्रवृत्ति नहीं है। इसी प्रकार के रामराज्य की कल्पना हमारे यहां है, जिसमें एक राजा से अपेक्षित है कि वह प्रेम, सद्भावना, शांति और स्वशासन की स्थापना करे। एक राजा के रूप में जिस धर्म और मर्यादा की स्थ. ापना भगवान श्रीराम करते आज भारत नई करवट ले रहा है। सबको साथ लेकर चलता हुआ भारत, सर्वत्र बढ़ता हुआ भारत रामराज्य की नई कथा लिखने की दिशा में बढ़ चला है। रामराज्य एक परिभाषिक पद है। लोक कल्याण और लोकाराधन के लिए समर्पित शासक से रामराज्य प्रारंभ होता है और सगुण सकारात्मक तथा नैतिक भावना से पूर्णता को प्राप्त करता है। यह ऐसी आदर्श स्थिति है जिसमें कोई उपेक्षित, वंचित और तिरस्कृत नहीं होता, जिसमें अंतिम व्यक्ति की आवाज शीर्ष तक बिना किसी व्यवधान के पहुंचती और सुनी जाती है।

❑❑

जीवन एक छोटा सा
अंतराल ही तो है
शून्य और शून्य के बीच,
शाश्वत मौन और मौन के बीच,
फिर इसको लेकर
इतना कोहराम क्यों,
कोलाहल क्यों ?
कहाँ ले जाएगी यह सरपट दौड़, क्या
पा लेंगे,
क्या पास रह जाएगा,
क्यों चिंता हैं खोने की
जब अपना कुछ है ही नहीं ?
जब कुछ साथ लाए ही नहीं
और न ही ले जाएँगे
तो फिर क्या पाना और क्या खोना,
किस बात का विषाद और विवाद?
किसी से क्या जीतना है
और क्या है हारना?
जब हार–जीत का
कुछ प्रयोजन ही नहीं,
तो हारने पर अपमान कैसा
और जीतने पर उन्माद क्यों?
जो कुछ भी दिखता है
जब नश्वर है
तो उससे लगाव क्यों,
उसके प्रति आसक्ति कैसी?
जीवन एक स्वप्न मात्र ही तो है,
अस्थाई और क्षण भंगुर,
तो उसे ले इतने विह्वल क्यों,
उत्तेजित क्यों?
यही प्रश्न हमें ले जाएँगे
विरक्ति के मार्ग पर,
अंतर्मन के मौन के गर्भ में,
और वहीं से आरंभ होगी
हमारी शाश्वत मौन की दिशा में
वापसी यात्रा!

❑❑

सार्जेंट अभिमन्यु पांडेय

यही वो पल है

यही वो पल है
आगे इसके सुनहरा कल है
यही वो पल है

पल–पल को समृद्ध बनाएं
एक पल भी बेकार न जाए
जीवन तभी सफल है
यही वो पल है

पल है ये कल की तैयारी
इसपे आधारित उम्र ये सारी
निर्भर कल की फसल है
यही वो पल है

जीवन को हम जीना सीखें
हर दिन साल महीना सीखें
निश्चित सुखमय कल है
यही वो पल है

रहें स्वस्थ हरदम मुस्काएं
शान्ति और समृद्धि लाएं
जीवन के सुख का ये हल है
यही वो पल है

'मन्नू' मन संकल्पित कर लें
जग सारा मुट्ठी में कर लें
निश्चय अचल अटल है

यही वो पल है
आगे इसके सुनहरा कल है

❑❑

प्रिय डॉ रमा शर्मा जी,

अभी अभी "हिंदी की गूँज" पत्रिका के अक्तूबर–दिसम्बर 23 और जनवरी –मार्च 24 के संस्करण डाक द्वारा मिले। दोनों संस्करण पकड़ अति प्रसन्नता हुई। सुदूर टोक्यो, जापान में रहकर हमारी मातृभाषा हिन्दी का न केवल प्रचार – प्रसार समग्र विश्व में इस पत्रिका और यू–ट्यूब चौनल के माध्यम से आप कर रही हैं बल्कि समस्त हिन्दी भाषा के साहित्यकारों, कहानीकारों, कवियों और लेखकों को एक सहज मंच आप उपलब्ध करवा रही हैं । इसके लिए आपकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम है। मेरी कविता "खरी बात कहने वाले सीधे होते हैं" व संस्मरण "युवावस्था में सैनिक बनने का जोश" को इन दोनों संस्करण में स्थान देने के लिये आपका हृदय से आभार व धन्यवाद।

पुनश्च : पत्रिका के संस्करण के उच्च कोटि के संपादन और साज सज्जा के क्रियान्वयन के लिये आपको हार्दिक बधाई व शुभ कामनायें।

आशा है आप हिन्दी की गूँज पत्रिका और यू–ट्यूब चौनल के माध्यम से मातृभाषा हिन्दी को इसी प्रकार प्रचार– प्रसार के माध्यम से एक दिन समग्र विश्व में स्थापित कर सकेंगी।

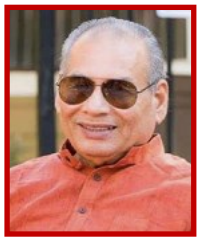

कर्नल आदि शंकर मिश्र 'आदित्य'
लखनऊ उत्तर प्रदेश

❑❑

श्रद्धेय रमा जी ,नमस्कार

हिंदी की गूँज प्राप्त हुई। मेरी रचना शामिल करने के लिए आभार । इस पत्रिका का जापान से प्रकाशन एक अनूठी पहल है । हिंदी सेवा के लिए आप का योगदान सराहनीय है । संरचना, पेपर चयन, आलेख , कहानी , काव्य उत्तम है । विशेषकर तलाश अस्तित्व की – अजय शर्मा, जीना सीख रहे हैं –डॉ बी . निर्मला , जुर्म –प्रगति गुप्ता , आद्यात्मिक अनुसन्धान डॉ अजय शुक्ल, कर हर मैदान फतह काव्य– अर्चना मुकेश , ये बेटियां – कृति अवस्थी . इन रचनाओं ने मर्म को छु लिया ।

मेरे कुछ निजी सुझाव : टाइप सेटिंग और लेआउट में सुधार की आवश्यकता है. खड़ी पाई, और स्पेस लेआउट : एक रचना पूरी होने पर दूसरी रचना नए पेज से शुरू करें।खाली पेज पर पेंटिंग या फोटो लें. जापान की दिनचर्या की फोटो आकर्षण का विषय होगी ।

मेरे उपरोक्त सुझाव को निष्पक्ष विचार समझिये आलोचना नहीं । आप का साहित्य सफर और सेवा निरंतर प्रगति की और अग्रसर हो . ऐसी कामना

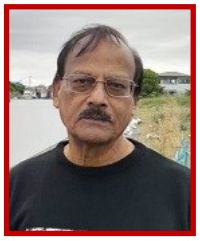

शकील सिद्दीकी – मुंबई

❑❑

जापान से शुरू की गई अंतरराष्ट्रीय हिंदी पत्रिका 'हिंदी की गूंज' के माध्यम से आप वास्तव में हिंदी भाषा की सेवा का महत्वपूर्ण कार्य कर रही हैं। पत्रिका अपने स्वरूप में बहुत आकर्षक एवं नयनाभिराम कलेवर समेटे हुए है। प्रकाशित की गई सभी रचनाओं की विषय वस्तु एवं स्तर बहुत अच्छा है। वर्तमान तकनीकी युग में जहां इंटरनेट एवं मोबाइल ने विश्व स्तर पर पठन एवं प्रकाशन संस्कृति को प्रभावित किया है तथा बड़ी संख्या में लोगों का रुझान प्रकाशित पुस्तकों को छोड़कर डिजिटल सामग्री की ओर मोड़ा है, ऐसे वैश्विक परिदृश्य में 'हिंदी की गूंज' जैसी पत्रिकाएं पूरी मजबूती से खड़े रहकर भाषा एवं संस्कृति के संरक्षण एवं संवर्धन में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही हैं। इसके पीछे श्रीमती रमा पूर्णिमा शर्मा जी का सुयोग्य नेतृत्व एवं स्वयं की साहित्यिक योग्यताएं भी हैं, जिनकी वजह से पत्रिका दिन दुगनी रात चौगुनी उन्नति करते हुए उज्ज्वल एवं उद्देश्यपूर्ण पथ पर आगे बढ़ती जा रही है। पत्रिका प्रकाशन की गुणवत्ता के सभी मानदंडों को पूर्ण करती है। अच्छी क्वालिटी का कागज, बेहतरीन छपाई, उत्कृष्ट रचनाओं का चयन एवं प्रस्तुतिकरण , अत्याधुनिक तकनीक काप्रयोग एवं वैश्विक स्तर पर हिंदी भाषा एवं संस्कृति के उन्नयन के लक्ष्य को लेकर चलने का दृढ़ संकल्प, यह सभी कारक पत्रिका के उत्कृष्ट एवं हृदय स्पर्शी स्वरूप को जन्म देते हैं। एक पाठक, लेखक एवं हिंदी भाषा के प्रति स्नेह युक्त अंतर्मन रखते हुए मैं इस पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं और हर दृष्टि से,सच्चे मन से, पत्रिका को सहयोग एवं समर्थन देने के अपने संकल्प को दोहराता हूं।

सादर प्रणाम और हार्दिक शुभकामनाएं।

जय हिंद, जय हिंदी।

गीतेश्वर बाबू , भोपाल

❑❑

लोकार्पण

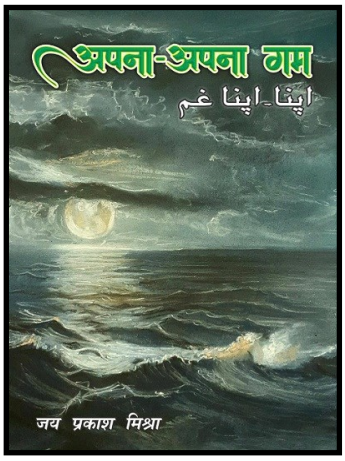

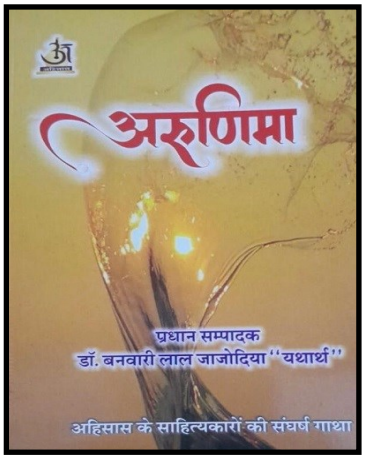

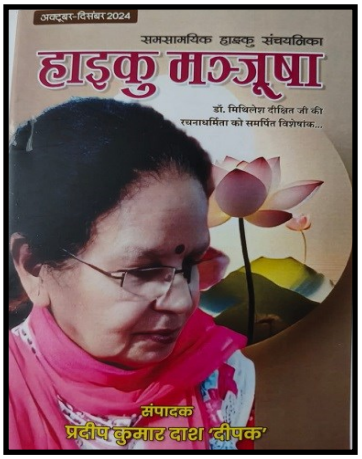

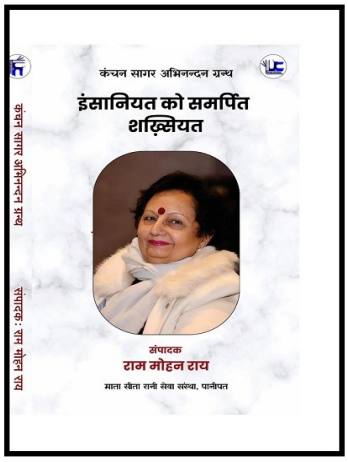

कंचन जी के अभिनंदन ग्रंथ का लोकार्पण

ज्योति कौर
कक्षा 8 / उम्र 13 वर्ष
महात्मा गांधी राजकीय स्कूल दादर

गौरी/ उम्र 11वर्ष /कक्षा 6
महात्मा गांधी राजकीय विद्यालय दादर
(मालाखेड़ा)राजस्थान,भारत

जसविंदर कौर
कक्षा 8 / उम्र 14
महात्मा गांधी राजकीय स्कूल दादर

नाम लक्षिता
उम्र 10 /कक्षा 6

प्रिंस
उम्र 12/कक्षा 6

रेणुका
उम्र 10/कक्षा 6

अर्चिता श्रीवास्तव
आयु
8 वर्ष

कवर पृष्ठ

तनषी जैन 7 C
माउंट कार्मल स्कूल, द्वारका, नई दिल्ली

Dishita Mehta / Class-7/Section-C
Bal Vikas Progressive School.
Panipat,Haryana,Bharat

अश्विक कुमार, 6 वर्ष,
त्रिभुवन स्कूल,
स्थायी सहायक: सोनामुखी झोली, पोस्ट हिजली, खड़गपुर, पश्चिम बंगाल

खुशी कौशल
15 वर्ष
अम्बाला कैंट
हरियाणा

टिया मिश्रा
पायनियर एलीमेंट्री स्कूल,
यूनियन सिटी, कैलिफोर्निया, USA